96-19

সূচীপত্র।

গ্ৰেশ বন্দন	5 .
ब िविकू वस्पना	Ð
ভ্ৰন্ম বন্দনা	ŧ
बक्तरमाक वर्गमः	8
পুরবাচের উপর ব্রহ্মার অভিশাপ:-	હ
পুরবাচের স্তব ও দেহ পতন	b
होज! क्रव्थ टटम्द्र सम	ži
বাজা ক্লফচন্দ্রের বাল্যলীলা	>>
্যজার বিবাহ	70
ুৰীগণের বিরহ ও রাজার ৰূপ বর্ণন:	Š
রাজার আপন বাটাতে আগমন	२०
রাণীর পুত্ত বধুর বরণ 💮 👙 🔻	52
রাজা ক্লকচন্দ্রের রাজ্যভার 🕝	२ , र
গোপাল ভাঁতের রাজসভায় আগমন	₹8
ধ্যেপালের পণ্ডিতের বাসায় গমন	२०
ুরোপালের প্রশ্ন কথন	२७
রাজার সহিত ভহরির মিলন	25
রাজাকর্ভৃক জহরির শাসন	₹⊅.
श्रिट्यादयत्र कथ।	, ه د
দেবল ব্রাহ্মণের সহিত রাজার কর্থোপকথন	৩২
দেবলকে ভূপতির ভং সনা	هد.
পুলারির রাজার প্রতি প্রত্যুত্তর	98
तिकात विकागरक मर्वाटवत्र मिक्छ (श्रेत्रम 📽	
মনেতে বিষাদ	À

গোপালকে প্রারিচয় দেওন	ಿಥ
ুরাজা প্রতাশীরুত্তের কথা	9 8
্রিপ্রতাপরুদ্রের মহারাষ্ট্রে, রাজ্য	್ಕು
প্রতাপরুদ্রের যুদ্ধ	8•
প্রতাপঞ্চত্রের সহিত চারিজন মন্ত্রীর মিলন	83
প্রতাপক্লত্তের মন্ত্রীর সহিত মনোভঙ্গ	80
মন্ত্রীর মহারাষ্ট্রে, গমন	88
মন্ত্রীর ছন্মবেশ ধারণ	86
প্রতাপক্লডের উদ্ধার ও বর্গিরান্ধার বন্ধন	¢5
ব্যোপ্তের মন্ত্রণা	C.
গোপালের নবাবসাহেবের নিক্ট ঘাত্রা ও	•
ভি ত্তের উদ্ধার	၉၅
গোপালের রাজার নিকট গমন	DD
রাজাব বেহায়ের সহিত কৌতুক	(C)
রাজার বেংগদির কৌভূক	æq
রাজার নাতিনীর সাইং কৌপুর	53
রাজার রাণীর সহিত্ কৌজুক	À
সদা জল চু ঁচড়া মিটি	89 %
রাজার কর্ত্তৃক ভাজাণের পরিচয়	\$7
লারীর ৰূপ বর্ণন	9 7
ব্রাক্ষণ ও ব্রাক্ষণীর পলায়ন	& 3
দশ্চকে ভগৰান ভূত	છ વ
मन्द्र (अश्वप्र) कटन	વંર
যারধন ভার ধন নয় নেভোমায়ে দই	99
नमूट्फ विटब्बर नमूनम धन नुकारम त्रार्थन ও	
নেতোর প্রাপ্তি	6.
নেতার দ্বিভোক্তন	بدع
न्य दक्ष कड़ाहादरात जेशाचान	وسو

मध्रुद्रहर्गत श्रद्भा श्रमन ও म्डज मुर्जिप महिल मिलन	50
मश्रदात्मत मञ्जनिष्कि ও नवषीश यांजा	طهوا
রাজীর কালিকা পূজন ও প্রতিমা প্রত্যক্ষ	6.9
রাজার খেদ্ ও সন্ন্যাসীকে স্তব করেন	22
প্তাবলির উপক্রম	20
পত্রাবলির ও রাজার আত্মতন্ত্র ক্রান	86
কীর্ত্তিবাস বিদ্যাসাগরের নাইকা সাধন ও	^
মথু জেমের পরিচয়	8
রাজার কল্পতক্স হওন ও পুত্রকে রাজ্যদান	7
রাজার স্বর্গবাস	7

ইতি স্চীপত্র সমাপ্তঃ।

জীজী**ঈশর;** জরতিঃ

श्रीट्राम रामामा है

ত্রিপদী। বন্ধ বিশ্বমন্ত্রীয়ত, বিমল চরণারত, বিরাজিত রতন মুপুর। সরোক্ষহোপর স্থিতি, ব্রহ্মাণ্ডের গাত্মতি, গণপতি বিশ্বের ঠাকুর॥ স্থুলখর্ল কলেবরে, শোভা করে চারি করে, শঙাচক্র গদা শেতামুজে। দিয়ে রত্ন্ময় বালা, সাজায়েছে গিরিবালা, সলজ্জিত শশীকলা, হেরে চতু-সুজে॥ মহাঘোগে যোগবলে, যড়াননে যিনি ছলে, গলে দোলে পারিজাতহার। শিব আশু বিনির্গত, আগম পুরাণ যত, তবান্ধিত বিশ্বেতে প্রচার॥ মকর কুগুল বর, শ্রুভি যুগে শোভা কর, করীকরে শ্রীয়ুখ সুঠাম। কটি তটে বাহামর, দেবং লমোলর, তব পদে অসংখ্য প্রণাম।।

बिबिरिकू वन्मना।

ত্রিপদী। মাধবার নমোনম, পুরাণ পুরুষোত্তম, ভুমি
দেব বেদাদির কারণ। কালীয় বরণ ঘটা, নবীন নীরদ
ছটা, হেরে মুনি মনঃ বিমোহন।। সুচারু চরণ তল, ভিতে
কোকনদ দল, ভ্রমর জুপুর কল তার। মোহন মুরালি
করে, ধারণ বিমিকাধরে, সে মাধুরী উপমা কোথার।।
পরিধান পীতাম্বর, গলে বনমাল। বর, শিরে শিথিপুছ্
সুশোভন। মেনুর সৌলামিনী প্রায়, স্কল রম্বিকা
ভার, শক্তমন্ত তন্তর গণনা। অধ্বরে মধর হাসি, চালিকে

त्मं स्थातानि, मृठ श्र अपृठ छोजन। हेन्सन हिं छ तास्त्र, ता त्मां कि कि कि स्मान हिं कि स्मान ।। किथन प्रमान नीत्त्र, कथन भूतीन छीत्त्र, कथन विश्वीन इन्मावत्न। कथन कम्स्र भूता, कथन का निकृष्ठ वर्षण, कथन वा निविद्या । कथन निकृष्ठ वर्षण, कर्यन वा निविद्या । कथन निकृष्ठ वर्षण, कर्यन वा निविद्या । विभिन्न ता निविद्या । विभिन्न ता निविद्या । विभिन्न ता निविद्या । विभिन्न ता निविद्या । विभिन्न वा ना ।। छन अप्र जीनिवान, धिन्न मार्ट्य आस्त्र विभिन्न । कर्यन अप्रतान विभन्न वा ।। विभिन्न वा अप्रतान अप्रतान विभन्न वा ।। विभन्न वा अप्रतान विभन्न वा ।। विभन्न वा अप्रतान विभन्न वा ।। विभन्न वा अप्रतान वा अप्या वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्या वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्या वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्य वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रतान वा अप्रत

্ব্ৰহ্ম বন্দৰা।

নৌপানী। এক একা নিরাকার, ছিতীয় নাহিক আরু, বিশ্বন্ধ ব্যাবাদ, তুর আন্দ্রা পুতের িনীন। যার তান জেন হয়। কান্তান কান্তান, ছুবন হল আ্ঞার, গুনমর বদা গুণহান। বিব্যক্তিত রুদ্ধিহান, নক্ত্র সম প্রকাশ, ক্ষুলান করেন নান, কর্ম কাঁস আশ বিশোচন। চৈত্রা নিরাধানত, কেবল জগত হিত, নিত্যানন্দ সর্বগত্ত ব্যোবাতীত বেদের কথন।। ন্যাবাদ জান শক্তি, মুজিনম কহে যুক্তি, তব পদে যার ভক্তি, জীবন যুক্ত হয় সেইজন বিদ্যুনান কলাতীত, ক্ষেত্রক্ত ক্ষেত্রপালিত, তাহে বেদ বিদ্যাতীত, হিতাহিত জীবন মর্ন।। নয়প্ত প্রমাণ শক্তি, নাহি সমা বুদ্ধি যুক্তি, অভিক্রান্ত ভুত পংক্তি, সমাধান অবসান হয়। সর্বা বপু রিপু প্রেক, ক্ষুলা প্রকৃতি সঙ্গে, পঞ্চনশেন্তির হাজে, বিভক্তে ক্ষুয়া ব্রহ্মনম ।। আপ্রি বিশ্ব হাজা, বিভক্তে উর্যাস । অধিনত প্রকৃতি ক্ষুয়া বাজিতে জন্মনি ।

বিপরীত, কেবুৰে তৰ চরিত, তোমাতেই সকল প্রকাশ 🖞 अकान भूत रहन, वर्डमान मर्सकन, टेंडजना कह अनानी माक्तिका मकत अग्रदत। जुमि धर्म छन कर्ना, जुमि गर् नम्बना, माश्कि मत्। जन्म, তব मन्द्रिक जानित्व नदत । ट्यांगा विना अना अन, निका नट्ड कर्नाहन, भव मह जि.इ. বন, তুমিহে জীবন স্বাকার। হরি হর প্রস্তাপতি, তো মারে ত্রিগুণোৎপত্তি, সূজ্ন সংহারস্থিত, নানা জ্যোরি অংশ সে তোমার ॥ যতেক দেব ম্বাকার, যোগী ঋষিসিদ্ধ আরু কিবা নর ছুরাচার, কীট পতক্ষেতে সমভাব। এজ-পত ছয় জন্য, ছোমা বিনা নাহি অন্য, জীবন ভুবন খুন্য; मानामाज তব अविर्धाव ॥ ज्ञांखि आमा अजिनारम, वर्ष इस अनासारन, अहसात मक कार्य, कर्मकारम ये कीर-গণ। কারকর্ম কেবা করে, কেবা ছঃখ ভোগ তরে, নাহি জানে চরাচরে, সমৰূপ ব্যপ্ত নিরাঞ্জন ॥ অসার এই সংসার, দেহে পাত সমাকার, এক বস্তু মূলাধার, পরিপুণ এতিন पूर्वता। यूर्वाटक अवस्मि यिमि, भेभिटक भीजन তিনি, বেদের এইতে। বাণী, সেই আন্সা ব্যাপ্ত ভূতগণে।।। অন্তরে বাহির গতি, সুল নহে হুদ্দা ভাতি, দর্শন ভান্ধ আরুতি, বন্ধ মহে সনাতন গুণে। ঘটস্থিত যে আকাশ-वायुद्र गर्केक वान्, इथा भाषा सूधकान, मीख लिख नरह एक कांतरन ।। जीवकूर्क कर्मकृत, मन्म किंवा आंत जात विषादम ভादत विभात, अरुकात आज अভिमादन। अरू खचारत नटर, नर्सकाटन नमत्रदर, उज्जानिशन कटर, स्मादश स्वदंश कीटन नाहि काटन॥ अक सूर्या शतरगढ्छ। इरे नारे अकारण, लक कुन मनिद्वारण, पिश्वटन पिश्विरव नक वर्त। नकति वनित्छ। बोरी, श्रीवयु मत्र नाहा, एव बर्भ जायन्त्रशः क्रिकिटर नाहि ब्रेट वर्क। विनिष्ठात नक गक, निर्मक जाकि जानक, याशेत शताविक.

उक्रारमांक स्नम

র্নিদ্রলে সবার শুব হয়। স্থামি সতি স্বভারন, তথ্

खकारमार्क वर्ग न

চৌপদী # কিবা মনোহর, দেখিতে সুস্কর, শোভে ব্রহ্মপুর, সর্বলোকপরে। কনক রচিত, মৃত্তিকা শো-ভিত পীযুষ পুরিত, স্থির সরোবরে॥ কল্পত্র তার, কিবা শোভা পার, কল ধরে যার, ধর্মক্রেক্সাদি। পত্র পুপাঝার, ভক্তি তথ্ব সার, কেই নাহি আর, ভারাতে বিবাদি।। সদা স্থির ছায়া, ক্লিশ্ব করে কায়।, ছুরে যার मोशा (गठक शतनी। हम् कर्णाक्स, उशांत्र ना इस, नन পূর্ণরয়, শরদের শশী॥ শীত উন্নকাল, ব্রধার কাল, তাহাদের কাল, সে, কালু বসন্ত গ্রহা বে দগর, ক্ষমর व्यमतः, त्याकानि तिकातः बद्दः दशुवछ ॥ उथा कान नमी, বহে নিরবধি, হংস গুণনিখি, কেলি করে ছাতে 🖻 সেপরম रुश्म, नाहि जात धरम, स्नीत पात कार्य, सर्वकूटल चिटल ॥ जनाजना **७०. ८२न २१ वाक्**र, ना मारन निगृष, ग्र् छ्ताहादत्र । महाहे आनम, भातिकाक भक्क, नदेने मन्दर মলর সমীরে।। ত্যাজি ত্রিভুবন, হরিব্ল कुष्मन, রংং সর্ক-ক্ষণ, স্থির ভাবে তথা। ধরি কুলবাধ, সেই কুলবাধ, कत्रदश्च मक्तान शटन भक्ति यथा॥ देकानितः व पून्यके सम्बद्धः ७अटतः विद्यांशी निश्दत **চयकिङ म**ि . ध्रमू**ह प्रू**यनः नानाजाि कुल, दिश्व जिल्ला, बााकुलिट जिल में मोहि प्रत्थ लाक, सूथी बक्राताक, शिन्ता आकर, जि মনোরম। অভুলা শোভার, শোভিছে তথার, রমুবেরী-তার, নিরুপ্যক্রম ৷৷ ক্ষল আসন, তাহাতে জাসন, বানে स्ट्रांचन, विमा न्हें हैं। देख, हान सम, वृश्चि का कि क्रम, क्तरत विद्योग, स्त्रविट्ड जिंडि ॥ आदुर्वत मेंबद्ध,

सूत्रभूत वरण, ावणद्य नकरण, स्वनरण भूर्स । উड़ार्ट्स किन्नत, यक त्रक आत्र, निक्त विलाधत, शक्तकां हि नर्से ॥ शिक्ति विद्युद्धः देवटम जानदेक्द्रेष्ठः शान त्रवद्वादक जम अधिशन। करत दिन भूति, जेना उच्छ दोनी, छनि श्रवामि, जानम मनन।। श्राद्युख गत्त, जानत्म রহিবে, ভ্রান্তি প্রাত্তি পাবে, কহ জারবার। দক্ষিণে পিতৃর বৈদে নিরস্তর, মম আদি পর, অপর তাহার।। স্বধার্তী कृष्ठा नाहि পর আগু। यशि स्वीत्राश, अश्या श तत्न नकरण आमर्तम, विधि शम धुरुमा, नजनिरत वरन्म, ভक्तित बाद्यदर्ग।। नाहि बना क्या, योकंत विधाला, कामा विन। রুখা, সংসার সকল। তব আক্রাবহ, ভুঞ্জিনিশি অহ, ত ष **উৎসাহ, मात्रा ध्यार वल।। खन्म मृ**ङ्गन, कतिरः खमन, कतिरू शानन, य **जार्त्स इत ।** उन्तति गर्नात अया ममन, आंश्रम इत्र, देव मृजुाक्षत्र ॥ दिश भगरंगीह সভ দে তথনি, উঠিয়া আপনি, সভাতে দাণ্ডায়। হরষি: श्टर्य, विधि शामा लट्य, श्रम अक्लोनिट्य, जानन वनाय । করে দুক্ত কামন পুরবাচ, নামন দ্বেখিতে সুঠান, বিদ্যাধনে ाउ। विधि ভाরে बला, पूछ्यां हाल, आम तिरह दूर পুষ্প পারিজাত ॥ शुनि त्यह कथा, नामाहत्म माथा, চলিলেন যথা। সেই পুস্পর্র। শ্রীশ্যামাচরণ, করিছে বারণ कतित्त शमन, श्रुव क्यें हैं से ।।

गुड्राव्यः।

পুরবাচের উপর ক্রন্ধার শভিশাপ।

পরার। পাইয়া বিধির আঞ্চা বিদ্যাধর সুই। প্রন ামনে হার হারে হর্ষুত।। পথাপ্থ নাছি হাছে চলে ফত গতি ৷ দেখে পুষ্প পারিজাত গদ্ধ বহে অভি দ কি কব কু সুন শোভা আত। জবা জিনি। কেশর কনকদাম, যেন দিনমণি।। মকরন্দ **অসমন্ধ স্থা স্থা করে। দ্রাণে** তাপ भाष गाम विमल अग्रत। जात छा। लग्न एक रमह ভাগাৰনে। অঙ্গর শরীর হর মহাবলবান।। মদনের ফুলধনু ভন্য কুলে নয়। পারিজাত ময় হয় এইতো নিশ্চয়।। ব্যা-পিया योजन ठाति यात शक् ठटन। याशत मोत्रटन क्षितिक वार्षि स्वता । विहेरित विषय विषय कुन्ति। মারে যারে **জ্বে বপু অ**বপুচ বিশাল ॥রাশিম প্রক্টিত उथा भूव्यक्षण। वाहित्य वाहित्य पूछ क्वित्य प्रतम्॥ पु निटिं अपून पून चारत बरत कारा। महीन शहर हुक मन। श्वित होशा।। क्लिकिल खगवरान नेया गुक्रा करें हैं। स्वित धनि शूत्रवानि भगटन भिरुद्धः। भन्न मन्त्र नमीत कित वरः नमा काल। ভাবে पूछ विभन्नीक वृत्ति रत्न काला। इहन ्यदेवर्ग वर्ष तिर्भू वसवेख । शक्तीहेन कान काटन कहें। छ-गड ॥ भूभा माजि एक क्या क्रिका किराद । दहर व · अक नाती ज्ञान करत्र गरतावरत ॥ वनन भवन भवन भवि । ्रजारमा नम्। सक्षेत्र भक्षत्र कार्गिक कार्माक विषये ॥ शा-

कार्क जाशांत्र नाम जेर्सनीत स्टा । शहत नीदत थरते निर्दे कारम बाक्निका ॥ भूतराह दम्बि तामा बाजूदनत आग कूल मान तको दश्कु भेलाईया गांत्र।। छूछ वटल जूमि रशदरे मा वाँछित आर्थि। जानिक्रम निम्ना श्रीन तका केत जूमि ! विलय मा महरू रस मः भार कीवन। এত विल वहल धति करत जानिक्रन ॥ जाभरत जानत मित्रा कतिरह हुमन । नार्ज अट्यामूथी धनी मलिन वनन।। शूतकांठ এक मरन कतिरह तस्य। करणक विकारम कर्या देशन जम्भ तथा। याक्रिक হইয়া কৰ্মে দিলেন আছতি। তবৈতো মদন বাণে পাইল নিক্ষ ডি। 'চেতন পাইয়া তবে মান্ধতিরে কয়। ভোষার কারণ মম প্রাণ রক্ষা হয়।। অভিমান ত্যজ ধনী না হও উলাস। ভাষি এজমের মত হৈত্ব তব লাগ।। তব আঞ্চ বহ অহর্নিলি আমি রুব। যে আজ্ঞা করিবে যবে তথনি পা-লিষ । এত বলি কণ্ঠ হৈতে মাণিকের হার। অভুন্য অমূলা धरन भरत किन जात ॥ शत त्थरत जुडेश्टत तम करत भयने। তার পর পুরবাচ ভাবে মনে মন।। কি কর্ণা করিত্ব বলে। कटर शंबर । एक्काल स्थार पूर्व खकाल मर्जाता। मकन তা ওর্যামি তিত্র গামি বিধি। রহিতে নারিব মিধ্যা হণ্ড অপরাথি॥ হইল প্রহর ছুই জালিয়াছি বনে। কি হইবে।কি করিব ভাবে মনেই।। এখানে বিরিঞ্চি তার আদার আ শর। প্রহর পর্যান্ত সদা শিবের বাসায়।। পরে না পাইয়া ফুল শোকাকৃল হয়ে। জাপনি জানিল ব্রহ্মা কুসুম তুলিয়ে। पिथिन नेप्रदेन कर्म भाषि छ्तोहात। **धतर काँदश** जन কোথেতে ব্রহ্মার।। আসিয়া শিবের পূজা করি সমাপণ। उद्घ कथा मिन मटक रहा कठकन ॥ छात्रे शदत निज जारन र्भव म्बर्गर्ग निक्रमण बद्ध खुका छोट्य महन महन।। रून कारन शुक्श नरत **जाहेन रा जन**्। रमरथ उनोटभ करह विधि निर्मम बेहन ।। जन्माद्यादक भाकि क्य श्रुष्ठ वादश्य ।

विश्विति थाकिट्ड जूमि योगा नट्ट जाते।। मट्ड मड रित निरम कर धराजात। स्मर स्मर हाणि २७ नट्डत जा कात।। छिनि भाग मन्डांग भिट्ट हुँ करा। लघुरमार्व छक्न म्छ किन मश्मम ॥ किन्द्रत कारन काटम कर मुम्म त्र।। मग्रानाहि हिट्ड वटन कर्द्रत स्नामन ॥ नानाविध छुटि केट्ड थट्ड डोक्नांगात। किश्विष् क्हिट्ट भाग विभिन्न जावात।।

পুরবাচের স্তর্য ও দেহ পতম্ 🕻

লমুত্রিপদী। বিধাতার বাণী, পুরবার শুনি, প্রবাদ গণিছে गतन । अथे छ कथन, विभिन्न देवन, कारन करन जिल्लान । কি ৰূপ উদ্ধার, হইবে আমার, আর্থার কত দিনে। যোত মত ্রলোক, হয় বছ শোকঃ এ অভিন কর কেয়নে।। ভূণি বিশ্বপিতা, বিখ্যাত বিধাতা, সন্তান তব সংঘার। নীচউছ জীব, ভোমাতে প্রভব, ভুমি বিশ্ব নূলাধার॥ অকৃতি দত্তাল, আমি হতজান, কুপামর কর তাঁণ। হরি ए विचान, এकि श्रेतमान, श्रमियां कोशिए का ।। उन्ह গ্রিতা রোখ, তনরের দোষ, জনক নাহিক ধরে। তাহাতে বিধাতা, ভুঞ্জি,তব কথা, রুখা দে!য দেহ মোরে।। ভোমার रहम, नलां निथम, श्रानक याशादा बंदन। श्रान्यतमव त्यांदश, **जान मन्म त्जांदश अर्गमर्का द्वाज्या हाम। अ**जि-मान, मकरल अळान कात् वा अञ्चय आर्टि। जाव मन्य गड, তোমার কহত, ফলাফল আর্নে পিছে।। কার প্রক্রি নাই গুন হে পোঁদাই, সব তব আঞা বহে । ভোমার লিখন, श्टर व घर्षेन, कान्मिटङ कान्मिटङ करशा (ये कर्म त्यकदत्र) कर लिशिवदत्र, किया जान जात मन्द्र । यस नाम धर्मा, जात পাপ কর্ম, সে সব তব নির্বস্থা। তে,মা ছাড়া গভি নাই প্रकाপতি, তুমি গতি মতি জীবে। অভিমান আই, কা-সাদি বিকার,তোমার ভাজা গ্রভনে । ভাতে মুবালারে, কে

রহিতে পারে, জান হে আপনি তছ। স্র পূর্মরে গুর্নি ক্লাহরে, স্মরে হইমে মন্ত।। শির কোপাগুণে, দহিল महरा, उब महन काटम वाख । दिसे निमध्दत, एक शृत्री रत्त, जारहन कनक शखा। मन्दनत् खुन, दूमि जान जान, कन्माग्र आंगळ मन। (पर्ध ताह देवीद्य, बिटलावन রোবে ছিণ্ডিল তব বদন।। কামের আগুণে, ি প্রবিপ্রবেণ, এড়াইতে কেবাপারে। আমি কুজ তায়, কি করিব হায়, কেন্ কোপ কর মোরে॥ শুনিয়া শুবন, সংক্রাজ নক্ষন, বলে তাজ স্কুত ভয়। আমার বচন, না श्रद लक्ष्म, श्रुक्त वर निम्म्य ।। शिशा मङ्भूत श्रद বাজ্যেশর করিবে আমার পূজা। পণ্ডিত ভাজন পাবে 🚈 জন, ফিতিমধ্যে ্মহাতিজ্ঞা ॥ কিছু কালান্তরে ुनः जन्मभूदतः **कानित गोशिकःभदतः।** ना कदता दताननः अमदत नग्मन, देपरवटक मकल कदतः॥ श्रामात वहन, अधक তথ্ন, যাও বাছ। ভূমিতকোৰ করিব করুণা পুরিবে বা-বনা, **আনজে, না রও ভূলে। কহিছে২ পড়ে আচ**্ছিতে उकात गाकाटण काका। त्विच विधि भूनः, इन स्त्रीन मन-तालिल सामात सामा ॥ अटमें देन कीवन, कूवन खमन, खटने--वन जान शान। अभिटक अभिटकः भूकं निर्कादकः नवहील ाहिन साम ।। नामात हत्वन, कृतिसे भातन, समिश्य नेड नटन । क्रिन त्रमा, बिलामा हत्व, कोजूक विनाम हत्न ॥

্রাজা ক্রফচন্দের জন্ম।

প্যার। সর্বত্রে তাহার জ্যোতি করিরে ভ্রমণ। নদীয়া নগরে গিরা উত্তরে তথন।। দেখে রাজা ভাগ্যখর পুণ্যবাণ জতি। কুলে শীলে ধনে মানে খেন প্রজাপতি।। জা-তিত্তে ব্রাক্ষণ নৃপভাতে গোড়ীপতি। সুবর্ণে সোহাগা খেন পক্রে বসতি।। ধুরুর রাজ্য ধন রাজ্য বছ দব। চলচ্চিত্র छेड्ड थटत छर्त ।। शाक मिक प्रतान क्रूच छाछिकम। वक् अस्तित पूर्व करतम आजन ।। इष्टरमध्य मृद्या रमवा निर्छ। ভক্তি युक्त । यमा निष्ठा यानी धीत प्रक्रिक्स अञ्चलक ॥ जारनव खरनत धाम नाम तुसूताम। यथा स्माना त्रांनी जात जिल्छमत्री नाम ॥ ना हिल प्र**छि जात विशेन ग**र्डान । त्मह जिन ताजतानी करत अर्जुनाम्। शुरुवाह मरन জানি উত্তম আধার। বায়ু কপে গ**র্ভতার ইইল স্**ঞার ।। क्तन कितन इकि शांत एक भनी रवन। अथम जुनान शक तरह एक मिन्।। विजीत मिनगाविध शक्षम वीगत । বদন স্পাকার গর্ভে বাস নির**ন্তর ।। জ্রান্ত জননী** গর্ভে হ-है दि दि है न । कुलांन हरकत गाम करत्न जन्म । नश्चम नि-বস পর এক প্রক আর। মাংস পিও সম গর্ভে বাস হয তার।। পরে পঞ্চবিংশতি, তামর শাস বিধি। অন্ধুর গ-র্ভেতে বাস করে গুণনিধি।। সেই কালে পঞ্চ অঞ্চ ইয়তে। গঠন। শিরক্ষ পলা পর্ক উদর্গেশন । এক মাসাবিধি ছুই মাস গণনায়। হত্তপদ পাৰ্ম আদি বিধি দেন তায়।। किन्छ अमिका बार आर्थित विशेषका अवस्व अ**हे अक** रह यांग जित्न ॥ इजूर्व मात्मदक् इत्र सकल अझू की। जीदवत ज्ञात (पट्ट मिक्का ज्ञान ।। नागानन अश्रद्धानी प्रकृ ভোত্র আদি। পঞ্ম মালেতে তাহা কলে গঠে বিধি।। हम्माटम नांचि जिल कर्नेत श्रमात विवरंग लिएन विधि क्वि मटनार्त्र ॥ मश्चम मार्गिट किम भटि अका-পতি। আট মানে লেখে রোম হইল আরুতি। নয় মানে চেতহা সুধ ছাধ জ म। সাতৃ ভক্ষা অন্তর্গ করে আলা-मन।। मनमान समिन शूज यहत दत्र। आणिक स्टिक। वाबू (महे (य ममत्।। महे द्य स्टिका वाबू जीव बनावान। अमन दागरन तानी कदत आने कान ।। इसि नम् अति

জল ক্লী কুলাঢালি হয় মহোৎসব। গ্রামবাসি আসি করে জয় জয় রব। দ্বিজ শ্যাম বলে পরে শুনহ কারণ। বাজা ক্ষেত্ত জন্ম করিল ধারণ।।

तां का क्रिके हत्स्व वाना नीना।

ত্রিপদী। ভূমিষ্ট হইল সুত, মর্ক সুলক্ষণ যত, শশীসম অঙ্গের কিরণ। বদন সংগ্রাজ যিনি, দিব্য পাণি ছুই খানি, আঁবি তাহে গঞ্জন গঞ্জন।। কপাল চিবুক ভাল, বিধাতা গড়িল ভাল, ওঠাধর সিম্পুর সমান। ধগওঠা সমনাশা, আধ কাব মিষ্ট ভাষা,কর্ণযুগ কুমদ বাধান।। মনোহর কটি তার, ডমুর সম আকার, নাভিত্রধা কলঅনুমানি। রম্ভা ভরু সমউরু, একল গঠন চারু,বালকের কতবা বাখানি॥ কেশ বেশ হীন দক্তে, ক্রজাদিত নয় অস্তে, দেসব বিহীন ীপালে। বর্ণনা না করি জার, শিশুবোধে রক্তাকার, ্স পিণ্ড সম শিশু কালে॥ বাসরে ৰূপ বর্ণ না, পতি िल्ल कारन काना, बारह हेटल इहेल खुकिए। सिन्मा भू-ে অপংশুলনে পুরিত ভূপ, আনমেতে পুরে নিজটিৎ।; मनन जिनीय। कर्ण, जाशत कांत्र न्त्र, नीम जांत्र तात्थ क्षान्य । त्य दश्रतह त्र माधुति, जोत याहे विनशति, त्र नाहि एमथिए छाट्र छन्छ ॥ नानाधन नानाकटन, मान कटत শর্ষ মনে, শিশুর কল্যানে দিজ রায় ॥ ভলাভলী জয় রব, व्यक्षे आर्ष नव, महाजननदनताशकाम ॥ व्यक्ति यष्टित পুজা, লাটি কৌড়ে করে রাজা, থই কড়ি মোহর ছড়ার। গ্রহ সুপ্রসর জানি, ছর্নানে নৃপ্রনি,অর সুতেব वम्या रहाजात्र ॥ शुक्रान्य नम कांत्र, क्रुक्तन्य दृष्टि शाम, **११कम** वद्भारताज्य कटत्। इत्रविक ताक्या इत्याख्य स्थान পেরে, খড়ি দান করে তার করে।। বালক চন্তর হয়, সা-

মান্য বল্লিক নয়,শাগভাই মহিতে অহিত। নানাশাস্ত ভাষা ত্রণ,বেদ পরায়ণ,কাব্য শাস্ত্রে পরম পশুরু।। সুধা-দম মিষ্টভারিকেমধুর মৃত্তানি, ধর্মে মতি অতি বিচক্ষা फेशनमनापि कर्ना, हुए। जापि श्रकत्न, नेमाबिक त्य बर রাজন। উপযুক্ত দেখি কাল,চিন্তাযুক্ত মহীপাল নিম্ন পুঞ विवार कातन। ताजनां ताजनां ताजनां के तितार कातन করিছে। ক্লার অন্বে**দ**।। নানাস্থানে স্কুতগণ্য করিছে दक् समन, शदत कन्या मिलाईला विधि। वाह्यटन आटमटेड ধান, রামকুক ছিজ নাম, প্রভাবে তাঁর ক্রা নিধি !! রতি জিনি ৰূপবতী, ঐরাবতী সমজোতি, না**ভি**রিতি इकि निर्धामन। यहार अठीछ मेंग, नाहि रोश छंत्र मर्ग, িদিত্র বেধ তাহাতে ঘটন।। সপ্তপ্লকা নাহি পায়। রাজ-যোটক মিলে ভার, ভারিয়ড় ভাইক বিহান। পুৰুর विवाह लागि, रात्र तालां खन्तांगी, त्मरण त्मरण निमञ्जन ॥ विदर्शि सूत्राक येंडे, क्ट्र शका नागाम छ, द्वाप নাই নাহি পরিমাণ। কৃত্রিম পর্কত করে, কাগজেতে রঙ্গ ভবেন আর করে বিধির উদ্যানশা মহুর পংক্ষি তক্তানাম। कड्या कृश्वि मीमा, फाटनक जरून हजूटमात्र । वामा कहन নানাজাতি, সহস্র সেফাই সাঁথি, কত শত চলে রাজদল।। अमाञा सूक्षकान, मदक बंदम विकलन, इंबिटलम ताक्रव नशदत। एका वाटक गातिक कांगा किंहि देश माति, न-किय कुकरत উटेकश्यदत ॥ कारम कारम अंकिक्स, अंथ जाइ।-त्नत रहे, प्रथा रह कर्नी कर्डी मटन । अज्यान कटत विक कार्रेम (र मराताक, हुन्। जामात मनदन ॥ जिन्यामानत्व हिक, भागांत्रात गर्दतिक, समिल्ह्य कतिया धार्तन । दनिक রঞ্জন জাবে, নবরস পর কালে। ত্রিপদীতে ক্রিল রচন।।

পরার। রাজারে দেখিয়া দ্বিজ হরে ইর্ষিত । আপুন हत्त लद्यं क लिल बुत्रिक ॥ वनात्र नक्न कदन यशादयात्र) ञ्चारम। ज्यामणाहत नरम् योग्न शहत में न्यू मारम्॥ त्वरमङ विशेष नीषि एय द्रीषि हलन। अन्न उन्न नर्द छार। क्रिल शृहन ।। शहर जी भागांत करत इस्केंट्स निरंग। याष्ट नरेव अखःशूरत इनाइनि निरम्।। लाम्र ए एकिया शीका স্থালিপানা তাম। বরপাত্র রাম গিয়া তাহাতে দাঁড়ায়। মহৌবধি ঐ ছলে অঙ্গেতে ছোঁয়ার। ধুক্তরে জলিয়া দীপ वद्वदन रम्थात्र ॥ स्मानाम्नि (वँदेश मिले कमात्र भगात्र । নানাঞ্জণ দ্রব্য রাখে বরণ ডালার।। আপন মন্তক মাতি। र्ख शतिमान। खाकानी वहन कति मश्च शांक यान ॥ भटते ণ টিছড় বান্দি বসিল বাসরে। নারীগণ আসি তথ্য পরিহাদ করে॥ কেই করে কোথা থাক বলতে নাগর। क्टि वटन होत्य (मर्थ धहे रवन होता। क्ट्र वटन जूनिक भवादत कोटन कत। त्कर वटन बाज बोङ्गाणित कठिन অন্তর । কোন জন বলে গীত গাওহে রাজন। কেই হাসি কর্ণে কর দিতেছে তথন।। এইমতে কত কহে কি কহিব শার। কহিতে না পারি পৃথি বাড়িছে জামার॥ পরে शामवानि यानि शक्ति नागती। जनतक खर्म इत्र क्रयः-व्य दर्दि ॥ अभवन त्रायकन काम कुन भारी। द्दिता तम्गीतम् देवतम् शतात्र॥ वितदः विद्यातं रदत्र ये मात्री-গাৰ। খেদ ছলে করে তারা কপের বর্ণন।। সেইতো বিরহ বিশ্ব কে বর্গিতে পারে। কিঞ্চিৎ কহিছে শ্যাম সাধ্যাত্ব-गाद्यं ॥

ब्युगरगत वितर ७ ताकात कल वर्गन

कोशनी। या नानीशान, रात्र कडेमन, कतिर्द्ध शमन,

कोषुक क्षा कि त्थ्रमति जीवास्त ॥ करत प्रत्य शकि। कर मृष्टिति, रकर कार्द्र जानि, कथा करर नरमां भरत । পুर्य त्वरें रेवेंटि, करह कर्ड करड़, यात विकेपिटड, फेन्स देश त्य मत्म ॥ त्कर यत्न काहे, जात नाहि नाहे अविषय বালাই, শাশুড়ী ননদী মোর িসদাই পঞ্জনা, করমে লা-ঞ্না, সহেনা সহেনা, ঘতিনা আমার সার ॥ এমত প্রকার, क्छ कटर क्रांत, गटन रस गांत, द्यम्क क्रम्म द्रम । कत्रद्रम প্রকাশ, কাহার উল্লাস, কেই উপদাস, করে পরে ভাষি उक्त ।। कटयां शक्यरम, **हटन त्रामां शंदन, बिट्ड**न नम्हन, यथा दिन गरातांक। भूरनतमोहन, त्नहेंत्का ताजन, कदत निदीकन, यह युन्ही नमार्क।। त्कर बद्ध गरे कि मिथि जाम के जात मृति वहें, मा तिथि क्षिम्ना दिन। ति ति आहे. बालत वानाह, नात त्यादत याहे, मा त्याचे जत्या ध्यम ।। किया हेक्कितिहा, तथ्यम् द्रम किटस, मनदन मिनादत, देशदेत शृद्धित विभि । कि कुल माधुती, व्याहा मति मति, শুন সংচার, ইহারে নিলারে ঘদি। চারে গৃংবাসি, হব এরদাসি, হেরি মুখ শশী, বুড়াব ভাগিত মৃতি। কামে एतर, स्ट्रेंट्स जखद्र, कर्तास उज्जत, जनम्भक तगवर्जी।। **बहे महानत, हर्द्य कुलमंत्र, आमारह मिलक एक करि परि** विधि। दन्धी विनाहरम्, क्वती वासितम, अश्वर वनातम, त्थ्रमत्रक्तू निरंश वैधि । अन्। त्रोमा कम, क्षेत्रिका नमान, हर मराजन, जामात मटनट रदा। वितर गाण्या टेटल बिट्स, त्राहाटन हानिट्स, माथिय मुक्त नाद्य ॥ व्यना नोती कन, वर्जन काश्रन, यहांशि मिलन, रश्न मटकटल আমার বিরহে জালিয়া সোহাকে সালিয়া ক্রেমরর पिता, देशत शिख्य श्रेत ॥ दर्जान त्रामा कम, अक मृश्वि तर्ग, यहां शि जिलन, इस मरकटल खामाता क्रमदम बंगारमा दर्शन dern un derfern. (stad niget wie il stiff

चाव घटन, मंडा कहि दर्जीदन, युमि मेना कदन, विहेन छेशत कारन । जिरवह शुक्त, तमतीत नत, आधि एतर, जाय-कटन मत्व चादमा। क्वक द्रामा कम् मानव धनम, दश्म मदन इश, शक्त रहा धंकत। यात , मत्रमद्भा, यन नाहि महस्त विदन शक्षवादन, जात कि काटक अमन ।,दक्रांन ताम। वदन, मनन स्ट्रेटल, अक्सीन बदल, अजन ना रश यात । अहेट्डा निका, अस्ट्रद्रत अत्र, श्रम भताज्य, आतिप्राट्य श्रान्मत ।। खमा मात्री क्या रेख वह मन्न रहन द्वाप हता वकन हरूरन শশী। রাছ্ম ভয়েতে, আসিয়া মতেতি, বাসরে লুকারে রহিয়াছে যেন বসি।। অন্য রসবতী, কহিছে ভারতী, নহে निमाश्रटि, कलक विशेन अन। हत्सुरें कलक, अर्थारि ननाक, त्म रतन मृतीक, अक थाकि कूमने ॥ दश्न कान रमः स्टत्तं उनमः अर् तममन्न, सन आव मरहित्। अना अरू গতী কহিছে ভারতী, মিখ্যা তর্মতি, অন্যায় সহিতে नाती।। रेश्टन यखानन, खनटन। कात्रन, प्रयुत्त वाहन, व्यवना পাকিত ভার। এই মোর মতি, বিরহি ছুর্গতি, দেখি প্রত্না-शिङ्कतियोद्ध अ**ङ्काद्र ॥ ८१% क्रांम जू**रतनित्रहिनी मदतन বুঝি তার তরে,দয়া হৈল বিশাতার। এই সে কারণে, সাখিনী नम्मरम, व्यागिर्ड वर्थारम, व्याख्या देश्य वृत्ति छात्।। व्यक्षिमी मण्डम, खरणा धलम, पूरमदम्हिन, दुत्रवा दश्न कश्याम । दन-थिया माधुर्याः कृत्व गृश्कार्याः, ऋतिद्धं करेशेर्याः, त्रदश् स्मादिश কম্পবান ম কেই বলে আরু, ঘরে গিয়া ছার,হেরিব অঙ্গার ন্দান অভানা পতি। গৃহে কেবা যায়, ধরি এর পায়, रमि नदत्र योत्र, कति आमात्र मध्यक्ति॥ शतियान वामः शा-ট্রাছতান, উর্লোস বিলাস, প্রকাশ শরীর মর। মন্তক अभाग, कांत्रणि वसमा, महाई हथान, कहिन वमन रहा।। क-तिरंड राष्ट्रम, कन्नदम राजन, सामान क्रमन, समन दम कि कार्ता । बाह्य श्राहक होत्र, मन नाहि बाह्य, जादर अकि बाह्य,

যতেক কুলের বালা। মননে মাতিয়া, কান্দিয়া কান্দিয়া, পতিকে বিশ্বিষা, সকলেতে খেদ করে। মনেন্ত পতি, নহিলে বুবিতী, বিমাণিত অভি,বিষাদ সদী অন্তর্গা এম ক ুলল, সে রসে সরস, নহিলে পরশ, নী বাঁতে পরাধ আর। জিজ শ্যাম কহে, কামানলে দহে, নারীর্থণ করে, পতি-নিদ্দা যে যাহারণা

পशात । माजित्र। नगरनत निर्देश परिषक कुना है। जनकित शृद्ध याहे कहिए जात्र ।। इतिएक इत्र इटन सम माहि চলে। বিচ্ছেদ বিকার ছলে পতিনিন্দা বলে । একরামা বলে ঘরে কিবা প্রয়োজন। মনোমত সংহ পাতি ভাতি फার্ডাজন।। জামি হেন রসবতী তার্জিয়া **জামার।** পর गटक तक्रवल जीत गर्वनात्र ॥ जामादत-कथमं धित्रवांका नारि करा। निभिट्ड विटाइन गरे करेटना स्थाम ॥ करन ধর্মের ভর ভাবি পরিণাম। মনেতে বাসনা হয় লিখাইতে नाम ॥ अना तमक्वी करह प्रदेश कार्योन्स्य । केहिएक वालन छा। आरम जब्बज्ञान्।। मृतीना युवली जामि छाट्ट राम-ने ही। जामारत भिनादत विवि काठ इस्र निर्हा छः दशर ह পাটারে বুক মুখ দেখে তার। সোলচর্মা তিন মাথ। বক্তন आकात । असन कलमी काना छोतात देवेठक । श्रीकाणित जल मूट्य काटन थक् बक्। जिस्तिन विमेतिन दनका नटर जल। त्नाम प्रका नम बुकात माथात कुछने।। तम-वित्रा পতित तक बीत्रदेशा क नित्रा। क्यांक महिक भारिक মাত্র একত্রে শুইর। fr শর্ম কলম্ব মার স্পার্যে ভাল বলে। রতি রঙ্গ পতি সঙ্গ নহে কোন কালে। আমার বীৰ্ণিন নাই তার যদি হয়। হরিছে বিষাণ তাতে **প্রধা**দ নিক্ষয়।। इयन कतिएउं यहि छात स्रा जोता। सूरव जिल्लारेत हार्च বিষয় বিষাদ 📭 দংশিতে অধর তার 🚧 নভুর 🖟 আহা **উक्ट**ेबर्ति वर्तन निरंजन कामात्र। कानक नीतंक रहा

তারে কে থেকার। জামার কপালে একি হার বার হার।। মরি মনোছঃখে দেখি বৃতিহীর প্রতি। কি দোধ তাহার দিব সেই ভীমর্তি ।। সাঁহে গ্রুক্তির বং मारि वटर शन । अंछातित हृत्य देखान गम हितकान ।। তাহার শুনিয়া হুঃখ জন্য এক নারী। কহিতে অপেন ष्ट्रांच म्हण्य वहर वाति॥ वहन आमि तनवंडी कर वाकः জানি। আমারে মিলিল পতি শুদ্ধ কার্ছ জিনি।। গওযুগ স্ত্রী বম মস্তি অনিবার। হিতে করে বিপরীত পীরিভে তাহার।। ভাল মন্দ্রাহি বুঝে ছন্দ্রদ্ করে। মুর্থের प्रात्मव मार्च विभिन्न प्रश्मारत ।। यर्ग वर्ग जाहिल छाविद्या देश्य काम। तिथित वहरते हाई कि প्राण् कुशान॥ आते-मिरकत (श्रम निष्टे जतरना त्तांहम। सम्बद्धान श्रवि सम त्नशाम मर्भव।। जाना नाती वटन पूर्व वत्रक्षट्ठा जान । छ-जक नगान পতि वृद्धि षा थया। केश तम नाता सूने ८ राक कथा क्या। हिमाहियि देश्नादर्शनी नुकल गमय ।। कामिनी श्रेटन नावि उद् नाव नदश जूनानन नग थेल-मभ अक्र मद्र ॥ विष यमि शाहे ठाई कतित्य ভाजन। ইচ্ছা হয় শুন আই ত্যবিলো জীবন।। খলের পীরিতি बहै शांति त्यन वाथ। कटनट्कटण शटण मिंह केटन धडी है। भा आह अक माही कट्ड कुरत शशकात। वटल दकरा हः वि बाद्य नमान भागात्। अबद्धत भागत পणि गठेला पृच्य न। क्षात्र ठाजुती करत तक कुरते शनन ॥ जाशात অধিনা জামি নাহি ভাবে মনে। জ্বর পরের ভাব তার পর্বক্ষণে।। ক্রিকরিব কি হইবে সদাই, ছতাস। রসিক श्रूजन त्थरण खुरिक गृर ताम ॥ भटिक शीति गिर जटमत णियम। संश्रम ८६०म भाकि सूधम महा। अनाकश-বিভি ভাষা করিছে নারপা, লে ভিষ্ ধরিছা বলে নিজ বিব-तथा। क्यानक्ष्या नर्दन्ता करिएम नत्र। उकत हकत

शिक निर्मा महाम अप ।। तकनीहरू कांत्र नदक नाहिक निर्मा । বন পোড়া খ্ৰীব্ৰুদ্ৰম থাকি সৰ্কক্ষণ।। তাহার যেমন মনঃ আমার তা নয় ী সদাভারি কোন দায় করন কি হয় গ পদপত্রে জল ছেন প্রাণ কাঁপে খড়ে। ছোরাণীর মন थारक भू है जांभारत शर् ॥ जात तथा श्रदम करह जना রুগবতী। শুনলো আমার ছাধ মতেক বুবতী॥ চির रितहरिनी आमि नटर পতि मझ। कि नाय जारात निव (नहें म, ज़ब्हा। कथात कूलानी करते तिकका रख। पूर यरन विशाख दर्दन। द्वानीत मूर्य कड़ ॥ वाकनी केंग्नि मात्र करत जानाचन। अभन शेष्ट्रित रकन ना स्कामतेन॥ শিরদ নদীর পতি রতিতে বিঞ্ন 🔝 ঘন মূল গুরুত্ন নহেং वित्रवंश ।। दक्तवल आगात् १०८० वाजिशाद्य वर्ण । नार्दन এতেক দিনে হইত নিকাংশ ॥ ভানা ুৰূপবতী কৰে নিজ বিবরণ। মাতাল দাতাল পৃতি অভি অভাজন।। বিষম বের্ছ স সেটা বাজুলের সুস । স্বানার কলালার সদা তার তম।। ठलिटें ठवन डेटल अफ़्ट्स श्रीमाम्। मृतान हरू मृद्यमूथ निश्रा यात्र ॥ व्युक्तिकृत्व द्वादत कत्रदत काल्य। कश्चन वा शास्त्र धरत माहा सम्।। त्वथिया ाशत जिन रहे गर्भ (जिने । शनि भाग फरनकः दनिक्षि তাহার পীরিতি দেখি মরিলো ক্ষায় বিদে ভাগেরাকে किंका ज नियम नात्र ॥ अन्य ज्ञामा कटक भटन आश्रमानक्रः ध महाद्वत मीटत छार्दन स्टब्स खर्दशासूथ ॥ वर्ष स्वामि स्वा गरे পৃতিতো वृश्यिम। थ्यटलट्ड विकटत त्क अब्रटना स्तापना। शिटि गरक सिंग कति अकरज मधन। अक्षरण कुकारत थारक रख जनर्मन॥ सिथिता जाशस्य मधि महिरमा राष्ट्राप्त । कृति क्षित्र वाक्ष्मा वक्ष धानियम प्राप्त ॥ जनग त्रामा रत्न महे प्राम्बद्धा दिवाम। अद्युक्त भूतिन छव **क्रिट**मत गांधे ॥ दर्शमात गमान सूबी मा तिथि काराम ।

কোল শোভা মনোলোভা হেন কেবা পার।। আমি অতি छुश्विनी एव जामात नमान । काशाँदे माहिक एहति अमन নাতান।। পতির পৃষ্টেতে কুঞ্জ অতি স্করিস্তার। বসিরা याकित्व इस मूतन काकात।। िछ हर्दम भग्रत्न उपाध त्म मर्कता। मछीम ना देश्टक शादत कूटक बादह तामा॥ ঘোকা কড়ি মত রহে উবুড় হইরা। দেখিয়া পতির ৰূপ मतिरना जुनिहा॥ जना जुलवज़ी वरन कुछा नहें जानी। আমি হেন রসিকা আমার পতি কালা।। ঢাক ঢোল वाजाहरल ना भाग छनिए। जांधारत अमान वर की-ত্তক আলোতে।। হাসিলে তাহার[্]কাছে আর রক্ষা नोहें। देशत देशदा अर्थ कर्य विगम वालाहे।। जात अक तामा करण काला मरमाश्त । क्रूजारव नालि पिरल् मा করে উত্তর।। আমার স্থান কেবা ভাছে নিরানন্দ। খামি হেন ৰূপৰতী মন পতি ভাৰা। বিধাত। বঞ্চিত মোরে সদাই অন্তথ। লজ্জায় কাহারে সইনা দেখাই मुथ ।। (यमञ्जूषा व्यञ्जित इत्यञ्जि यञ्जिन । नग्रन नर्गतन बारक रकाम अरम्राजन।। अना तांमा बरल अस निधित লিখন। আমার স্থান ছংখি না দেখি কথন।। কুরুতে কুকু ত্তে পতি মূরত মুরতি। দেখিয়া আকার তার অঙ্গ मदर क्रांकि ।। दरत्व क्रूट्व क्रद्रव भट्य दरदत शिन भारा। क्रिंडित अविम क्रिति गर्मका दिए क्रिं। वनन आक्रांनि यनि शद्मे देवदम शांदक। छत्रबूह यांशांति छाटक त्वांध कदत লোকে। রতিরঙ্গ সে প্রসঞ্জ জঙ্গু সেই কাজে। এরি মনঃ प्रत्य कथा माहि कृहि लाटम ।। विभिन्न वम्टन हारे कि वा-लाइ बाई। तंत्रिक पूजन र्लाल जीत मुर्द्भगाई।। এই क्ष शामाद्रश्रेष्ट्र श्वा त्वाचा जीनि। नैकटनत नाती र्थन कट्रा मट्रा क्रांचि। छाश्चरमत देशमे छनि अक तामा वदन िकान्त्रिटन कि बटन महे या जाटह क्लाटन ॥ ट्यामा यता रेश्ड छव आमि सूचि मानि। यूवक आमात का ब यूटथ मिट्ट तांगी॥ भत्रम भिंछ क्वि विलात मानत। यदमगदन कूटल भीटल आमात नांगत॥ भगतम कांग्रतम त्रवि आत । এ मकन त्रक्रतम प्रथाद्य छाशत ॥ क्ठमड कथा कर कितिल अवगा मर्क छाथ पूरत यात्र हहे हाई। मन ॥ छाशत छनित्रा तांगी यड बातीनग। क्वाधिड हहेन। यदत यात्र मर्ककन॥ यात्र यात्र कित्त हांत्र छाटम अख्य-जत्न। मन हृति देकन तात्र अभारकत हरना। तांका हुक-हर्मित कथा अभूक्त अकाम। श्रीभाम कहिन वांका क्वि-हुक विनाम।।

রাজার স্থাপন বাটাতে গমন।

পয়ার। এইৰপে নানারকে প্রেম জালাপনে। রজনী विक्षित तात्र मातीशन मदम ॥ आज्यकोटन ्छित्त यानत श्रुटिक । एलिएन द्रम्म ताका देवदमें एवं काटमें एक श्रुटिमें एक श्रुटिमें एक श्रुटिमें एक श्रुटिमें एक श्रुटिमें তারে প্রণাম করি ডাগুইল রাম। হেনকালে নারীর্মণ স-पान भागा । भगा टालामी के हैं। दा अहेका । नहित्त रहेटव छःथ नवाकात मदन।। अभिकाओ बद्दुताम হাস্য করি কর। ইহার কারণ কেন ক্রিতেছ ভয়। বাজা জিক্তাসিল পরে জানিতে কার্ন 🗗 বাসরে জাগিয়। ছিল नाती कम अन्। क्रकांक क्टर जामि क्रिक अस्मान्। धक्षा नाती हिल गम विनामान्॥ अनि स्त्रिक् मान श्या करत नीता अदन अदन गठ गई वन ब्रा नाने। कन्मान कतिया भटत घटत गटेर गात्र। दश्न कादम त्रवताम माशिट्ह विमात्र॥ कर्ट्ड कुमंखिका आहि इहेटब कद्विटछ। বিদায় করতে ভাই মোরে অচিরাতে ॥ হালি ছিল বলে क्य ध कात (क्यन । महिक शहिरण निष्नि ना क्रांट्स वक्यन ॥ धरेकारन कुनिक्षका कृतिहा भूतन। भरतहक सुर्वे सक्

ल्फन दर्शिन । योकी वेंदेन अकथा कोर्चथा मदम रहा भूटेर नियां क्ने शिकां इहै दवं निक्त्य । चिक वटन भेशताक दव विका दर्शमीत । जानिन स्मनानि जाते जात नमकात ॥ क्नोदित जीर्यों नदेन लहेशा खाचानी । जातन वेतन करत हत्क वर्द्द शानि ॥ यथा भद्धि अञ्चर्तारत द्वांशिन नगान। कि कटत परनेट यात अधिश्वाका नान ॥ ताजात स्कूम পেয়ে যত খানে জানী উঠিল রাজার তেরী করি ঘোর নাদ।। পুরুর মত পত শত নহবত চলে। জরভন্ধা রাখ-वान वार्क कोलन्दन । मामामा मशका जूति काए। सका ঢোল। বাঁশি কাঁশি শত শত স্থমধুর বোল।। সানাই ভো-इक्रे दिना तामनिका चीटेंक। निकव क्कादत रुमा जय मश्ति एक ॥ हजुर्दमारन क्रिके हन्य क्रिके बारताहन । मश পায়। পরে প**দা বসিলখ**তন গ রেসেলা চ**লিল সবে** বাহিয়া বাহিনী। কতক্ষণে নিকেতনে গেল মৃপমণি। ঘরে গিয়া ङ्लाङ्जि अप्र तर करतं। तानी आनि भूखनभू उज्दर्शस्त पदन त्राजाकृष्ण्यास्त्र कथा अभूक् अकाम । श्रीमाम বহিছে কাব্য কৌতুক বিলাস।।

🔆 👑 🧸 রাণীর পুজ বধুর্বরণ।

भन्नात । रत्नविद्य ताकतानी लदम এदमानन। शूक्यपू उच्दादत कदतन वतन। श्रिद्धमाना भू ि ताथि श्रक्षात माथात । कांजिए को हिट्छ जारा क्रक्ष्म प्राप्त । प्रत्य क मान जा श्रम ताथिता शाजदत । फाश्चारेन श्रक्षाविको हिट्ट भूष्त करता। श्रद्ध क्षत्र व हिट्स मञ्जाहित् । वत कन्ना धक्यार वित्र प्रक्रम । किल्लिट श्राह्म । वत्र कन्ना धक्यार वित्र मान क्ष्म । किल्लिट श्राह्म । ज्यार क्ष्म मान गत्व ज्ञारमा। यून मुख्या जार्या मुख्या शिर्धार्थ वार्याने ভारत ज्ञारम शिक्षात्र माना जारयां ज्ञाना। द्यान नाती ता-छारत निर्छट श्रीकुक। द्यान क्रिया जानि श्रीमि श्रमादेश द्यान क्रिया ज्ञाय ज्ञाय व्याप क्रिया श्रीम भाषा म तिल् तिर्छ। क्रिया व्याप क्रिया विवास श्रीम माना म तिल् तिर्छ। क्रिया विकास व्याप क्रिया विवास श्रीम माना म तिल् तिरुष्ठ तिरुष्ठ। क्रिकित वाज्ञित श्रीम विवास श्रीम विवास श्रीम तिल् माना माना विवास स्थाप स्थाप विवास स्थाप स

রাজা ক্লাডারের রাজ্যভার প্রার। হেন্মতে কতকাল হয় অবসান। পূরে রাজ त्रसूत्राम रहेन निर्माम ॥ विषम विकात अब माँडी निष-रीन। मुक्त आपि माय छाटर अकानित जिसे। कड करि वादक ताका मिल वर्ष्यम । त्य या होत्र उद्दि श्रास धार्यक क्षांत्र ॥ स्रामन रहेटल काल दल कि कि विद्वा नकटल कारलत वन এर्वं । क्रानित्व ।। बहिल त्राक्ष रेप्न गंश होश কার। ক্লক্ত করে তার বিহিত সংকার।। চাদন কা-র্ভেচ্ছেতা জালাইয়া তার। পরে আন্ধ্রণীতি করে যেবপ वावशत।। त्मानात त्मात्र कटत महस्त्रभार देशानात्रत्या ভূশকত কে করেবাখান। কাঙ্গালী বিদায় করে পিটাইয়া टिंग । नश्दत् नशद्त देश्य महीक्रमद्ताल ॥ खाकर्प स्मा-देत मान पूर्टिक रूखा भान। द्वापि नम् नम्में बेटन केतर. अलान ॥ अने यन क्लिन स्नोनिक काफि कानी। नर्नद्वह অব্যাপক পত্র পারে আসি।। মনোরম তা নিবার করিমী विनाम । शरतरा द्वीलिक करत क्रकान मोत्र । कृत्वपञ्च প্রম রাজা করে আর্মেজন। মাসাবধি ভাতিজনে করান ভোজন।। পরেতে আপনি কৃষ্ণ উৎস্কৃষ্ণ ভারিয়া। ব্রাজা ক্ষে কৈরে পিত বিংহারনে গিয়া। প্রস্থ পালে এই

বিচারে পৃথিত ৷ আপুনিও পৃথিত পৃথিত সভা কিচ। वर्सत गरिए ताका ना कटर कथन। निष्डित भागन जुभ ভ্রম্পর শ্মন।। গুণবোদ্ধা অদিতীয় এই বস্ত্সরে। যজ দ্দ পূজা রাজা অবিরহ করে।। শাসুনে গো ভাষ জল পিয়ে একটাই। গুণের সাগর রাজা হেন আর নাই ।: পাত্র মিত্র ভ্রুগণে সবে বুদ্ধিমান। নির্কোধ হইলে তার पछ इस প्रांग। कानिमाने वीटग्यंत कविष्य भात। ভারত অসিত নাথ পঞ্চরত্ব হাঁর।। পুর্কেতে বিক্রমা-দিত্য নবরত্ন যেন। কুঞ্চন্দ্রের পঞ্চরত্ন তাহার সমান।। মহাপুরে মহাবাদ্ধ সূদা করে বাস। পণ্ডিত হইলে পাশ্ব भगाई ऐसीमा। नावा भाज अधायन द्य मर्वकन। नाज উক্তি दिना कथा ना करह ताजन ॥ धामनानि लारक यथ সদা কাল গায়। বলয়ে এমন রাজা না দেখিকোথায়।। এই ৰূপেকত কাল গতহয় পরে। আনিয়া পণ্ডিত এক নদীয়া নগরে।। জিনিয়া অনেক দেশ শেষ রাজপাঠে। আসিয়া স-দান কৰে রাজার নিকটে।। শুনিতারে আদিবাবে দিলেন बारमग। कि रुकु बाहेरन छड्ड जिड्डारमन भाषा। ११-ভিত কহিছে আমি জাবিড় নিবাসী। বিচারের আশা করি তবস্থানে আসি।। অঙ্গ বঙ্গ কলিঙ্গ সৌরাষ্ট্র কাঞ্ছি शाहा। मशन मथ्रहा सूता कानी खक आहा। इतिहात কাংকল হেংলাজ জলামুখী। নিম্পারি বিশ্বগিরি কেতকী (क मथी।। পত्रिका क्लात आत मानाक्षि शादन। अभी হয়। আসিয়াছি তোমার সদনে।। শুনি রাজা সমাদ্র करतन विखत । नित्रव रहेन गुन छनि छोत छत्।। शकीत गार्गत गम वहन क्षकांग। होजात मुखाक्शाद्व मटन भात ত্রাস।। প্রকারে জিনিল সভা আর সভাজন। অপরাজ रदत जूभ जादद मदन मन॥ कहिएलन পण्डिएकदत बामान सुरिट । विठात स्ट्रेंटव कसा ट्यामात महिट्य ॥ এट्यक क হিল যদি রাজ্যের উশার। তুই হুরে বালায় চলিল বিশা বর।। পারিষ্ট রেয়ে রাজা ভাবে অনিবার। কিরুপে হইর জয়ী করিয়া বিচার।। জীবের সমান জীব বিজের নন্দন। কার লাগ্য জিনে আর না দেখি এমন ॥ প্রীশ্যামাচরও বলে শুনহে ভূপতি। গোপাল নহিলে ইথে নাহি অব্যা-ছতি।।

গোপাল ভাঁড়ের রাজসভায় গমনা

প্রার। বাসায আসিয়া ভিত বসিল তথ্ন। এংনৈতে নরপতি অতি মৌন মন।। কেমনে রহিবে মান কে করিবে ত্রাণ। বলে এতদিনে নই হইল গুমানু 🗓 এই শুলে 🗗 দিবস রজনী প্রভাতে। পুনক্ আসিল দ্বিজ রাজার মভাতে।। দেখিয়া তাহারে সবে হয় সৌন মন। ধরপতি দেখিয়া ্যমন নাগগণ।। পণ্ডিত কহিছে হাবি ওছে মণীপান। বিচার করিতে রই উপযুক্ত কাপ ৷ ভান্য ধলে জন্য ফিরে যাওছে ধানায়। কল্য ২ইবে ভিচার **আমার সভা**য়॥ পাঁওত কহিছে ভাল কলা জানা যাবে। হারিলে হইব দাস शतात्न कि श्रव।। ताला वर्ष साकः मिव लागि দান। শুনি হর্ষিতে কবি বাসস্তানে মান।। এখানে বিবাদ ভাবে হুক্তচন্দ্র রায়। কি বাপেতে এই বার মান রক্ষা পার।। হেনকালে গোপাল আসিল। কে শভার। গললগ্র क्रुवरात्म मन्द्रार्थ निष्काता हेत्रत्व भारत मन्न अहोत्क श्रेगेंडि। जान मेम्म दकान कथा भी करर जूनकि मार्द्यानीन কৃহিছে রাজা এ কেমন ধারা। আজি কেন সদাসন্দ নিরাবন্দ পারা । রায় বলে কি আর বলিব আমি বাণী। अछिमित्न महे रहेन योहिन श्रमानि॥ कहिन देशेशान कर ব্যু স্থার কেমন। ভুপতি কহিল তারে স্ব বিষরণ 💵

शिमा গোপাল বলে এই যে কারণ। জতি জার দারে क्ति विदाप त्राजन ॥ जोका प्रश् विहेक्यते जिनिव গাংহর। তোমার দানের দান আমারে কে পারে॥ রাজা বলে পাগলের প্রায় কহ কথা। কিনে ভূমি জয়ী হবে খেরে মোর মাথা।। গোপাল কহিছে রাজা বৃদ্ধি বলবান। কি করে পণ্ডিতে বুদ্ধি সারদা সমান।। শুনিয় প্রশংসা রাজা করেন তাহার। তোমার সমান বন্ধু কে व्यारह कामात ॥ सूरथत नकरन राजी कुःरथ माज कृमि ! বিনা মূল্যে তব স্থানে বিক্রীত হৈ আমি।। গোপাল কহিছে ভূপে কিন্ধরে এমন। কহিছ বচন ভূমি কিসের কারণ।। এই আমি চলিলাম জিনিতে পণ্ডিত। এথনি সংবাদ পাৰে আসিব ছবিত।। এতবলি গোপাল চলিল নিজবাস। দ্বিজ শ্যাম কহে পরে কৌতুক বিলাস।;

গোপালের পণ্ডিতের বাসায় গমন।

পরার। ঘরে গিয়া চিম্থাকরি মনেতে রসাল। ধরিল ছিজের বেশ সুবেশ গোপাল।। গলে উপবীত মোটা দীর্ঘ কোঁটা ভালে। পরিধান পট্টবাস করে ক্মভলে।। আর এক দাস ভাঁড় সংহতি লইয়া। চলিল তাহার মাথে তন্পি চাপাইরা।। আপনি খাটের খুরা ভাঙ্গি নিজকরে। गे वज जड़ारेन महे अद्यादि ॥ यद्वीक भूतान कटक कतिरत्र वंज्रत्न । याद्देन रक्षांशान जाँ ज जिल विनामार्स्स ।। বিসিয়া পণ্ডিত করেন ভৈল মর্দ্দন িংক্লকালে গোপালী मिटनम मत्रभम्। कश्नि जूभान मिन बाटत भाष्ट्री । জতগতি যেতে হবে ভোমারে জিনিয়ে॥ সর্ব শাস্তে বিধা রদ শুনিছি আপনি। কেমন বিচার কর যাব তাহা শুনি।। क्लिय माहिक गत्र चार्ट्ड होजनन। होउटकत श्रीय केंद्र

পথ निशीक्षा जामि शिम्ना दर्ग जानि महागन हमें। भड़ा इत्त তবে তাशामित जृति रम्। तामा क्षण्याम निजा নিতা পাঠ চাই। বেদীন্ত করিল অন্তঃ এমনি পড়াই।। পণ্ডিত কহিছে তুমি কোন শাস্ত্র জার্ন। গোপাল কহিছে कामि जकरण अयोग।। ठाति दिन एक पक् मत्रनेन चात्। চতুদ্দ লাক্ত ধর্ম মুখাতো আমার।। জন্তাদল পুরাণোগ পুরাণ কে ধরে। চতুঃষ্ঠী তন্ত্রমন্ত্র ক্রিজাযন্ত্র পরে।। বড়াই मा कृति श्विक मा जाविश एवं। विष्ठांत्र शहेल शहत का-निट्व विद्नाव ॥ छनित्र। ভাविटह खिक এই मে कार्तन । वेड्ह পণ্ডিত বলে পাঠালে। রাজন।। গোপাল কহিছে দ্বিজ क्तरह विठात । विज करर करनक विजय कत आता ।। मर्मन করেছি তৈল নাহি করি স্থান। কেমনে বিচার বল পাইব কল্যাৰ।। গোপাল কহিছে তৈল তিলকো সম্ভূবে। নতৈল পাৰ্যপং তৈলং **শ্ৰুতিতে প্ৰভবে।। শুনি দ্বিজ ব**লে প্ৰশ্ন অত্যে কল তুনি। পুরিব অবশ্য যাহা জ্ঞানে পাই জামি।। ओमापं करिए पिक **परेवा**त भाव। करिएन छारात श्रद्ध উহা কে পায়॥

কমল কুড়ুয়োদ্ধনঃ উভয়োল্ট পরস্পরং। শুচাশুনা বভৎ ভেদং নিশ্চিতং ক্রহি যে বৃধ।।

ত্রিপদী। গোপাল কহিছে শুন, হরে অতি বিচক্ষণ, আসার প্রশ্নের বিবরণ। বারিকুন্ত প্রশোবে, উভরেড দ্বন্দ করে, বলি শুন ভাহার কারণ।। কল্পনী জলেরে কর, ্ট অতি দুরাশর, ভোর তরে মোর অপমান। আনি দ্বনি কাটি মোরে, কুমারে মন্তকে করে, জানে ঘরে হয়ে সিবধান।। এটো হাঁজি সমিভারে, পণে মোরে দম করে, শেবে এসে বাজারে সাজার। কি হিন্দু কি মসলমান, যে

ना देश्टल शहर होशि यात्र शून किदत्र विक शहर जारन क्रिक मित्रा। उथम देशक श्रद्भा, कई नाहि धरत लाय, व्यथमान जामात लांगिया।। जूर त्यर नशीशल, प्रत्य ह त्व प्रम किलि वर्ष **अंशिविज पूरे वीति। कल कर्टर पू**र्व पूर्वन ভুই মাটি মৃতাস্থর, তোর তরে এছঃখ আমারি॥ আমি অপে! নারায়ণ, জীবের হই জীবন, আমা বিনা তৃপ্ত কোন জন। দেখ এক সরোবরে, মান করে পরম্পরে, নানা জাতি অভেন্য যবন।। আমাতে উচ্ছিষ্ট ফেলে, পুনঃ দেখ সেই জলে, দ্বিজগণ করিছে তর্পণ। হেন শুদ্ধ नव जामि, महा जशविक दुमि, नक्रद्रशादय क्षमाम ज्ञामा। অপবিত্র যদি থাকে, জলে ধৌত করে তাকে, আমাবিনা কে আছে এমন। তুইতো অধম মাটি, পোড়ালে না হয় খাটি, ধিক তোরে ওরে জভাজন।। এইরপে ছুই জনে, বাড়ে দ্বন্দ, সর্বকিণে,কেবা শুদ্ধ কেবা অপবিত্র। ক্রতগতি কং ভুনি, শুনির। যাইব আমি, পড়াইতে আপনার ছাত্র।। শুনে হয় চমৎকার, হিতে বিপরীত তার, কারে ভাল मन्म करत कारत। यनि शाक मन्म इत्र, श्रुक्त कथा मिथा। नश्च वाह्रि विकु काटन अगश्माद्य ॥ देश कीवि विकाकृतनः গোপালের প্রতি বলে, এইক্ষণে যাও নিকেতন। এখন ममस नम्र, सान शुका नाहि रम्र, देवकारमण्ड कतिव शूर्वन ।। भाभान शनिया भेटन, इहिटनन मंदर्गाभटन, दहला विक ভাবে मरन मन। कान भारत नाहि भान, अयुक्ति घडेना দায়, কিনে আমি করিব পূরণ।। পরেতে পাইব लाज, এই कारन माहि काय, ठल जाहे याहे निज त्मरन । এত বলি নিজগণ, লইয়া চলে ভ্রাহ্মাণ, গোপাল দেখিয়া তাহা হাঁদো॥ আসিয়া রাজারে কয়, ভয় ভাজ মহাশম, পরাজয় रहेल সেজন। ছাড়িয়া নদীয়া পুর্রদেল সে অলেক बैंक ब्रांको बटन किटमंत्र कांत्रम ॥ दर्भाशान विद्याय बदन

শ্রুনে প্রামংকো সকলে। রাজ। দিল মুক্তার হার। দিজ শ্যাম করে ভূপে, যেন তেন কোন কণে, মান রহা হইল এবার।।

রাজার সহিত জহরির মিলন।

প্রার। এক দিন মাহারাজা বসিরা সভার। পাত্র মিত্র ভি তাবৰ্গ রয়ে**ছে তথায়।। হেনকালে তথায় এক জহ**রি न्द्रेजन । जानिया ताकात काटन विवादमा ॥ काथीतनिवानि তার নাম সংহারাম। বছ মুলা লোটু বিকি কিনি তার काम।। शनात्र क्रफाक माना ভाटन वर्षक्य। क्रिशा रुतिन रत्र ताका क्रकम्प्रा। कटक ताका वनदम्बि किया স্থাচার। কি কারণ আগমন সভাতে আমার॥ অহরি रलत्त्र कामि कृति छश्तित । विक**ी कार्य धरम माम इस्**दर হাজির।। রাজা বলে যদি তব লোষ্ট্র থাকে ভাল। তবে তে। লইব ভাল হীরার প্রবাস । শুনিরা রাজার আক্রা সে-জন স্বরিত। বাহির করমে হীরা স্বতি সচকিত॥ নৃপতি कारका मूला यथार्थ इंशात । या इस मिन्डस कर व्याखार জামার। জহরি বলিল মূল্য পঞ্চাল হাজার। শুনিয়া करेंन क्लांध स्ट्रांध ताकात है ताका बदल वालातित मिथा। कथा धर्मा। यथार्थ करितन जात्ह इम्र कि अधर्म।। अर्जि ্ৰলিছে কেন হেন আজা প্ৰস্থা রাজাবলে অসকত নহা ্নহে কছু॥ তোমার পাধর হইতে সওয়া অস্কুভব। দশ সংস্তে নইসাহে জার কিবা কব।। ভাষাতে এতেক কর ন্তথাৰে চাতুরি। তোমাহেন কত ঠক দেৰেছি জহরি॥ ब्राक्तीत रहन श्रमि कर्बि छथन। श्रटम रख निक्री क्टर दि-नंत्र बहम ॥ अन अन ठोकूत मारमत मिरवहन । दक्यम छा-्यात्रं शेता कतिवं पर्यत्।। शति त्रांखां व्यापनात शैता बाहि करत । रमथ रमिश वरण मिन सर्तिष्ठ करत ॥ अर्रेति

*হরির। **অর্চ্চ** না করিছে তেঁহ থণ্ড পরশুর।। এক কুশা-गतन रित शांन करत शरत। जात अक कूगांमन तार्थ ज्या-कादत ॥ किञ्जानि कथन यनि जादन कोने जन। यनिवाह তরে তার রাখিল ভাসন।। হেনকালে বাণেশ্বর তথা লেপনীত। দেখিয়া আক্ষণ তেঁহ কহিছে ছরিত।। ইদংকু শাসন বলে অঙ্গুলী কেলায়। বৈদ এই অঞ্ভৱ তাগতে ্রানার। শুনিরা পশ্তিত তারে কহেন বচন। ইদংকুশাসনং বীলে করিল গমন।। রাজার সহিত নাহি করে সভাষণ। ্ক্রাধ মনে নিকেতনে গেলেন ব্রাহ্মণ।। ইহার ভাবার্ধ েনি বুঝিতে নারেন।গুণ বোদ্ধা মহারাজা ইঙ্গিতে বু-त्यत ॥ इम्रकूनामनः भम विथा इशनम् । कूनामन थाकितन द्यास साचि इग्ना खाकान वर्णत खड़ कारन क्रकन। না কৈল প্রণাম বেটা কিসের পুজন। উঠিয়া मা অভাধন। इक्तरत करत। टिकात्व कुनामम शांनि फिल बारत।। এতভাবি ক্রোধে রাজা <u>হৈল ছতাশন। ইঞ্ছিত</u> করিয়া ्र ८७ एउइन वहन ॥ वृक्षियां ताजात जाव जानि जमकात। টেকারমরে লয়ে যার গলেধরে তার।। মুড়ারে মস্তক ভারে গাধাতে চড়ায়। ভ্রমণ করান দেশে পাছকা ালার।। দেখে বাণেশ্বর হয় অতি মন্তমন। রাজারে প্র-শংস। করে আসির। তথন।। লুঠেনিল জহরির হাছিল कल। क्षिणम कतिहरू कर्म अञ्चलित कल।।

হরিযোবের কথা।

প্রায়। গুণবোদ্ধা দোব বোদ্ধা রসময় রলে। কহিতে পাতিলে কথা ঋদ্ধি পায় লোবে।। কহির উত্তর কিছু না করিল আর। তাহাতে বাড়িল ক্রোধ স্থবোধ রাজার।। ইনি সমউত্তর করে কিয়া গালি দেয়। উত্তর পাইলে রাজা সভোষ ভাহার।। যেইনর নিরুত্তর হরতো হস্করে। প্রস্তর দেখে করে নিরীকণ। মনেই দেবে তার তানে জন্তু-कर। कटनक निमास करह खन महादाक। महन् भूखाँब शैतात नाहि काल।। शिन ताल वटन दक्त हैशत किः লোব। তোমার প্রস্তর নাকি একতে স্বরস।। জংরি সংলাম রাজা মভা তাজাসম। কথন না হয় ত্লা সর জায় তম । ताका रहन दम दक्रम कह विवत्न । अमि कत्रद्यादय अहत् कटत निरवनन।। सामात अरत शाका निर्दर्भाय अरहेत्। তোমার হীরাম আহে কীটের গল্পর।। ভিতরে কোঁকর আছে উপরে উত্তম। এইতে। প্রস্তর তিব কিবল কুত্রিম।। তবে হর প্রত্যর যদাপি ভাঙ্গা যার। শুনি রাজ। আঞা দিল ভাক্সিতে তাহায়।। লাইর উপরে ব্রাণে উভন্ন জহর। লোহার মুকার মারে তাহার উপর ॥ ফাঁপা ছিল রাজার প্রস্তর চুর্নহয়। নীরাট পাথর লাইর ভিতরেতে যায়।। शत) इत्थे कश्ति তো विनद्ध वंहम। नश्रतम (मिशाल) লোষ্ট্র চিনি ততক্ষণ। রাজা বলে তুষ্ট্রই তব গুণপণে। **ठित्रनिन तर जूमि मन मनिशादेग। यथेन एर अदराजन** इहेरत राभटन। इक्टिंड कहिरत छूमि जामारत शांभटन॥ ক্ষংরির বক্ত বিদ্যা ছিল আগানেতে। মজিল দোহার মন দোহার সহিতে।। এক <u>স্থানে মান প</u>ূজা কাহার শ্রম। গোপনে ছজনে হয় কথোপ কথন॥ । এইমত ছয়মান হয় विदर्भे । जिल जनर्भात भटन तीका विद्यानि ॥ वाक्रिकी क्षिक ध्रिम महाद्राक महन । खगरवाहा सहस्रम मारमक्षमिक्ररम् ॥ श्रीभागम् क्रश्टिष्ट् (अस् अधिक द्य शास्त्र । मास्था विटक्षम जाई घटें मेर दादम ।

ক্রিক্তি জহরি শাসন।

পরার। এক দিন মহারাজ রাখ করি পরে। ইউদেবে পুজ করে বসিয়া সন্দিরে।। অলহার জন্ম বৈসে ভারে

বারেক বদন তার ভূপতি না হেরে। দানেতে অভুল রা প্র मिशिंग न्यान । स्रक्षण कृतिल कथा त्म श्राप्त कलाति । হয় হন্তি অভিরণ শিরোপা তাহারে। কথায় উত্তর মেক্ ভাল দিতে পারে॥ ছট্টের দম্ম করে শিষ্টের পালন भीरकत नाहिक तारथ ताका वर्डधन ॥ **मक्न** खरनत मिस्तु 'यज विज्ञाक । कर्नजाति कलक्कण निमांक । कार्य ॥ यम् পি অবণ করে রাজা গুণা কর। অমুকের গাবি ধান্য জান মাই বিশুর।। কোন মতে সরকারে দাখিল করিতে। সর্কাশণ অস্বেষণ করে রাজা চিতে।। ছল অনেষণ করে তিলে পাড়ে তাল। দেয়ান নায়েব তারা বাড়ায় জঞ্জাল।। বিত্ত যদি সেই জন কথাকহে ভাল। আগে তারে ধনদান করেম ছুপাল।। তাহার প্রমাণ শুন বাস সেই প্রাম। জা ভিতে গোয়ালাভার হরিঘোষ নাম।। ইইবে হাজার গাভি वलम विख्या काम जन करियाटक बाजाब क्षांकत ॥ रूकि त्राका धकनिन करित्वन छात्त। ভान मधि कना কিছু দিবেরে আমারে॥ শুনিয়া গোপের স্কুত হয়ে হর-ষিত। ছক্ষ অনেষণে যান পাঠাতে ছরিত।। যে গাভির গঞ্চনে অত্রে ছুশ্বছিল। খেড়ো হয়ে ক্রমে তার এক পোরা হৈল।। এ হেন ছমের ছম্ম করি অয়েষণ। সাঁজা मिमाइया पि शांजिन मिक्रम ॥ श्रीत मिहे पि नित्र एम्स রাজ্যেশ্বরে। ভেক্তিন সময় দুধি জ্যাহোরণ করে।। কোন দোষ দধির ভুপতি নাহি পায়। কহিতে অকথ্য কথা কথন র্থার। রাজা বলে ওরে বেটা গোয়ালার সূত। তোর मि थिट्रा जामि स्ट्राइ विष्मु छ ।। किन्नामि कि मिनास्ट्रा দ্ধি, দিলি যোরে। চুলকায় বদন সদা ক্লিকহিব ভোৱে।। ওলকচু কিবা দধি বিধের ভাবণী। মারিতে আমারে विषे मिन जानि॥ कि जानि कि मिनि इत्थ कमन व्हेल। थाईद्रा ट्यामान पथि तुकि आन ताल।। जदन

্রাচরি এমন করম ি একবর্ধ হৈছু ভোর নাহিক त्रम ।। अन्दत्रः क्लिंगिललन् सामाद् क्लांस् ॥ घत वाणि ०८२७।त्र नुद्रके नदत्र भात्र । अदन कत्रद्रादक द्वाप् पटत निट्यमने। निम्म्य कोनिय हम करत्र ताक्रम ॥ काम বেটা কাণ ভারি করেছে রাজার। তাহার কারণ মোরে হেন ব্যাবহার।। হরি বলে শুন নূপ করি নিবেদন। মুখের क्रीं नरह मधित कार्र ॥ मूल बहुन कुड़े देवहै। उथानि ना भारत। पशिर्ण हुनकात्र यूथं आर्टन दक्ताकारन ॥ मुश्नात करिएए त्यांत्र अनेदर कांत्रमा आयात पृरहरू काटक कटनक (शाधन।। कोन निम महाताक १२८४ छटन-हिला तम्हे तम कातन अन् सून हुन्काहितन।। अधिक দেখিয়া গাভি বলদের্গণ। তেকারণ ঠাকুরের চুক্কাছে दमना एटन जला जन कटत यहा हाजा तद् । कहे हटम नृश তারে দিলেন বিভব।। नूপতির কথায় থেবা দেয় প্রত্যু-खत्। मशक्षे स्म नृषे छाशत छेलत्।। क्ट्रेंबाटम शानि যদি উত্তর সে হয়। তাহাতে অধিক জুট রাজা মহাশর।। এইৰপ এক জনে কহে জনেকেরে। ক্টুজাবে পরিভোবে দেই মূপবরে ।। তাহার বিশেষ বিশ্বুক্তি বিবরণ। দেবলে स्था क्ष्मा कतिन त्रांबन्। त्रांबन्त्रक हत्स्वत कथा অপুর্ব প্রকাশ। কৌতুকে কহিছে শ্যাম কোতুক বিকাস ।।

रनरक उक्तरनत गरिक तामात करथा शक्यम् ।

আপন বাটাতে পুনঃ করেন গমন।। হেনকালে রাজার দেবল পুরোহিত। শালগ্রাম শিলালরে যাইছে ছরিত।। যাইতে দৈবের দেখি দিশা তার পার্ম। ঠাকুর বাজিয়। পুর্চে বিলি তথায়।। নামাবলী কোশা কুশী সহ নারাম্যণ। পুঠেরাখি ছিল্ল করে স্বসলবর্ত্তন। এহেন সমর তারে হেরে নুপবরে। জরুণ জিনিয়া আঁথি তারে চুট্টিকরে।। কোপ চুটে চাহি ভূপ করেন গমন। দেখিয়া ছিজের পোর স্থায় জীবন।। জাকাশ পাতাল ছিল ভাবিছে সাগর। উঠিল গুহেরর মল মাথার উপর।। হার প্রাণ্যাবে নহে স্করি হরণ। বিধাতার বাজি আজি কে করে মোচন।। সাত পাঁচ ছিল্লকত ভাবে মনে মলে। হার প্রাণ্যাবে লাজপুত আইল সন্নিধানে।। হাত পা বাজিয়া তারে লয় চারিবীর। মহাশায়ের পড়ো যেন ছজুরে গজীর।। লইয়া রাজার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার বাজ কন স্বর্ত্তন স্থামার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার বাজ কন স্বর্ত্তন স্থামার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার বাজার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার স্থানে করে সমর্পণ। প্রীশাম্যাকার স্থানে করে সমর্পণ।

(परवादक कूर्राणिय खर जना।

ত্রিপদী। রাজাবলে ওরেবেটা, হেন বৃদ্ধি তোরে কেটা, দিরাছেরে ছাই দুরাচার। ইইমে বিজের হতে, কর্ম চঞালেরমত, আজি তার দিব প্রতিকার।। ধর্ম শাস্ত্রে বিশ্ব জানি, করিলাম তোরে জানি, আপনার দেবল পুজরি। ছি ছি ধিক ছুই হেনু, না দেখি নহে অবণ, হারে ওরে নই এইা চারি।। বিনা শ্বানে নারায়ণ, নাহি করে পরশন, ছুই একি করিলি কুকর্ম। দেখে তোর পাপ মুখ,জোখেতে কাপিছে বৃক, শুনির। জলাদে বৃকে মর্মা। ধরেতার ছুইকরে, তথনি বন্ধন করে, লমে থার থেনিকে মুলান। জিশামাচরণ ভাগে, কথা যে কহিতে জানে, কে বনিতে পারে ভার প্রাণ্।।

পুর্বারির রাজার প্রতি প্রভাতর।

भशात । शिष्करत विजयत करत निरंदन्त । त्माशह था-कुत किছू क्रूमे बैंग ॥ ताजा बटन कूनामति कि वनिर्वि সার। তোরে দেখে কোধ মম বাড়িছে অপার। ডিজ ক্য মহাশর অন্থের উপর। আন্থোরার হয়ে যবেন্দ্রেণ-नश्त ॥ अश्र शृदर्ध मानाञ्चादन करतन वर्षन । मनाई जारीत পরে আপনা আসন।। ঐ কালে দিশা যদি তেকে তর रत्र। त्म कात्म कि शृत्कृंद्रिक माथ मश्लाह ।। तांक वर्ति ष्टियत जुलमा किया हैटथ । विक वटल महोताक तुसनिक विट्ड ।। खोक्तन **८१८वन्न धाए। विट्निय** ८१वन । भेरस वि-करम दश भिनाटका अन्त्र ॥ इनास्त्र गाईएक स्ट्रेटन भिना **बाटर। अहे जूबकटम देनिट्य अस्तरमट्रम बाटर।। अ**ज्याव দেবতাব ঘোড়াতো ত্রাহ্মণ। বিচার করিয়া দেখ পণ্ডিড क्रीक्रम ।। इटङ यपि क्राम मटङ तदर त्मात ब्रुष्टि । उटवङ शहित मध निहत्त मा घाषि॥ जन करू द्वार्त्या ते ना मायदत्र मारम । स्वयं प्रयोग किम शिष्ट्र अभारम ॥ शौ-मित्र। करहम ताका छन मजाजन्। कि वृत्र विना पहे विष्ठेल खिला। श्वनिहा त्रकान्य कट्टन कट्टेन राजापुनि । नून टोटर मान करेत जर्थनि अभनि॥ श्रेनिश्टर विजयत गाँव निक बात । दिक माम बदल वह दियार छन्।।

> রাজা দ্বিজগণকে নবাবের ক্লিকট প্রেরণ ও সনেতে বিধান

श्रितात । এक मिम नवांच कश्नि मृश्यतत । श्रीठाटन श्र-छिछ शंग कामात इक्ट्रत ॥ विद्याचा भीतवृद्धि ज्यांचित्य शांतक । खर्मा श्रीठाटन मिटन मिटे मय कांका ॥ छटनतांचा बहुरत मा काटन कांत्र । स्तर्थ स्ट्रिक चिक्का कटत निम

প্রণ ।। পাঠনি, মুরশিদাবাদে পণ্ডিতের গণ। দবাব সংবাদ भारम भूवक्छि मन।। आश्रान आंत्रिमा वरम्मास विज-बारव । बीजीह बजीहा गटब कतिहा युक्त ॥ विक्रश्न बटन कि (इंडू गें कि अंशना । अशान बानिएं बाका कतिएक ध्यालमा ।। नवान करिएक गरेट भाषिक कामता । कर दर জ্যোতিৰে কেৰো আছ তংগরা।। ভূমিকম্প কৰে হৰে क्तरम अन्न। निहत्न विक्रिया मतन कतित् वस्त ॥ स्नि য়াছি গ্রহ । দি রুফি বন্যাগণ। এ সকল জ্যোতিষে তো-মরা দৰে গ্রা। জামার যে এই প্রশ্ন করিবে পুরণ।। নিছ-রেতে দিব রাজ্য আরে বহুধন।। যদি নাহি পার কেহ ইহা গুণিবারে। খায়াইব ধীন্য সবে রাখি কারাগারে॥ শুনিরা পাণ্ডত গণের উড়িল পরাণ। হরিষে বিদাদ হৈন ধতে নড়ে প্রাণ।। কারসাধা ভুমিকম্প করিবে গণন। জ্যোতিযে সন্ধান নাহি পাবে কোন জন।। নিশ্য জা-নিল সবে নিকট মূরণ। প্রাণের কারণ তারা করিছে রো-দন।। নবাব কহিছে ভিজ ভাবহ উপায়। পার কি না পার তাহ কহতো আমায়। দ্বিজ্পণ বলে স্বর্গবর্গ মোর। গুণি। পাতাল বর্গের কথা কিছুই না জানি।। শুনি ক্লোধে काशानित्वत कांश्रद्ध भतीत। हिन्निट्ट् असोन्हात इ-जूदत्र शिकत्।। ४८व२ विक्तनत्न त्रांट्य कातानादत्। शहर পার বেড়ি দড়ি যেন বাজে চোরে।। করেন রাখিয়া ধান্য क्तान ज्ञाजन। हुई नित्न विजन्ति आर्किक निधन।। **এখানে সমাদ পায় सूर्याध दाङ्ग। ভাবে बन्धर्य देश्य** আমার কারণ।।

গোপালকে পরিচয় দেওন।

পরার। আমি যদি নাপাঁঠাই এতেক পণ্ডিত। ওবে কেন ঘটবেক ছেন বিপরীত।। নিশ্চয় আমার লাগি এক क्ला इस् बामात कीवत्न जात नाहि कटलाहत्।। अल विल चत्नुवृद्धा त्रदश्चित्व । नहाह वित्रंग मन वहत्न नि-यत्र ।। कि केतिव कि हहेद्द कि द्वाद्ध अहात्र । दश्कादल भागान हन मजात्र कानात्र ॥ प्रश्चित्र। कोकुक ताका तत्र जार्थामुख । भागान कहित्ह तात्र जाकि किया इश्चे ॥ कर मज तम कक करत नृश्मादम । जूबामन मा मकन परक्षात्र करम ॥ स्थात ताका यत्न त्यात्र जान नाहि नार्था । अत-शत स्थात हर्षात्र जार्था । एस निहास कर्षा अनिहा भागा स्थात क्रियादक करह कथा या हत्र त्रांना। करह महानम जूमि यूदक दश्म्भित । यन किम्जावना ज्य हर्षादक केद शिला ॥ स्थान ताका मितिया वर्णम ज्येन । भनात्र खेदस्त मामि करहन कात्र ॥

खिरक्ष विराग प्रशिव विद्या ज्या जिल्ला विराग प्रशिव विद्या विराग प्रशिव विद्या ज्या जिल्ला विद्या विद्या का विद्या विद्या का विद्या का विद्या का विद्या का विद्या का विद्या का विद्या विद्या का विद्या विद्य

ত্রিপদী। দক্ষিণ দৈশেতে স্থিতি, প্রতাপরতা আখ্যাতি। । त्रश्रु कि कि ने स्रोदान । भूखनम अवाशादन, कार्क तद कुकूरता, शांब मिल गटव क्रानदान । क्रेहे शांकेतानी जात बरका वक कुमात, खनाजरन वक्षे महारा । नि পদ সে নগরে, কৈহ নাহি আঁটে তারে, মন্ত্রী তার বুল্লে হুই স্পতি।। তাহার মন্ত্রণা তরে, সদা স্থক রাজ্যেখনে, রাজ্য মন্ত্রিগণ বশীভূত। রাজা তার আঞ্চা বিনে, কার কথ নাহি শুনে, মন্ত্রি তার তেমুনি সুহত।। একদিন দৈ লোবে, বর্গিনিয়া সেই লেনে, মহামার করিল বিশুর वाजात नामस यङ, नकल कतिल २७, भारत भनाहेल नृष वत ॥ मञ्जिलात निम्लीति, साहैन म स्निष्टति, ताज শোকে রাজার বিষাদ। রাজা বলে মন্ত্রিবল, কেমতে श्टब कुनान, मा कशिरन देशन श्रमान ॥ श्वनिमञ्जि जादत कन्न महाद्राटेश्च मश्मात्र, हल याहे गथा तिश्रुतंत्र। आरंग नित मना जादन, किছू जूमि माशि नदन, भारत मिव প্रक्रिक তায়।। করিবে স্থির মন্ত্রণা, দ্রতহল ছুই জনা, উপনী वर्गी ते अरमर्ग। याहेका ताजात होरत, व ताजा थेवः করে, যাইবারে আছে। হয় শেষে॥ শুনি আনন্দিত হত निक मञ्जि नदक नदब, महोताक हो जित्र नजाते। एएटच ट রাজার সভা, বিশ্বজন মনোলোভা, বুঝি হেন না আটে काथात्र।। दार्थिका श्रमश्मा कट्टू, यटन धना दम ताजादर ভালনীতি চরিত্র তাহার। অমর ভুবন হেন, সুজনে আত লাজন চারি মন্তি বদিয়া রাজার ।। বুজেতে সাগর প্রায় সভাস্থ ৰত সভার, ভাড়াইরে নারের দেয়ানা কত চে চোপদার, সংখ্যা কে করিবে তার, হাজারং ভূত্যগণ আৰু বহু সৰে বৃদ্ধে ইঞ্জিতে বচন কছে, নাহি সহে বৃদ্ধি উদ্ধনি। প্রকাশকরে: হেরে, কহে পাত্র মৃত্যুররে, বি रिक्क कार्रेटक साथित ।। ना करिए नुभवरत्र महि निक करत, त्य. बर्लाइ त्रांज्य तिनाम त्रांज्य हुन नाम ।
भाषा, स्ट्रेस तिछन जागा, श्रांत मरन र्यु ज्ञांता।
जागा क्रिक क्रन मुण्न ताक्य थन, ज्रुम नाहि पिरम काथ। भाषा स्यक्त १३ जनक ता विना माहि तक्क मा स्ट्रेस काथ। प्राप्त विना माहि तक्क मा स्ट्रेस काथ। प्राप्त विना माहि तक्क जामि, तर क्रिक का महाल काथ जामि, तर क्रिक माल क्रिम जागार विमान माहि का । जितकान क्रिम जाम क्रिम जाम क्रिक माहि का । जितकान क्रिम निम्ह क्रिम क्

প্রতাপরতের মহারাছে রাজীয়।

শাধ্যন । শুনি নমকার, করি প্রেরণ, কি কারণ লাগ্যন । শুনি নমকার, করি প্রেরার, আজার হা হে কারণ । কি কহিব আর, সকলি ভোরার, আজার হা হে প্রেরণ । কি কহিব আর, সকলি ভোরার, আজার হা হে প্রেরণ । কি কহিব আর, করেছে দুর্বন, কালার ঘতেক হবু ।। আর ধন জন, কে করে গণনা, নাতেক নাশিল তারা । করে উপত্রব, কেমলে রহিব, ভেকারণ করি হরা ।। আনিয়া শরণ, সইমু এখন, মাহা কর এনকরে । ভোমার ছ্নুম, করে তারা ছুম, খুম গান্ধান লাহে ।। যে, করে হিনুমান, হৈল তার দান, সে হয় দয়াল তারে । রান্ধিলে রহির নামিরে মন্ধির, কি ছবুম এ দানেরে ।। শুন মুলাচিতে । ইলা উদিতে, জানা দিল নে রাজার । বলে দলিণেতে, গানিক আন্দেন্তে, জনাই দিব ভোষার ।। অন্ধ কোটকর, কিবে মুরাবর হিনুমান আন্দের্য ও জারাবর হিনুমান আন্দ্রার্য । অন্ধ কোটকর, কিবে মুরাবর হিনুমান লাহেছ উলার ।। আনিকার কার্যার বাতে আনিকার বাতে কার্যার । আনিকার কার্যার বাতে উলার ।। আনিকার কার্যার বাতে উলার ।। আনিকার কার্যার বাতে কার্যার । আনিকার কার্যার বাতে কার্যার । আনিকার কার্যার বাতে আনিকার বাতে কার্যার । আনিকার বাতে বাতে বাতার । আনিকার বাতার বাতার নার বাতার কার্যার । আনিকার বাতার নার বাতার বাতার নার ব

खोनि, शांति मार्ग उत्त। रेलन तीका छात, विक स्वित छात, श्रुद्सित खिकि शदा। महि तीका खात, व्यक्ति शतिवाद, महनारत श्रुती करता। खात नाना मङ, लहेंची माठ, लक्तिक तारकाबर्द्द ॥ अभीत् वर्गाठ, धनिष्ठेड অতি, কর পায় বছতর। মন্ত্রি নানাবপৈ,বাডাইছে ছুলে নত্রীবাল গুণাকর। পৈয়ে মুদ্রাগণ, মন্ত্রী বিচক্ষণ, করে সূজন গড় ৷ কিবা পরিপাটি, মটি ঢাকা বাটী, শিশা शेखदत पृष्।। ताद्ये शेष्ठं बदत, वाक्रम अनुएत, जानाक्ष्मे कामान। लक्द कोंब, निठार ভाक, कामांब कट শাল।। যত টাফা পায়, দৈনোরে থাওয়ায়, দেখিয়া কা ताबन। अन मञ्जीतांक, धिक एवं कार्य, धटक नाम क्म।। शिन मञ्जी क्य, जामात कि ज्य, सरब ड्री রাজ্যভূঞ্ । খাওপর আর, নানাত্রখ কর,দান দেয় পুঞ্জ ? याश हेक्का हर्रेंदर, जामारत कहिर्दर, स्ट्रांक तर पूर्णाक মম শাঞ্ছা যাহা, দেখ করি তাহা, তোমা কি মন্দ ভাল अपने ताका कन्न, कर्न महामध, यांश हैक्हा इस उत्। तः তৃংখ আরি, না হয় আমার, বুঝে কর অনুভব । এৰপে জলে, রুহে হাইমনে, পরে কর চাহে ভূপে। শুনি রা वतन, मही काथा (शतन, त्मड जीनि कर नृत्या। उनि रुचन, जार्गनि भेगन, कुँद्र मही उदाकादत। याहेगा भाग, कुँदर अतिनाम, अटएहि विषय कुँद्र ॥ अला ज बिउ, मी इसे नोनिउ, तर दि किमिए कंत्र। वरुक रिया, निर्देशक धतियो, कोश अश्म तंत्रीतत । निकि छ क्रमा, दिख्य बेटन क्रमा, ध्यान दाक्रम क्रमा क्रा वर्श्नरहीं नकन ट्यापटिंह, शहिदेशीय मिर कहा। धण्डर তথা, চলিলেন ঘ্ৰী বিসিয়া আছে নৃপতি। কহি। বাজন, শুনুৰ ঘ্ৰীন, শীল কর্ম বুকতি।। বাজা সকল ক্ষিত্ৰ ক্ষীৰ গুলু মতি কিছেলাল। নিক্সনি ाद्य देनेनार्गन, व्यर्गनन व्ययुक्तां ।। कदत काता मण्हः र्मि इत किन्। (नाना छनी कन कनी। रेमना यान गाएछे। पि छिट्टे स्टिंग, हमत्क मकत्व छनि॥ इस इस्त्री कर, া হর বিদিত। দেখে বিপরীত হয়। বৃদ্ধির দেয়ান, ছিল ারিজন, সকলে গ্রেণের ময়।। পায় ভারা টের, বলে হরে দর, রাজারে জ্রুত জানায়। শুনহে রাজন, কি কর এর সংসং । हिन विवय नाम ॥ करि विवयन, नाहि इस काम, किकमा **রবিলে তুমি। বিদেশী রাজন, নহে ভাল ক্ষর** এরেকে সর্বিছ জামি॥ রিপু যেই অনে, সে পাইল নিকে। কাশ-কোর্য্য লাখে। জারে কার জেলধ, জার্টছ নিয়ন নালত <mark>কৈ করিবে উপরোধে।। তার</mark> সৈন্যগণ, জা আন নুমার तंदर मराष्ट्रहे। कत बाहि निटन, शहहटल हरितान स्वतंत्र , यूमश मे**डे** ।। दुकिया विष्ठांत, त्य हेक्ट्रा दिलामात्र, कत्र 🐰 🔻 ছত। আপনার দোষে, হইত খালালে, ক্ষতি 🤃 টি**ন্তাবুক্ত । বিজ শ্যাম ক**য়- পাইবে প্রতার, নালে। ন্ত্রের ভরে। হতে ছোর্লন, না পাইনে ধন, ভ্রেলন परत करत ।।

প্রতাপরুদ্রের যুদ্ধ

পরার। শুনিয়া রাজন দুক করেন প্রেরণ। বথায় তাপক্ত করেছে আদন।। দুত নিয়া রাজলিপি দিল বিব করে। দেখা মাত্র হিতে মন্ত্রী রাজার ছুজ্বে।। ক্রাণ্ডে কটুভাবে দাসে করেন ভং সন। এখানে আইলে বটা কিনের করিণ।। যাহনিমা নূপে কই ছুকুম আমার। বের ভাষার আরু নাহি অধিকার।। বর্ষর ভাকত বেটা ক্রা রাজা বলে। চোরের মতন ধন লয় বল ছলে।।

.আহি এখানে বসিষা॥ এত বলি দূতেরে বিদায় দিং द्वारम। बाकारत कानाम पूज निम्नो मित्रारम ।। अनि ক্রোধে রাজা বলে মার নিয়া তারে। কিথা বৃদ্ধি লং আন আমার হুজুরে।। আরুল মাঞ্চলে বব রাজ সেন গণ। প্রতাপুরুত্তের গড়েদিল দর্শন ।। বাজায় রণের বাদ काषा बन्न एकि। मर्गका मार्गाग एका अनुवेदिन श्रीकः শুনিয়া সমর শব্দ স্তব্দ হয় রায়। হেনকালে মন্ত্র[ী] কর্নট দ্যভার তথায়।। আজ্ঞা দিল গোলন্দাজে দাগ্যের কামান वर्षाकल दूस्ल युद्ध दश्दत शद्ध काम ॥ व्यत्य व्यत्थ सदः গজে পদাতিই । আপনি করিছে যুদ্ধ মন্ত্রি মহারশ্বি ভরদত্ত যুদ্ধ হয় মরে তাগণন। পুর্বের রাগের রাগ शांबिद्ध विश्वन ॥ इस्त्रभन कांछै। दांत ३६० रनम । दर বভু কভু **করে ধুলার শয়ন।। কে**ছ তেলেপ উল্লেখ্য হ হিতেনা পায়। কেছ বলে বাপ বাণ মরি প্রাণ বঞ্চ প্রেতে পরাস্ত হয় বর্রগিরণণ। ভণ্নদূত গিমাবার্ড। জন্ম তথ্য ।। অপনাৰ শুনি রাজা মলিন বদন। পাত্রগণ প্রা छात वल**रम् वहम ॥ कि क**तिब कि क्लाम किएम बर्एनभूक তে মোৱা আ**মারে কহ তাহার সন্দান** । পারে বলে ধার তুমি এখন এমন। অত্যেতে করিতে যদি ধৃতি বিচক্ষণ তার্যকি হইতে পারে হেন ঘোর দায়। ক্ষিত্র ৯৬ মহারাজ করিব উপায়।। বড়ই কঠিন তারে কেল কারে জয় **(मर्थर मोक्स्टिट रियन) रेश्य श्रद्धां ऋष्य । क्रिड अरदा निह** পতে স্থির কর মন। অবশ্য করিব তাতে একারে বন্ধন। किन्कु এक कथा विन कत्रदर (धामना । अने कथा उटन जा জানে সর্বজনা।। প্রচারিবে সর্বাই শুনহে রাজন। ক হিবে আমার মন্তি ছিল চারিজন।। কোন কর্মে বিজে না क्तिवन एक्शन । सूर्याध श्रेटन महि यक कन जान স্বামার এ চারি বেটা রি করিতে পার্টো এক মন্তি ন পিন কেলিল মোরে কেরে। এমন্ত্রী সম মন্ত্রী যদি কেই
ক্রিলে। তবেতো দেয়ানী তারি রহিব দগলে। অদ্যাবধি না
চুক্রিব ওদেব বদন। আজি হৈতে চারিজন ইইন্ড গোপন।।
ক্রিরিয়া কর্মের সিদ্ধা বদ্ধ করি তারে। পুনশ্চ আসিব নৃপ
বাতামার জ্জুরে।। শুনিয়া আদেশ নৃপ করে চারিজনে।
ক্রিড দিন রহে তারা লুকান্ধে গোপনে।। পরে ক ক্র্যা
ক্রিটে ইয় সর্বর্ম ঠাই: বল্যে জুপতি আর মন্ত্রি কেই কর্মা
ক্রিলাক্তাদের কাছে ঐ ক্যা যায়। শুনিয়া হাস্যার বাজা
ক্রিলাক্তাদের কাছে ঐ ক্যা যায়। শুনিয়া হাস্যার বাজা
ক্রিশাম কৌতুকে ক্ষে ক্রেড্র বিলাক।।

প্রতাপক্তের সহিত চারিজন মন্ত্রীর মিলন। র্গ ত্রিপদী। এথানেতে চারিজন, মুক্তি করে মনে মন ্টিপনীত প্রতাপ ভূজুরে। যহিয়া রাজার দ্বারে, ভূজুরে 🛪 নাবি করে, আজ্ঞা **হয় শেষে** যাইবারে।। এতেক ভুকুম শুনে ক্ষনিল **আদন্দ মনে, চারিজনে** রাদার সাক্ষাতে। গ্রিছ, হাবে দণ্ডবৎ, করে করে প্রণিপাত, যোড় করে রাজার ক্রিকাতে।। বলিছে শুন রাজন, যে কারণ আগমন াহি শুন তার বিবরণ। এতবলি পূর্ক্তিক্তা করিল সকল ্যক্ত, শুনি ভূপ হাসে মনে মন।। আর কহে কুলে শীলে তামারে প্রধান মিলে, আসিয়াছি তাই আশ। করি व्यक्ति तांथ महा करत, उर्क्टा धूर्गि श्रित, नहेरण श्रेद । ওধারি।। তত্তব করি বছতর, বলে দেও জাশা বর আ-শায় পাইলে তব বসি।। শুনি রাজা সত্য করে। কহে রহমম कारत, ज्यानटम शाकर कार्शनिमा। शदत तारे गति जन, ित्रस्थाटक निरुवहनः कति कारम कारव नृभवद्व । वृदन ত্রেমি দরাময়, নিরাশে দিলে আশার মন্ত্রি পাছে বিপরীত करत ॥ श्रमि ताका द्वारिय करा, धनाहि गश्च दस, नागटरकू প্রস্থা লোপ। তোমরা সজোধ মনে, থাক ।
নিকেতনে, হ্যাগ বর মনোগত লোভ।। কহিতে ক্রিলা, বোগেন্দ্র বাইন লোনে গিয়া নেথে আরত চারিজন শোষে পরিচার নিলে মনে ক্রুক্তানে ভূপারা করেন দর্শ নিলা। সালাক ক্রিলারেত ক্য়, এতব উচিত ন ক্রুক্তালা রাজার নিলা। সালাক ক্রিলারেতে ক্য়, এতব উচিত ন ক্রুক্তালা প্রালার নিলা। সালাক বাহা নিলা বলে জালিক। স্ক্রিলার প্রালার নিলার দেওত সভায়।। রাজা বলে জালিক। নিলার লালার বলাইতে যে বল উচিত। স্বালার নিলার গ্রামান নিলার বলাইতে যে বল উচিত। স্বালার নিলার গ্রামান নিলার বলা, এঘটনা প্রাক্তালে, রাজার্ক্তালে। ক্রিলার বলে, এঘটনা প্রাক্তালে, রাজারক্তালে। ক্রিলার স্কর্যা স্কর্মা মান্ত্রের বলে, এঘটনা প্রাক্তালে, রাজারক্তালে নালার বলা নালার বলার নালার নালার বলার নালার বলার নালার নালার নালার বলার নালার নালার বলার নালার নালার

গুতানর দের মালুর সহিত মনোভঙ্গ।

শ্রার । এইবাপে সারিজনে রহিল তথায়। নানা বা নান ভোষে সতত রাজায়। ক্রমের ছয়মাস রহের থামে। বাজিল নিবিক প্রেম নৃপতির সনে ।। রাজার হিত স্থা সেই চারি হলে। একত্র আহারনিদ্রা বসনশ্রম দিবানিশি মন ভক্ষ করয়ে রাজার। যাহাতে মন্ত্রির নাহি দেখে আর ।। কেবল গেলানি বাণী করে অবির দেশখন চক্রে ভগবান ভূতগত।। মনোভক্ষ হয় পবে মই নাহিত। স্কল হইল রিপু রিপু যে স্করিত।। আপনা করে কর্ম নিম্বি লোম দেয়। ছিল্ল ভিল্ল ভাল তাহে হা বাজার।। ভারিকে অলুক্তা দেয় পরে মহীপাল। মা আসিতে মানা শুনরে কোটাল।। এখানে সমাদ নাহি নেন যোগেন্তা। শিবিকারোইণে খেল আইল মহের যাইতে ভারেতে মানা করে ছারিগণ। শুনিয়া বিশ্ হয় মন্ত্রি বিচক্ষণ।। স্পামারে যাইতে মানা একি হ

الهي الله المعالمة ا कि। এত দিনে ताका दुक्ति शंक ছाরখাব।। মনোভঞ तिशास्य द्रमञ्च वाञ्चात । महित्य चामारतः दकन ८१न वश्त ।। मां हिल ताक्य यटव मारि हिल धन। त्म क्रिटल सात वन जाहिल वाजन।। निम्छत्र वृत्तिल मञ्जी देववानाण র! নহিলে এমন বৃদ্ধি কেবা ,লোপ করে।। এত বৃদ্ধি াবে মরি কাহ ভারপালে। ক**হিবে জামার কথা** জ-াধ কুপালে। বিপানে পিষম ঘোর বে করিল পার। তা-तक जानिएक यांना कतिल धनात ॥ शून तांका कहे रहा কারভারেন সে কালে অবশ্য রাজা মরিবে আলু রে। আমা হইতে হৈলে রাজা পুনঃ ত্যাজ তুমি। ত্ব । কত নৃগ করে লব আদি।। এই কথা কহ গিয়া রা-र भारता (अठ्वलि हत्व मन्नी जालनात शूरता। *লাম করিছে মুপে ভারোদের প্রায়। কেলিলে ছরিলে रिन्म काल दर्शने यात्र ॥ 🛒 🙉 के कुले अर्थ दलनी । निक धृदश्यक्षी बाह्य, मत्मर बुद्ध साह, द्याह-র ঘটল রাজাব। একি বুদ্ধি বিপরীত, রিপু সুনে হৈল ాং অনুচিত দৈবেতে ঘটার। **রাজার কি ্রির**্**দো**ষ-তে এহের বশ্ব মৃত্যুকালে বৃদ্ধি লোপ পায়। ডাক্**ছি**ল ाक्तानि क्रशंदे यात्रांत तानी, दिरमत मुमीन दिराहक র : তাহার ঘরণ কালে বিপরীত,গ্রহলালে বাটে বৃদ্ধি ংলিল ভাষা লোই ৰূপ এইতবেঃ বুদ্ধি <mark>লোপ নৃপ্ৰৱে</mark>ঃ ১ কে পোৰগাৰ ।। কর্মগতি প্রাবে , কল , হারিবে न् अकता, व्यवना वसन् क्रांति कृत्व ित्नुस्त कृत्व स्तर्भमान कतिय श्रन्ता निजनन नहत्त कानीभटत । अक्वित गीरम्हरण, आमाजा द्वारशस्य व्यक्ति, बांगुक्रदब स्ट्रह कजू न। श्योदनए असिबान, बाजारत कुट्ट वृष्टमा बदन छन म कथा विला। वर्षे मिन जानि दश्या, ना तिथि मुससी वया निन कतिए गामन। ताका रूपम ताका करते

भूतको मा देकल अटडा, नूअ मटका मंदर दन वर्गमे ॥ हले शाह प्रश्वात्र, भनि जून निव नाम, जानि इस मुस्ति (धानात । ্ৰেজ বলে সেনাগণ, সঙ্গে যাৰে কত জন, তার: বলে কি কার ভাকায় 🛭 একা রাজা **অখ**পরে; তাহাদের সমিভারে আইনার দেশ ছাড়াইল। ক্রমে ক্রমে নানা দেশ, ছাড়া-वेश देकन द्वार्य काराभट्य लाशता कश्ति॥ जूतकम छ-পৰে রাচন বহু দুর যাওয়া দায়, শিবিকা বাহনে এবে চল। শুনি রাজা বলৈ ভাল তথানি শিবিক। এলো: পুরেনি স CECT जला किए।। एथांव विकिश्वतः लट्य साम् ८९ मानिक কৰেও যাইল সংখ্যা নো দেখি লাখনে জন, ফিলা হিছে: ब्रममान भट्ड जोक टाटम्टर सूच्या । १ वर्षः। भट्य योख भिरत्रकृष्ट्र महि अनशस्त्र,वानिग्नाहि (६० कांवश्राप्त। ८३) मतः भन्नभ करतः मध्य योख किथा करिकः अवश्रमा किया जामारा । अनि त्मरे पाति जन,वादम्य करर वहमाःकारा यान नाहि कान मतन। फेर्नाजीन रहा भएनताका रूप यात रवादन, नाय याहे जार तनिधादन ॥ नाहि कर अस्टमार्थर कात आक्षेत्र केवे दर्शना निकटत्रदर्छ शादित मृताहात। शहेरम बाकांद्र भार्याः मास्ति मित व्यवस्थारंयः स्टार स्टार्म बदल বারে বরি ॥ শুনি রাজা ভয় পায়। চৌদিকে নেগলে চায় गाहि रमेंदश खालनातं त्याक । करत दशम दर् मनः छ। थि **द्यादित क्रेन्न, मेर्ट्स मेर्ट्स वाख्टिल्डरह रमार्क ।। वरल वि-**नाम घाँछकी, बहार्ट्य मेशालकी, उक्ष करत मध मिल रमारत । कितिन मुक्त (अन, मही भटक्ट विटक्न, भारत अकि किल खाँत किल्ते॥ कि त्माय कोशत मिन देमदन्छ कत्रदेश नव, मिन्छ्य विश्वित दम द्वांश्रम । शाद मही दकार्थी कारत, त्नर्टन छाकियो जागहिन, अहे मार रक करत त्या-हन ।। कहिट्ड कहिटल कथा, द्या ताला विभिन्न यथा, जबा

विश्वनिक दिल कित ताथ कार्राशांदत ॥ त्नेट्यटक्काटन विश्वन, त्नीय नटेर धर्म इ.स. मञ्जीत नहना कुराजूति। म-क्रीम क्रिंदिश डॉटन व मने ध्रिटि शांद्र, दम्हें ताका रहेद उर्शित ॥ मंश्रभ मधुत्री होका, मास्ति नृती ककाका अष्टेक कहेक कामागन। तोज आका जानि घटन, नाना श्रीतन अदस्यत्न, जन्न कत्रतंत्र पूर्णम् ।। त्मीत्व छत्र ना-भावता, त्रश्नि त्योनि श्रेत्रा, धर्यादनत्त्व अती करतः । भानतम्बद्ध कामीश्रद्धत्र, सत्माश्त भूती करतः विकार मशरमाध्यर ।। भटतरह जानिय मही, मूल देश्य ही मही, वन्ती रहेत जाटक कार्रागाहत । त्नांटक हिछ विन्ति मिछ, वटन स्टवं विभूतीङ, जार्श जामि कश्लिम छाटत । अस्य द्रांका कुमझना, जामादुत यहिए माना, जाल कल क्तिल श्रामादत । आभि यनि मतन कित्र प्रथित स्नामित्र পারি, বন্ধ করি পুন সে রাজারে॥ শুনি ভার নারী ক্র, शीर यमि अनम्म, उत्तर्हा कत्र अकिकात । क्यांतिना क्ता जादन, धमन निश्चारण जादन, जन मूम तुष्कि माना कात्र।। दश्न यपि माना थादक, जन्मा स्थानर जादक त्व त्वमं ना रह विशेष। श्रीनण ताम व्हीमात्त, माहि तात्व कात्रशादत, श्रीन योष्ठ शत्रदत्ते हैं वेषे। स्नीमादक वस्तन करत, दन नाहि धनश्माद्रत, स्नमाविधि समा नहिं जात । जामि यपि कति कन्मि, त्वतत्राक् श्र विन्न, साक्ष णाहाटण देवान होते। कि बाने शहर गहर्व, ब्रह्माद्व देव बारे शहरे, विशेष्ट्र जानिय देखें क्येंगे के देश पति बही करें, के जिल्हें मेंगेन जाल, ब्रह्माट जीवन कि है । दिक क्षेत्र, तालका, श्रांत का स्थान है किया, श्रांत कार्य शीरन। शंक देखे शुक्रिशक निर्मा विकास दिशक णीत अम जादन महिन

A 🥌

कुछ काल विश्व तर्त महाताल ॥ वज्र निर्द्धांत रविषे मृदन हम रचम । अञ् प्रःच रेशन मम निर्द्ध करत रजन ॥ यार्ज्य निर्द्धत क्षर कल पूर्वन । खरना उद्घात खामि कतिव रम कृत ॥ जामि पूर्क क्लांध मत्न द्वांशि पहि जात्र । जूदवद्र । कथून जात्र ना करत जेशात्र ॥ जानितन जिल्लातकति जदवांध क्रीकाद्व। ध्रिदिव श्रीभात यम मज्यू मश्माद्व। मटक हरेल गाउ फिक्का मुक्छ। अवला। मनि इनि दर्भान्दत शामा खाउ वाल ।। वर्क वर्क फिन्ना गर मन , गराजन। रमभाई भट्डक ब्रट्ट र्यमन भम्ना। अकुर छतिए कीमान छान्ना। লাহাজ ভরিয়া রাখে বারুদ বাক্স।। দামামা দগভা কভো নাগরা নিশান। সকল ভিসাম রহে প্রত্যেকসমান ॥ नकटलदा वह क्या कट्ट मंत्रीवत्। आमात इकूम नदंव धन नितस्त्र ॥ यार्स विश्व तम्त्य मानामा वाकादव। দলগরী করি নোর। জিল্পাসিলৈ কবে ॥ এনেছি বাণিজ্যা আনে দিবে পরিচয় । জাসিত্ব ছানেক লোক খরিদ कामग्रा। द्य दय दख दयह मद्र कान आदह दकना। क-िट्न द्रिश्त मेर मट्त अर्थकाता दुक्ट द्यम काम कि লকতে না পারে। স্থানিবে ব্যাপারি কৃত শত পরি क्टित ॥ देशमाद्व नकला अर्थेनिका माज करने। वे नक्क বন্ধর মূলা দানা কে দানিবে।। বদাপি থাকিত হে প্রতাপ রুজ রায়। ত্বেতো চিনিত জব্য নহিলে এথায়।। এই গজমতি কিনা এই লাল চুনি। দুফিমাত দর এর কচিত वशनि। वह क्ले त्यावना कतित्व नर्वकन । यमवि । मम ना रश श्रेम ॥ कार्रेट्ट कथा गरिल ज्याता एक कि महानात नर्द कानाता ॥ कार्रेट वालाति का बिरमंत्र करते । इतिक नार्त्र मस्त्र नर्द यात्र किरत ॥ नेद भारत करर (रन ना रम्थ मद्राम । विलय्त रहात मृत रूज कार्या (कार्या ॥ एकि ताका अञालका शांकिल हथा।

निकार करिए वार आहर क्षेत्र । अहे कथा मल जरन उटन किर्देत यात्र । रक्षान कन कित्रा कानात्र ताक्षत्र । अथारन रचारलेख मही পतिलानि कति । उत्तर रत्य छिटलेन कार्त जिल्लाहि ।। रक्ष्यरन ताकारत हिल्ला काँत युक्ति जात । कुरल विधि भरनेर जीरव जालन ते नान लाज अल्ले स्टा जात । अन्तरात्र कार्यस्थानिक स्टाइस्ट

म्बीत हैय द्वम धात्रम

लियात। मेटन माम हिसानकि मही दुक्तिमान कि ৰিতে নিজ ৰূপ চিত্তে চেষ্টা পান।। ত্যক্তিয়া বৃদ্দ পত্ন किंत काशीन। नकाटक विकृष्टि माँकि त्यन मिन शीन ककूठरल ककू वरल ककू धराइस्ला। नमन करिया क गर्छ कथा वरण। श्रीतिद्वात श्राप्त शांत्र केरिंग मार्ट्ड, कुछ कर्चन जामने करते रचन जेगामिछ ॥ रक्वन जाहिन गर সংমুদ্রা শত। গচ্ছিত রাখিল তাহা দেখি লোকশত। वेश अक मिक्नि मिक्नि त्या जाता जाता जाशित करा कारी कर नारि जात । जाराद्य करिन राशा अंड गूर नक । काशाद नाहिक करने साब शाधा बोड । निनाद पंथम आमि छाक्ति नरकट्टी श्रीता स्वा प्याद्या क निटव भात शटक ॥ स्निकि काई होता एक जीत नार रह त्ताश्रदन जामादन मिद्द एन महाश्रह ॥ बद्बद्ध गृदकाव हा लारे मिकान नात। नेहाकान जाका निकल कर्ण তার।। পরেতে পার্গল বেলে একে মন্ত্রার ছিন্ন ক ৰেখা নগৰ ঘৰত। বহুদে গুলাই আৰু একথা প্ৰকাশ প্ৰতাপকত বাঁখা কৰি আনবাৰী কাৰিকল বাক্ৰৱী দুমান বাজাৰ। বাল হৈছে চৰণ সিবিতৰ যে ভালাই। হৰ মাত্ৰ দাসা কৰি কৰিবা চাছবি ৷ তবেছো

शता आनिशाटक प्रति॥ धर्यात जाहात मञ्जी भटकता वानिया। धदत लट्य गाइटर व ताकादत रामिया। जात াই কথা কহে যেবা হবে তার। রাখিতে রাজার মান हिन्तक धवात ॥ इश छनि लाक शर्म करत कामाकानि। भागन मिर्टिन राम अगर्डव योगी॥ मुप्रिं अवग कर्ट आभन खावरन । करिल अमल कथा कर कि कांतरन । यत्त्री কহে তোমার আমাতা চারিজন। ছয়মান করে তার চরণ সেবন।। পরে মৈত্র ভেদ করি করিয়া চাতুরি। আনিয়াছে মহারাজে ছল করি ধরি॥ সে সময় মন্ত্রীরাজ ना हिल मिथारन। डाहात ममीरिश जूरिश किया धरत वादम ॥ अथन जाराता मदव ब्योटक वर्डमान। मटम्ड বহুক তব করিতে কল্যাণ।। যাহয় উচিত কর এই সমা-राते। পরিবর্ত হবে বদ্ধ বিরুদ্ধে তোমার।। গুনি বাণী न्त्रम्यि श्राह्म थलर्। निज्ञास क्रांनिल गरन अवज् लाजलः ज्ञाका यत्न थोना शिना इहै गाइँछ। छनिया शांतन नाजा शदन हि हि हि ॥ जूनि जाशत प्रम लग्न जून-পরে। ছড়াইয়ে ফেলে দিল কোপিও আশ্বাস । বাসার প্রভৃতি পক্ষী করুরে ভোজন। দেখিয়া মন্ত্রীরে তবে করমে तन ॥ कथन कोशिन धारी कथन छेलक। टेज्य विनः शिष्ठ উঠে कोट्रिन नर्व अत्र ॥ किन्न ग्रुट्थ এই कथा नर्व কণ বলে। ধরে লবে যাবে ভূপে শুনহে সকলে।। গ্রন্থ পালল বলে উপহাস করে। রাজ পাত চারিবীর ননেতে শিহুরে।। কি জানি এ কোন অন কেমন পাগল। म्बाम क्तिन मुखा किना करत हुन। मातानिन नगरत ? किरत त्यादत । कारत मीना शानि कच् अरुव ना करत ॥ এত विन कांत्रि करन क्रेंत्रिस युक्छि। महत्र्वर इहिन कांत्रा मर्द्भाभएम प्राचि ।। अर्थातम अर्व मिना रहेल गर्भटन ।

পার আবোজন। ক্রুরিতে লইল ভক্ষ্য বিপক্ষ দলন । व्यव जन दर्गाश अदिव दंकमन शांशल। दक्षी देशदं जादन জন নইল সকল।। জানিতে বিশেষ তার কোন কন वत्त । এए छोति अकङन छैट्ठे हुक्कभट्त ॥ मन्त्री नावि জানে পিছে আছে অরিজন। মাশানৈ তুর্গমন্থলে করিছে এক ন । বাছ হৈতে সৰ **তত্ত্ব দেখিছে সেজন। বলে** এ বেটাত হয় সকলি ভঙ্ম বা ষে হৌক ধরিব এরে আহা त्नत १८१। दश्नकारण मङ्<mark>डीतांक डेर्कपृष्टि करते ॥ एन</mark>-दिश वकाने करन बाद्ध इंट्रकाशदर । विशेषा नो किन ত্র বি আহার আমারে।। এত বলি উঠি মন্ত্রী করিয়া গ-कात। एकि यहत नदम द्वि। शार्थिक त्रमान में वकर শতঃ বালি বিভেছে আমারে। আজিদে পার্চার ভোমায় बरभत ने कि । अञ्चलदर्व कोई धरत मातिल है। जिस्त । বল সূট ইছ্য কার্ডের **আঘাতে।। কহিতে যেমন** রালি দি সার কল। উপযুক্ত বল পুনঃ হাবে খল খল।। দেই ात रहिएका शुन्ध भाष श्रामाश्चारन । निष्धा भागन कहे। उ. . . वक्की खारन । करिन श्वांभन छटन छनि समानात । व-एट लोकन द्यान करतमा आदिति।। श्रीमिया मरखाय इत ोह शिक्षका । अर्थात्म वृधित त्रीक्ष छोत्वे मतम मन।। প্রাণিল প্রাপ্রাণি দেশে **গাত ডিজা নৈয়া। নাহি হ**র বিক্রী আর কিলের লাগিয়া। প্রতাপরতী বিশা চিনিতে না-िरता एक्सरत थानामं कट्रेंत इतात्र वानिटें।। खेनि क्या काह जारन धहिया इशिष्ठ। भीर्गकी विभीव मिनन तन्ध खि ।। तोका नटा अने अने अटेर मूर्भेनते। दूमि नाकि जान ভাল करत्त्रत कर।। योभात **मरिक हवा प्रताश उथाय**। এও বলি তুই জনে হর্ষিতে যায়।। **এশ্যান** কহিছে কিন্ত হয়ে মন্ত্রীরাজ। এত দিনে নাধিলেক জাপ-

जिल्ली। मद्भट वाद्य कूलिक, हनिद्वन नत्लिक খাটে দেয় বার ছই জন। পাইনে রাজার যাড়া ংরিদিকে লোক খাড়, প্রণাম করিছে অগণন " , नकारन मञ्जीताक, माजिएस भागन माक, माहे करा। ্তে পুনরার। এই দেখ এরাজার, ধরে লয়ে মন্ত্রী যায়-ার সাধা রাখিনে ঊহায়।। শুনি পাগলের ভাষ, কেই া করে বিশ্বাস, ক্রমেং উদ্ভবিল ঘাটে। ধরিয়া রাজার ্রের উঠিল তরণী পরে, মন্ত্রী বলে কেবা আর আঁটে।। দেগাইছে জহরান, হেনকালে অকমাৎ, পাগল উঠিল তরি পরে।। গভনাত্র নিজবেশ, ধরিল অতি প্রবেশ ८५८२ वर्ष इत नृপनरत्।। मञ्जीताक आक्रा किन, माँकि गाबि दाता हिल, छानशरन वाश्टि नाशिल। पिथ विश রুক্তা মনে, প্রমাদ আপন গণে, সভা কথা কোথায়ে পাগল।। পরেতে করে কারাজ, গুলি উড়ে যেন বাস, কেহ নাহি নিকটে আইল। পরে কত দিন গতে, উপনীত अप्तरमहरू मञ्जीताक सकाय माधिल।। स्टन्टम व्यक्ति हा-জার, কাংছেন মন্ত্রীরায়, শুন রাজা এখন কি হয়। রাজারে করি ভং নন, মৃদ্রী কহে কুবচন,শুনি রাম ধরে তারপায়। ভুমি মন্ত্রী আছ যার,কিনের বিপদ তার,আমি তব হইলাম দাস। যে আজা করিবে ভুমি, তব আজা বহ আমি-ৰতাৰ এইতো নিৰ্বাস ॥ যে ইচ্ছা হয় তোমার, কর ভাই এই বার, ভুমি মম ত তের সমান। মন্ত্রীর রমণা জাসি। मदन रहा मरीथूनि, लिय वाका शिद्य कदत मान ॥ जुनि ্তি বংস্পতি, তব তুল্য নাহি মতি, অতি বিচক্ষণ বিবে-हमा। मकल बाजाब दबर्छ, महाबाजा महाबाह्र, এरब कह আর হে দিওনা ॥ দেখিয়া উহার মুখ, বিদরে আমার ৰুক, কিঞ্চিৎ যে করহে ক্রুণা। রাখিয়া রাজার সন্মান, निद्ध नर तांका मान, निक्दंतुर्छ करतत रधायन। ॥ यनि

নাহি পরে দিবে, সত্য ত্রন্থ অধোয়াবে, শেবে পাবে অথিক মন্ত্রণা সত্য এই কহি আনি, পরে হবে অধোগানী,
তব যশ রহিল যেন না।। শুনি সেই ৰূপ করে, ছাড়ি দিল
নুপ্ররে, স্বদেশে সে করিল গমন। মন্ত্রী মন হর্মতে,
রাজ্য ভারে আনন্দেহে, পাত্র মিত্র লইল রাজন।। জ
নলে উৎপত্তি শার, যে জন অধিন তার, তাহার ছহিতা
কান্ত যিনি। ছিজ জীশ্যামাচরণ, আশা করে সর্বাক্ষণ,
তার রাজা চরণ ছথানি।।

গোপালের মন্ত্রণা 🕫 💝 🧀

পরার। গোপাল কহিছে রাজা কেন বিধানিত। মন্ত্রী-গৰে কং তন্ত্ৰ কৰিবে বিহীত ॥ রাজা বলে মন্ত্ৰী মম কে-আছে এমন। কাৰ্য্যেউন বব্যে দ্বুল ত্ৰিগুণ ভোজন।। তা-হার মধ্যেতে গণি **তোমারে প্র**ধান। **ভুমি যদি এই ঘোরে** দেহ প্রাণ দান।। যাহাচাবে তাহা পাবে করি অফিকার। দদ্যপি রাধহ মান আমার এবার॥ হাসিয়া গোপাল বলে এই কোন ভার। তিন দিন মধ্যে দ্বিজ করিব উ-काइ।। किन्तु अक कथा कहि अनटर ठाकूद। नाना तक वज्र নোরে দেওতো প্রচুর ।। পঞ্চাশ রক্ষ বাস গ্রন্থ পরিমাণ ছরার ভূপতি মোরে করহে প্রধান।। তথনি আর্ভি দিল क्रक हत्त्व अव । इतिरंघ वियोग मत्म छाँ भू शृद्ध यात्र ॥ মানদে করতে চিন্তা কিনে হবে জয়। কোন গ্রন্থনতে আমি যাইব তথায়।। বিদ্যা খুনা ভট্টাচার্য্য আমি কাব্য করি। কি ৰূপে জিনিব সভা কি করি চাতুরি । औশ্যাम কৃষ্টিছে তারে করি উপুহাস। খটাক পুরাণ আছে क्**रुष्ण श्र**काण !!

ছিপদী। গোপাল আসিয়া ছরে, মনে মনে চিস্তা করে: कि श्रकारत तका इएव मान। तक्यरन इष्ट्व श्रात, कत्रिक রিজ উদ্ধার, এবার বিষম সমজ্ঞান।। অতি ভীক্ল মেধা ারে, মনেতে যুক্তি করে, ভাঙ্গে পরে খট্টাকের খুরা। ক্ষোত্রলি দিয়া শাল, প্রথমে বান্ধিল ভাল, তার পর াটিন টুকুরা।। তারপরে মথ্যল তাসবাস শোভেভাল-ত্ত্পরে ওড়া বারাণগী। পরে সুনতনি বনাৎ, লেটেতে াাড়ে পশাৎ, পরে ঘেরে ধূপে তারে কশী॥ লাকাই क्रमान मिरान, सारम यजन कतिरहा, शरत निव्हेनिया सारक পুরা। ইন্তব্য **নালের ফাড়া, নাগাদ পাটনাই গড়া, মে**।ঙা র্থন পঞ্চাশ টুকুরা ॥ আপনি পণ্ডিভ বেশঃ বরিনের ভাবদেশ, ভশ্পীদার স্বাণি নমে বাম। এটেল মাটির ে।ট', গলে উপনিত মোটা, মুখে ঘটা গুণের ছটায়। ্বন বে**লে অবলেষে, যাইল** যাঁহার খা**সে,** কোইমা সভাচেম েই জন। ক**হিতে নাহিক প্রশ্ন,** উন্তে করমে তীক্ষ, ফার মন শুন যে কারণ।। ভূমিকম্প গণিবারে, ভুকুম আছে ক্রনুরে, তেকারণে আমার গমন। শুনেছি পণ্ডিত গংক নাজানে কেমনে গণে, আদিয়াছি করিতে গণন।। শুনি বাঁণী হর্ষহয়, কচে ভূমি মহাশয়, তব ভুল্য নাহি জন, গণী। এত বলি বাসা তারে, দিল অতি সমাদরে, ছাত্র রের উত্তম যোগানি।। দবি হ্রন্ম মিষ্ট্রজন্ন, চতুরস ভিন্ন: পরিপূর্ণ বাসায় শাজায়। উত্তম আহার পেবে, গোপাল आनन्त्र रुद्धा, जिन पिन इंश्लि ज्थात्र ॥ भकटल कटत्र क-মান, বলে হেন বিদ্যাবান, নাহি আর গৌউড় মণ্ডলে। ছিজগণে দেখিবারে, চলে ভাঁড় কারাগারে, দেখে তথা নি**জীবি সকলে।। গোপালে দেখি উত্তর, কাহার ন**। সরে यत, जांथि मात त्यादत बातर। त्याभान श्रदनांव करा, তোমরা ভাজতে ভয়, আমি সর্ব করিবউদ্ধার ॥গুনি আদি

र्काम करत, जाशास्त्रास्त्र चिक्रवर्रत, जात श्रद्ध रम म्हान ত্যজিয়া। বাসায় আবাম করে, যেন কত হাজ্যেরত प्तरथ তोरत नदांव जामिया।। **এक मिन याशेशांना**, क-রিয়ে মনে মন্ত্রণা, বলে বুধে আনহ তাকিয়া। বার্ত্তা মাত্র দূত ধায়, গোপাল লইয়ে যায়, হাঁহায় আছেন যে ব-নিয়া।। নবাব কহিছে বাণী, গণনা কর আপনি, কবে হবে পরাকম্প আর। যে আক্রা গোপাল বলি, আগন পুরা খুলি, করে গুণ নিগুণ প্রচার ।। এক পর্দা রাগিতার, খু-লিল বেবাক জার, গণনায় উনপঞ্চশত। পুনঃ একং করে বন্ধন করিল পরে, রাখিল ঘেমন পূর্ব্বমত।। পুনশ্প্রকাশে সব, ক্ষণে করে তিরভাব, ক্ষণে থেতেল এক পর্দা বাধি। াবাব পতির নাম, হেরে হয় হউজ্ঞান, আর না পামটে ছু টভাঁ থি।। এক বার সব খোলে। পুন বান্ধি তাহা ভুনে-भूगटनारिय न**रल अगर्छन। नर्गात खेबांव याता,** शस्त्र्य ট্রুল ভারা, পঞ্চিতের কিবা দোষ দিব।। ছেন মতে দ্য-বার, এইকপে বারে বার,নবাব কহিছেকিব। কং। শুনেছি আপনকাণে, ভণ্ডনা না করো বেনে, গোপাল কহিছে শুন নাই।। আমি কি কহিতে পারি খটাঙ্গ পুরাণ তারি, गर्ज माटखुत सूगांत तहन। कहिन चार्माटत महा, वियद्य २हेश मछ, ननाव श्टम्स्ट कान शैन ॥ धकि, अछ भूव भना, नाहि कि क्रू विद्वहना, त्नदश श्रदन कारवादथत आग्न হিন্দুর পণ্ডিত যত, স্থর্গ বর্গ আছে: আত্ত, যবন আগম अत्थी यात्र।। जाशांत कात्रन भटन, कहित्ह नम शृतातन, এতবলি থোলে পুনরায়। কহিচে নবাব পরে, হিন্দুর হ-कम महत्र, महिकदते धूम छहक थात्र ॥ प्रथम शनि कोमती, काटनर कटर ठाहा, उर्क थाकि उदर्शत श्रेवत । यनमे म-ब्रिटन शहर, जाशदक किन्तूर्टक शूरत, माण्टिक अ मनाटका क-वता। नीटहर धवत यक, यवरंग नाटह विनिष्क, शाखान

वार्श्व कथा जात्म। यपि शार्म मसूल मात्म, তবে वाल কানে থকপ তাদের পিতৃগণে।। নাটির ভিতরে থাকে मा हित्र थवत वादथ, शिष्मू भटन खनिदव दक्तरम । यनिशिष्मू দিত গোর, তবেতো পাইত টের, ভূমিকম্প কহিত গ-न्दत ॥ आभात भूतादन गाँधा कि कि क्षेत्रांन कथा, हेक তথা কর বাহাপান।। নাহি কহি অনুমান, মম শান্ত বর্ত্ত-মান্ত্র, কথা করে তাকিয়া দেখন।। শুনিয়া নবাব ভাবে। এইত প্রমাণ হবে, ভট্টাচার্বোর শাস্ত্র যে সাক্ষাৎ। পিতৃ-लाक अरवगरवः धूमा शिक्टिका भगरन, यहरमद कवत वि-গণত।। পরে যত হিজগণে, ছাড়িল বিচার মনে, নানা বস্তু জ্বাজে করে দান। যত সৰ ছিজপ্ৰ- করি বেদ উচ্চা-त्रक, द्रश्तिवादक कर्यम कन्यान ॥ ब्लंटवट प्रान श्राम রুজোর কুপুরে আনে। শভূহ কাজি মোল। ধরি। ক্রিব महत्त्रक मार्चे, द्यथाटन यास्ट्रत शाहे, हुउनन लग्न दक्तकति মত্রেছে দেখা পায়, পরিষ্ণা গইয়ে যায়, বলে বল ভূমি-দ্রম্প করে। শুনিয়া যতেক মলা, বলে তোবা ছালে। िइस्हा एउसा किएन १८५ ।। एकर गारि करत सक, भक्दं রহিল ভ্রা, নবাব কারল জব্দ পরে। রাখিয়া যে কারা-शोरंत, जन भागि विना महत्र, यद्दल काँ मिहह छेटेक सहत् ।। कंड (नएड । शन गरत, (कंदो जात पश्च करत: रकई म! গণিতে পারে কম্প। শ্রীশ্যামচরণ বলে, সেইতে। পুনের कत्व, तुमाज्यम (अञ दश्म मण्ये।।

গোপালের রাজার নিকট গমন।

পরার । শুনিরা নবাব পুরস্কার করে ভাঁড়ে। নি-র্নোষ জানির। দ্বিজগণে নিল ছেড়ে॥ সঙ্গে লয়ে রফে বিপ্রসমূহ গোপাল। উপনীত হৈল জাসি যথা,মহিপাল॥ লাজনের কোলাহল জয়২ ধুনি। শুনিয়া পুলকে পুর্ণ হৈল
নূপমনি।। ছিজগণে কহে রায় কহ সমাচার। কেমনে সে
মোরদায় পাইলে নিস্তার।। পঞ্চিত্র, সকলে বলে নবাব
পাণিষ্ঠ। কঞ্চ রাখিয়া ছুইদিল বহু ফুই।। ভূমিকম্পা যদ
বিধি না হতে। গণন। তদবিধি বদ্ধ করি রাখিত রাজন।।
নিশ্চয় নির্ণয় তায় কে কহিতে পারে। কেবল গোপাল
হৈতে উদ্ধার এবারে।। শুনি রাজাহরবিভ বিশেব বৃরিয়ৢ।
পত বিঘা মহতাণ দিলেন লিখিয়া।। আর নানা আহরণ রতন প্রবাল। শিরপা পাইল নাল ঘোড়া যোড়া
সাল।। দিয়ে তারে নিজ ঘরে পাচাইল রায়। হেনকালে
স্কেম্মাং হইতে কোখায়।। রাজার বেহাই সেই সভাল্বো থায়। পথজান্ত ক্লান্ত শান্ত জ্ঞমজল কাম।। দেখিয়।
ভালরে নায়ায়ণ করে রায়। শ্রীশাম কৌতুক করে ব

লাঙার বেহায়ের সহিত কৌতুক !

নিপদী। সভায় বেহাই যায়, প্রণদী রাজার পায়,
কবে রায় ভারে জভাগন। আইস হে মহাশয়, লিভিড

যে আছাহয়, কোথাহইতে হইল গমন।। বেহাই বলে এ
রায়, তাজি নিজ নিকেতন, দেখিবারে তোমারে এসেছি
রাজা বলে ভালভাল, বাটির কুশল বল, দ্বিজ বলে ম
স্পল দেখেছি।। ভূপকহে গুণধাম- এইতো ভোমার নাম,
করিতে ছিলাম মনেহ। হেনকালে আগমন, তব আয়ু
অগধন, শ্যাম কহে যা বল আপনে।। নূপতি বলেন ভাই
বহু দিন দেখা নাই, ভেকারনে আকুল ভাবিয়ে। নাভ
কলা সিশি শেন, দেখিয়াছি প্রত্যাদেশ, সবিশেষ, কহি
বিভারিয়ে।। শুনহে বেহাই ভাই, ভুনি আমি একটাই,
চলে ঘাই যেন পদব্রেজ। নিনি যাগরণে যেন অস্বটোলে

ष्ठरेकन, **इत्रयहेनास्य अम्बदक्य। (रुनकारन अ**शक्य, एर থিরুযুগল কুপ। একে ক্ষীর জন্যে বিষ্ঠা ভরা। জামি টলে कीत इरम, शिक्षणां अथमारम, जूमि शृज् नतरक निश्ता। ছি হ ছি কি কৰ জার, তব অঙ্কে বিষ্ঠাধার, দেখেলোকে कतरम जिल्लाम । भरेन मात्र प्रदक्ष जिटके, कानि जुमि अन ছটে, পড়ি আছ স্থপনে আমার।। দেগিয়াছি যে> স্থপন কহিলাম বিবরণ, ভাল মন্দ কর অবধান। বেহাই কহিছে পরে, কেবা এ অন্যথা করে। মম স্বপ্ন এইতো বিধান।। মহারাজ **যা কহিলে, মমস্থাপ্নে সর্ব্ধ মেলে, छুই কুণে** প ্ডছি ছজন। আমিতো নরক কুণ্ডে,তুমি পড়ে ক্ষীর কুণ্ডে, গতাৰ এ সত্য বচন।। পড়ে যেন ছাইজনে, উচিলান কভ-कत्न, शमदाज शत्य हत्व याई। यटक त्यटक महातक, वामि চাটি তব অঞ্চলকাঞেতে রসনা বুলাই।। ভুমি যেন অরবার চাটিলে অঙ্গ আমার, বাড়া মাত্র এই চাটাচাটা। তব জন আস্বাদনে, আছি আমি ক্ষুমনে, ক্ষীর সে থাইতে পরি-াটি।। ভূমি মম অঙ্কে যাহা, চাটিলে কেমনে তাহা, লাগি য়াছে কদিতে না পারি।শুনি সভাজন হাসে, রাজা ভাসে াকতোবে, বলে বেহায়ের বুদ্ধি ভারি।। বেহানি কেমন ংর, নাহিক দেখিলে নয়, মহারাজ। ভাবে মনে মন। জ্রীশ্যামাচরণ বলে উত্তমে উত্তম মিলেঃ যেমম দেব তেমন বাহন ।৷

রাজার বেহানির কৌতুক।

ত্রিপদী । এত ভাবি অনুচর, পাঠাইল মুপবর, বেহাইর বাটীতে তথন । মধুপত্রি দিয়ে করে, কহে তারে রাজ্যে খরে, রেহানীরে, বল এ বচন ॥ মকরক্ষ হেতু রায়, পাঠারে দিল আমার, অরাম করি মধু দেও দান। সেই কথা নিরে খরে, গেল দুভ তার ঘরে, দেখে ভাবে ভিজ্ঞানে কারন ॥

व्यक्तिमी करितेह कथा, कि कार्तन जल्ल दश्या, पृष्ठ करक বিশেষ তথান। মধুর লাগিরা মোরে, পাঠাইল রাজ্যে-श्रद्धत, यदु एम्ड अर्था ठाकूतांथी।। खानांशी सूरवांध माती ব্রিল হবে চাতুরি, কত মধু তার পতে আছে। কেবল কৌতুক করে: জানিতে মোনে অন্তরে, কার্য করে দুবে পাঠারেছে।। কহে দূত গেল কোথা, ভূপে কহ এই কথা ভূথা হেথা পাণিইল চর। যতমধু মেরিছিল, তার বেং ফরাইল- খাইলেক ঘোড়শ বৎসর।। নামে গোপ ভক্ষি कें। जि, विधाला निशादक नाजि, मधु नाहे शांव मांव चारक मनि वादंश व्यक्तिवादी, शांक देशाया मिट्ड शांत्रि, मधु वँश রাখিল না গেছে।। শুনি **চুত হাস্য মুখে, যার রাজার** স ण्टर, वाश्च वदन वनटत कांत्रेग। शटत हत मारे कथा, अ ক'শ করিল তথা। বেহানীর যেৰূপ বচন।। শুনিরা হা-লোল বে'ল, স্ভামধ্য হয় গোল, অপ্রস্তুত হয়েন রাজন। তাকি বৃদ্ধি সুপ্রথরা, ইাড়ি যোগ্য বটে সরা, স্বার শ্যাম W # 55 354 11

প্রতির । একদিন মহারাজা করেন ভোজন। আপতি করিছে রাণী পরিরবেশন।। পাশ গৃহে রাজার কুমারী জন পায়। রাজপুত্র বধু তারে আহার যোগায়।। শত্র আগার করে ঘরে জানি মনে। রহাস্য করিছে রামা নন্দীর সনে।। ঠাকুরবী ভাত আর চাহি কি তোনার। অকুলান থাকে যদি লগু তবে জার।। শুনিয়া ভারে কহিতেছে রাণী।। রাথি নিজ ভাত করিয়া বাদি থাকে। শহুতেকরিয়া বদি দেরাও লাক্রা। গালেচিত বিহিত উত্তর ধনী পেরে। লাজেতে মলিন মুর্ব রহে হেট চেরে।। কাপ্রদার করে রাজা শুনি প্রত্যান্তর। সন্তুত্ত হইল মুপ্ কন্যার করে। আজ্বরা আজি প্রত্যান্তর। সন্তুত্ত হইল মুপ্ কন্যার

্রিপি থারে দিল মহারাজ।। কন্যার এমন কথা নাতিনী ক্ষেত্রন। জানিবারে ভূপতির হইল মনন।। শ্রীশ্যামা চরণ কাল কৌজুক বিলাসে। এবার উত্তর ভূপ পারে জনা-নামে।।

রাজার নাতিনীর দহিত কৌভুক।

্বার । মবিনা পৌরন ধনী যোজশী নপসী। তার কাছে

নিনা বাজা করে হাসিন।। কর দেখি বিবুমুখী কোন রোগ

গুলা। প্রনি প্রনী বলে বাণী শুন মহীপাল।। বিহিতে
আততে খুখা রখা যোগা নয়। স্থানে বুরো টাক যদি

গুলে মহানাল।। ইহা বিনা খল গুণে কারে জাল কব।

কান খাহার তেগা তার প্রান্ত্রাবা। এহেন বচন শুনি

নিনা গুণিজাশর। শ্যাম কহে সমুচিত বিহিত উত্তর।।

রাজাধ রাণীর সহিত কোতুক:

প্রান্ত । তাহাতে অনেক মুদ্রা দিরা অলফার। বানীর বিক্রার করে আর্মার।। আনারে তোনার পিতা নিনা ছিল বিয়া। এত মুখ ভূঞ্ঞ ভূমি তাহার লাগিয়া।। তানা ছিল বিয়া। এত মুখ ভূঞ্ঞ ভূমি তাহার লাগিয়া।। তানা অলফার জড়য়া জড়িত। সর্বাচ্ছেতে প্রথমতি প্রেছ ভূমিত।। নামানির বন্ধ পর কেবা হেন পায়। কত নার দান কর যাহা ইচ্ছা যায়।। অন্যানরে হৈলে পরে হৈত কত দ্বার্থ। শুনি বাণী করে রাণী করিয়া কৌতুক।। গুড়ম্থ পিতা মোর নাহি ছিল জান। নবাবের ঘরে মারে নাহি দিল দাম।। তোনার নিকটে স্বর্ণ মল নাহি পায়। নে হলে সে নার মোরে প্রাইত সায়।। বনে মানে মুলে শীলে নমভাব দেখি। কেবল সোগার মূলে ইলা লাকি।। নুঝিল আভাসে রাজা কটুতায়। বলে। কেবল ধনের মান্য কুলে নাহি মিলে।। কেশর কোণীয় গালী মুবনান্ত ভায়। বাক্ল করি পাচরাণী কবিল আমার।। তালী

তথা মিথ্যা নহে কি বলিবে তারে। সংবাদুৰে মহারাজ কলি বাহিরে।। খ্রীশ্যাম কৌজুক করে নৃপতিরে কহে। নারীর এমন কথা প্রাবে নাহি সহে।।

नमाकल ठूठजा निक्कि।

প্রার। করিকে শামীরে বন্ধি **শালার কুঞ্জর।** তাহার केशरव देवरा दोरकात क्रेश्वत ॥ **गामात्र कूक्ष्रत रवरन चार**क कक्षा यात्र । इस कारल जानका प्रति उभाताम् ॥ मदत বরে খীবর ধরিছে মংস্যারণ। সেই কালে তথা এব স্থাসিল রে:জন ;। লসিতি সুন্দর হান্দ <mark>নটুয়ার বেশ</mark>া ্যলে উপবিত মোট। পেনসেটা কেশ।। কালা পাতি পুলি পরা হাতে হেম ছজি। পারেতে সাঁচ্চ। নাগরা টেকে শোভে ঘড়ি।। রক্ত চন্দনের কোঁটা ভালে সুশোভন । गरतावत लिरत जानि करिएड रम जन।। जिम मिन जना-হার আহি উপবাসি। কিছু মৎন্য দেও যদি তবে ক্রি श्रीमि।। धक्था श्रुनिया कूठ कड़े मन शर्य। हिल मिन দিল তারে সম্ভাষ করিয়ে॥ ধরং দ্বিজ্ঞবর এই দিলে পারি। শুনি হস্ত পাতে বিপ্রতার বরাবরি।। করেতে লট্রা মৎসাহয়ে জ্বষ্টমন। অকাতরে অমাননে করিছে চক্ষণ।। বদ্যক্ষ চুচজা মিটি আশা নার্রাথিব। প্রাপ্ত মাত্রে যাহাহউক ভোজন করিব।। জালার আলার করে **সেইভো অসার**। এতব**লি সে সকলি** করিল জাহার।। আপন নয়নে নৃপ দেখি হেন কাষ। বুদ্ধি শুদ্ধি লোপ হয় ভাবে মহারাক্ষ্য। এমত অদ্ভুত কর্ম किश्रामा ना द्वि। इशांत इष्ठाख किছू नृविहर को शांति এত বলি জাথি ঠারে কোত্রাল পরে। লয়ে চল দ্বিজ বরে আমার ভজুরে।। আজ্ঞামাত্র কোটাল ধরিয়া লয়ে যার। এথানে বেপেতে রাজা কুঞ্জর চালায়।। জানিয়া <u>বসিল ডাজা দিয়ে বায়বার। পাত্র মিত ভতা আদি</u> আইল সভার।। রাজা বলে সকলেরে শুন্থে করিণ।।
বছই অন্তুত আজি করেছি দর্শন।। ধরিয়া চিক্সড়িমাট
চল বিজ্ঞার। অপাতে ভোজন করে পুলাক অন্তর।।
লোখরা তাহার কার্য্য হত বৃদ্ধি আমি। পাণল না হবে
াপ্র জান হয় কার্মী।। আসিতে আদেশ আছে আমার
লভার। বিশেষ রুড়ান্ড ভ্রান্ত জিজ্ঞাসিবে তায়।। কহিছে
ফালতে কথা হালির ভুকুরে। সভাসদে নৃপতি দেখান
ভাগি ঠেরে।। গ্রীশ্যামান্তরণ ভণে শুন মহারাজ। অসান্ত

রাজার কর্ছক ব্রাক্ষণের পরিচয়।

ত্রিপর্নী। ভূপতি সম্বাধ করে, কহে সেই দ্বিজবরে, ংাস্ম মুখে আপাঞ্জ নিশারে। কি জাতি কাহার স্কুত, কোগায় কৰ বসত, সভা তত্ত্ব কহ হে আমারে ॥ কি ক: नहर्व भीनश्रव, व्यर्भातक कत जन्मव, हेशत कादव (र কহিবা। শুনে সেই দ্বিজবর, কহে সৃত্ত্ব স্বর, উত্তর তাহার আর কিবা ।। রস পুরে মম ধাম, রসিক আমার নাম, রসরাজ ছিজের নন্দন। রসময় জাতি কুল, বিজু-বন রম ফুল, রসরঞ্জঞ্জ অভরণ।। রস নাট রস পাট, ্যার দেশে রস হাট। রসনায় সরস বচন। রস সরসীব ববি, স্নান পান রস করি, চারি রস রসজ ভোজন। वम भगारिक भग्नन, द्वन खाना मर्खकन, तरमत वालिम শিরতলে। রসিকার প্রাণ ধন, অরসিকে বিষ হেন, বি-রলে পাঠাই রগাতলে।। রস বাক্য রস পান, মুখে জপি রস নাম, প্রেমরস আমার জীবন। রস ছাড়। नारि शांकि, तिनका अशरम प्रिथ, तेना जारन नना मम मन्। ऋजन त्रंतिक श्टल, जात मटक मन मिटल, नि-ব্রুসে নিরাস সর্বক্ষেণ। তুমিত্রো রুসিক জন, রস তলেতে

वेतिन, जाम ब्राम अधन ब्राबन । ब्राब्ध करह जान, ज्ञान, विक्रीय कतिया वल,एक तम तमिक श्रकात । श्रिन्ताम कोजक परन, तालारत वित्नव वरत, त्य त्रजूक बह দশা তার।।

নারীর ৰূপ বর্ণনা। প্রার। ভাষাণ কহেন রাজা শুনুই ভারতি। যে কা-রণ আমার ঘটল এছগতি॥ লক্ষ্য সভাব মোর জ্বি সানা ছানে। বিজ্ঞানে এক নারী দেখিল নরনে।। ক্লেতে গাগরি করি বারির কারণ। সরোবর কুলে आणि जिल नत्रभन।। किंबाश रहिल औशि त्नइटिंश नमय। कार्यक्र केयर एक जनक पर्य ।। अकूल क्यान यूथ प्रथम কেশর। অলকা ভ্রমরা তাহে বৈদ্যে নিরন্তর।। মৃত্র-कार्वि सूर्य शिंति स्थन (कार्या कान्। अनिवाद सूर्या-ক্ষরে চকরের প্রাণ।। ফুল ধনুস্ম তনু ভুরযুগ ধানি। সন্মে रम अध्यान नम्न वोशोनि॥ श्रांकर्ग छक्कांत छोट्ट वियम कछै। कारतज्ञ यादत देश्दत छोत्र नाश्तिरक ॥ थन ७३ नार खडे किनि जिल कुल। निष्मुद्द विष्मु त्यां जा त्य আছা অতুল।। শোণিত দলিত এট কোথা বিদ্ব কল। उडि यकि स्न ते कार्गत्रकत । कूसून स् हिला सन कर णीत दरदत्। मिन**्न जन्म शोदक यू**निया जाखदत्।। करिकत नरह केंद्र उनमा मृगाल। मिर्चिकत लाख छत जुकारेन जटन ।। शेरहाधेत किंवा छात **जूनन। न**िरहा मा-एष कम्य कार्टे भिश्तिरम् तम् ॥ स्मान्त्र सम् क्र कर्म अञ्च । किरन रागित से ताड नाइ जून । कीम जून प्रया कुल नाजित शखदा स्त्रास्टरत कुल केर्ड वार्क निहरूत ॥ जियनि कि बेलि मक्ष कारमें जीनिया जीति

अवि कीन छात्र। शख्राक शात्र लाज रहितत मानात । एयस कहिल शक्ष मत्या नक्ष रहित । लक्का छात्र हत कर्त क्ष्म माना ग्रहात ॥ श्रित्र स्विष्ठात निष्य छात्रीत । कुर्य भिर्म रहि स्वर्थ काकात ॥ तखांद्रक महिक स्वर्ध छिला ना हत्र । श्रमाक लिल काकात ॥ तखांद्रक महिक स्वर्ध छिला सलमल एक्स काकान । तिथि मांक विक तांच काित माना मना नथलर तिमाकर तम्म थस हत्त्र । कार्याद्र कामरन भागा नथलर तिमाकर तम्म सस हत्त्र । कार्याद्र कामरन भागा । नाका रश्ति कामरन भागा । नाका रश्ति कामरन भागा । नाका रश्ति भागा । नाका रश्ति कामरन माना । त्रित्र कामरन कालात्र ॥ त्रित्र कामरा । नाका रश्ति कामरा । त्रित्र कामरा । नाका रश्ति कामरा । त्रित्र कामरा । त्

ব্রাক্ষণ ও ব্রাক্ষণীর পলায়ন।

भात । मद्रावद्र (गर्ड धनी এकांकिनी कृत्त । मद्राव्य मन्द्र अभादम्य कृत्त । दन्यामान मन श्रांन जामाय हिता । कृतिक आमार भद्र विश्व करें । कृतिक ना कृत्त । जार्किन कर्त्र (माद्र द्रावा मन उर्हें । कृतिक ना कृत्त भा कर्त्र भा कर्त्र (माद्र द्रावा मन उर्हे । कृतिक ना कृत्र था कर्त्र भा क्रिकाम कृति थाक देनाचा । जेवत कर्त्र । क्रिकाम कृति थाक देनाच्य । जेवत क्रिकाम क्रिका क्रिका क्रिका । जाराय आयाम निका जान नार्द्र भारत भाव । क्रिकाम क्रिक

कैहि कित्रिश छाषुती। किन्नमट्ड वर्ग माहि मादन त्नह নারী।। ভর বৈত্র শঠতরি করিয়ে প্রকাশ। তার পরে क्र कि को मिनी मिल जाना। किश्ल निजास यिन मा छ।-ज़ित्व भारत। जत्व चाकि निनि मित्यु यात्व नम यत्त ।। কহি কিছু দক্ষেত করহ অবধান। করতালি দেও গিয়ে एथा भग होन।। आमात इहेन मन जवजीव (यटन। दिव क्षांत प्रकार में एक एक दिल्ला कि कि कि कि कि कि कि ে হঠাবে প্রকাশ। ইতোজন্ত শুতোনতঃ না পুরিবে काम ॥ इंशविन शंमा करत नम्न जनादक। रिजन আসার মন কুমতি কুসকে॥ বিশ্বাস করিয়া আশ ছাড়ি नाम आमि। दक्ति धारमा जाना द्वाद्व गादव जूमि॥ এখানে আমার আর বিলম্ব নাসম। তুরিত অগ্রেতে कि था वन वाति धात्र ॥ **२वेन मन्त्रात कान जन्न जनर्मन**। তাংগর কাৰাছে আমি রহিরে গোপন।। মশা ভালে দল্পে তাল মারিতে না পারি। পাছে শব্দর ভাবি श्रीह कर्त्थ नाति ॥ हाँ कि कामी शाहरत रव विभव यञ्चम । तनदन तमन निष्ठा कतिहरू माखना ॥ दहन कारत त्रहे नाती कटर शिंठ शार्म। आध भिद्रे मृह्यदत यक्तर छाट्य ॥ खनर ठोकूंत जामात निट्वमन । अकृत्री মোনাকাটা করে জালাতন।। আমার আশবের কিরেগরে কত বার। কাকি দিয়ে আসিয়াছি গোচরে তাহার।। বড়ই ছরস্ত সেই লম্পট ব্রাক্ষণ। আজি আর্ রাত্রে ভার হবে আগমন।। শুনিয়া ব্রাক্ষণ করে কেমন প্রকার। নারীবলে তাহারে ছাড়ান অতিভার॥ यनि त्मारत टकारत घटत करत वेला एकात ! **टक्सरन ध्रम** सम व्रका राव जात्र।। जागता प्रधन विदन बाहि श्राप्ति। भिरत यथन इत्त अर्कनिनि आित ॥ तिहुट्छा लाम्हे শঠ ত্রাক্ষণ গোড়ার। আমি পলাইতে পাঁবে ভোমার

ব্যাপার।। কামেতে আকুল তার কিবা ভাল মন্দ। বু-विमा कर्तर कर्म हैएथ मारि नक्त ॥ छनि निश्तिमा बिक वरण किवा कति। नांतीवरण ठण यांचे छाजिश्वे शूती॥ अह त्रक्ष क्रु हल यम रम मा काटम। देश विल छुडेकटमहत्त्र জন্য স্থানে।। নারীর করেতে বারি পাত্র মাত্ররয়। ত্রাক্ষ-ণের শিরে বোঝা মোট বিপর্যায়।। ক্রতগতি চলে তারা ত্যক্তি নিজ দেশ। পশ্চাৎ চলিমু আমি জানি সবিশেষ।। মনে২ ভাবি জার শঠতার গুণ। হবে কালি মুখে ভালি এমন বিগুণ।। যাহক কোথায় যায় করিব নিশ্চয়। পরেতে ংইল যাহা শুন রসময়।। ছুই তিন ক্রোশ পথ করিয়া গমন। দ্বিজের বাহে।র বেগ ঘটিল তথন।। বসিল শৌ-চেতে বিপ্র প্রারের আড়ে। ঐ ছলে সেই মোট আমি লই হাড়ে।। পরে পায় বেগে আর্গে চলে যাই আমি। নারী বলে ধিরে২ চল ওহেভুমি।। স্কুপথ ত্যজিয়া বনগথে আমি যাই। যেই মনে তার সনে দেখা নাহি পাই।। क्रस्थर निनीरनय रहेन यथन। छेडर र छेडर जन कति নিরীক্ষণ।। হার্নিয়া তাহারে আমি কহিন্ত বচন। যার তরে ত্যক্ত দেশ এই দেই জন।। দেখিয়া আমারে ধনী অন্তরে শিহরে। মুখেতে রাথিয়া মান সমাদর করে।। সেই খানে শৃঙ্গারের উপক্রম করি। অধরে অধর **ज्ञालि जनरममं धर्ति ॥ तात्री करर क्वन आत कव शत** হেন। এখন তোমার জামি হৈমু চির দিন।। উতলায় কিবাসুধ হইবে সম্ভব। বানা নিৰূপণ কর তথা দোঁহে রব।। পুরাইব অভিলাষ তথা ছুই জনে। ভুমি মম স্থামি लाटक देश राम जारम ॥ ५० वर्णि भूताहेल मानम आमात । कृश्लिम क्लान औरम बल गाँद आते।। नाजी करह देव रमुट्न ना आरह को जिस्ते। रमह इसरन अनातारम. क्र मुक्किन ॥ छनि करि नाना अपि हन

एगेंहे थारन। नाती तरन गर्करज्ञ जांच मरघाधरम ॥ পরে তার পিতৃধাম ছিল যেই দেশে। জামার পোড়ার श्रद्ध वाहिताम स्थाप ॥ अभि भनी वटन वागी कि नाम क হিলে। জিমারা না শুনি এলো তথা যাই চলে।। এতবলি ন্মাট মোর মন্তকে চাপার। মরাল জিনিরা ধনী আঞ আগু যায়।। পৌছছিয়া সেই দেশে কহিতারে আমি। এই मरनातम ज्यान रकाथा तरव जुमि।। धनी करक छेखन छ। ৰাসে গিয়া রব। আর কিছু দূরতর অগ্রসর হব।। কৃহিতে কহিতে কথা পিতৃ বালে যায়। আমার মন্তক হৈতে বোআট। নামায়।। বসায়ে বাহিরে মেরির লেল প্রস্তঃ-পুরে। পিতা মাতা তাহারে যে সম্ভাবনো করে 🗓 ধনী বলে পতি সঙ্গে করিয়া কোন্দল ্আসিয়াছি হেতাকারে नक्ष मक्रम ॥ अदनक करनतु श्रतं नाम जुक्कुक्रम । अाः সিয়া কভিল বেটা নিষ্ঠুর বচন।। বলে উঠ উঠ মুটে যাও নিজ ঘরে। বেতন অপিন কড়ি গণে লছ করে।। সবে বলে মুটে মুটে শুনিতে বিষাদ। সাধেতে ঘটেল রাজ असन अभाव।। निक्कंत्र कानिक मत्न विषय ठाष्ट्रीत। कथन ना द्हित छनि द्हिन छुड़। नाजी ॥ आभाद्य जुनाद्य धनी हा-খিল গুমান। রমণ করিলে আর না পাইত তাণ।। কতেক চাতুরি করি আমারে বঞ্চিল। আশার আশার রাখা মে-আশা বিফল।। উদয় হইলে আশা করিবে পুরণ। গহরি করিলে হরি করেন বঞ্চন। প্রাপ্তিমাত্তেণ ভোক্তব্য এইকথা সার। আশার যে আশা কছু না রাখিব আর॥ আশার আ-भारत मधु निकिकात शन। किंडखरम मध्य मध्य कतिरत अलगा देनद्राभ करदंत्र अटना त्य कदत्र इत्नी भूगोटनत ইতুপ্ত গ্ৰম্ম ভোজন।। কেবল আশার ভালে ম-वीहि क्षा जुटन । जाकारण कुटनत नात्र माटक देश बटन ॥ कारात कात्रन अहे अन मश्तिक । काँठा माठ बाहर उहि

নাহি ঘূণা লাজ। কিঁ জানি রাখিলে যদি জন্য কেই থায়। তবেতো নাহবে ভোগ বিয়োগ আশয়। তেকা-রণ আশার সুসার এই সার। আশার আশয়ে রয সেই তুরাচার।। জ্রীশ্যাম কহেন আশা কর্মের বন্ধন। আশা-ত্যাগী অমুরাগী জীবন মোচন।।

দশ চক্রে ভগবান ভূত।

রিপদী। শুনিয়া তাহার বোল, দবৈ করে হান্য রোল, পরবেশল কোলাহল হয়। হেন মৃত্ হাস্য করে, কেহ কারে জাঁখি ঠারে, কেই বলে ভাল মহাশয়।। কেই বলে এসংসারে, নাছি দেখি আর কারে, তোমা সম জানের সাগরে। অন্য কংহ ভাগ্যভঙ্গে, দরশন তব সক্ষে, অপাঙ্গে স্বর্জে রঙ্গ করে॥ শুনি সেই রন-भव, वनान्निक जात्न कथ, मगठतक जनवान कुछ । मम मूर्थ शर्माधर्मा, धरकत नरह रन कर्मा, मर्ग हिङ करत विभवीत ।। श्रुनिवाका करह वागी, कह पाथि प्र लाहिनी, ज्याबान जुल कि श्रकादत । এতেक वहन स्थित, क्रीमानि कहिएई वांगी, स्टरन तांका हित्व अखदत ॥ উषमा नर्गाद्व थाम, जीवन जाजन नाम, मश्राजां प्रकृति ্রভাগাধর। উপমা নাহি উচিত, স্বর্গে রাজা পুরোহিত, মর্ত্যে সেও তাহার শশুর ।। পাত্র মিত্র সভাজন, ভূত্য আদি অগণন, দানে রাজ। দ্ধিচি যেমন। ভগবান নামে তার, আছিল খেজমত, গার, শুন্তার রহাস্য কথন।। রাজা অতি ভাল বাসে, রোঘে তোষে পরিতোষে, অনায়াদে বিপদে নিকৃতি। সভাস্থ জনের কথা, ভূপতি করে অন্যথা, নহে রুখা ভুগার ভারতী।। সভাজনে যদি বলে, অৰু চারি शास करन, जनवान किनि यनि कम । तान वटन

তিনি হবে, ভগা নাহি মিখ্যা কবে, সভাস্থের সত্যে অপ্রত্যয়।। সভাজনে যদি কর, দেশ চকে মহা-শর, হয় হয় চতুঃধুব ধারি ৷ রাজা বলে আর কেন, কর মোরে জালাভ্য, ভগবান না জানে চাতুরি ৷ এইকপ ভগবান, রাজার স্থকপঞ্জান, যাহা করে রাজাতে তা হয়। পাত্র মিত্র দেখে রঞ্জ, ছাড়াইতে তারসঞ্জ, মনে মনে করিল নিশ্চয়।। বান্দুরে জনার কপি। মহাবলে তাহাজনি, রাজা ভগবানের তেমন। যদি রূপাকরে কালী, ইহার বিহিত কালি। চুন কালি করার ভুষণ ।। কহিতে ভাবিতে ভগু, অন্ত হৈল যে মার্ডণ্ড, ভগবান নিকেতন চলে। পরে পাত্র মক্লিপুর, ছারিকে করে वातन, ताक जाका छनत्त मकुरन ।। छनवान प्रतीकरा গিয়াতে আপন ঘরে, জারে তারে হয়ে কে। ধুমুন। দরিজ শিলা তারে, লোষ দও মাত করে, আসিবারে ছ্লুবে বারণ।। যুদ্ধি কেই তারে ছাড়, দুমনে ভাঙ্গিবে হাড়, িরছেদ উথনি তাহার। শুনি রাজা সভা জানে েই বাক্য শিরে মানে, ভগা নাহি জানে সমাচার 🙃 নিশি শেষ প্রতিঃকালে, ভর্মান ক্রত চলে, দ্বারপালে দিল দরশন। ভারিগণ তারে বলে, আজি পুন কেল এলে, তোমারে হে ছাড়িতে বারণ।। ব্যক্ত বোগ্ ভগবান, ফটক ভিতরে যান, দ্বারপাল কহিছে তথন। আরে ছুরাচার, কথা না মান আমার, ঘাইবারে না পাবে কখন। যদি যাও জোর করে, কেবা আর মানে তোরে, যারা মানে মানি তার মানা। এক প্র वाष्ट्राहरण, जरवरण श्रुमान स्कर्ण, नेटल देहरण स्क्लिटब क्रम्ता।। छनि ज्रात ज्ञा कार्रश, क्रम्मा मा जारन इट्ली, जामलात जडून महना । यनि जामि क्लान बदल (नशाहित्क शांति मुत्भा ना शहेत्व (क्वम यहना II अ**ए**

लावि जगवान, वियादमटक शृद्ध यान, अवादनटक छन ातवत्। पिता देशते अवमान, ना अंदिन अन्नवान, बाह्य नाहत सूर्यान जावन ॥ शाब मिल कटर जाय বুরি ভগবান রায়। ইইয়াছে **অধ্য**ু বিষ্ম। কালি-বাঁতে ভেদ তার, হয়েছিল বারোবার, ব্মন তাহার বার সম।। ক্ষীণনাজি খাস ঘন্ত আছে কি হৈল নিধন। লোক পাঠাইয়া তন্ত লহ। শুনি রাজা শোক করে रेवमा तांक जात घरतः भाष्ट्रीहेन कानिया इ.नर 🗓 বাজা বলৈ যেবাভারে, স্কুস্থ করাইতে পারে, দিব তারে আমি নানা ধন। এখানেতে বৈদ্যপতি, হয়ে হর্ষিত্ব অতি, শিবিকায় করিছে গমন।। পার মিত্র তারে কর, কোথা যাহ নহাশর, আনাদের রাখই জীবন। শুনি বৈদ্যরাজ কয়, কৃহ দেখি কি আশ্র श्रात अत रस एवं कथन।। श्रांत वरल जर्गवनिः पुष्ठाटन সভার সান। আমাদের রাজা তুচ্ছ করে। একারণেতে মন্ত্রণা, করিয়া করিচি মানা, আসিবারে রাজার ভ্রুরে।। বিলেষ অলেষ ৰূপে, কভ কুহে চুপে চুপে, খেদ করি তাহার সাক্ষাতে । আর বলে শুন কথা, কৃহিবে রাজন রুথা, ঘাইলাম তোমার অজ্ঞাতে।। ভগবান महित्राटक, थए एक अंति । तिरक, भटण बाटक विकछे वनन । लक्क्यूछ। वह करतः कह हैश नृश्वित, द्वारक टेनला टेश्ल रुष्टे मन ॥ এक लक्क मूखा लट्या, द्वांखांद्र निक्छे शिरम, मिथा कथा कर्ड अश्वाह्रक । मिथा इंशा সতা আসে, বৈদ্যরাজ যাহ। ভাষে, সাক্ষি হয় যুত্ সভা লোক ॥ স্বৰূপে কহিতে বোল, উত্তরিল সঞ্ ণোল, ভগবারের তনয় আইল । গলায় জড়ান কাঁচা, मनिन राम गोहा, मुखामात्य कान्मिट हातिन ॥ इत করে বলে রার, পিতা গেল যমালর, কিছু নাই তথ্য

इव किरम । श्रेनि तोका (थेम करत, भेक मुक्रा विव তারে, आह्र रुडू जाशत जिल्लामा जका नात मह क्रमः (शर्ग मिल निटक्जनः जात्रश्रदत्र दृश्य ज्यान । रहेन कालक मिता, नाहि करत ताकरमता, ভাবে আকাশ সমান া৷ কি করিব কিবা হবে, রাজারে क नागरेतः क्वा भाष्ट्र सूक्ष धमन । यनि नामि काम इंटल, प्रश्ना शाई मेरीशाटन उटन भारत फिर অভাজন ।। এতেক যুক্তি করে, শর্করী ত্রিমান পরে, উঠে ভগা করিছে গমন। রাজ অন্তঃপুর পরে, প্রস্তুর চতি ঘরে, পাইখানা রাজার কারণ।। তছপরি বট एक, मामना लामित्ह क्षेत्र, सूठांक तम अवनी अवन। জগবান সেই গাছে, নিশিযোগে বৈলে আছে, নিশি শেষে ভীষণ ভূপাল । কিন্ধর সুবর্ণঝারি। সঙ্গে চলে . হারি পুরী, দিশা হেছু চলে মহীপাল।। গিয়া সেই ছেদ श्रीत्म, बनिष्क चालन मत्न, निबद्घटन १४८०८७ मनन । (भर्टे कांटल फनवांन, वांकाद ममीटन यान, हक रहेटल नाभिया उथन ॥ मृश वटन जगवान, मटत कि भाइत थान, धकि व्यमञ्ज उद प्रिथ । श्रुनिवानी छगांकर, गर्स मिथा मश्नार, मखांबान मिद्राट ए কাঁকি ।। শুনিয়া ভগার কথা, সকলে আইল তথা পাত্র যিত্র জামাত্য সুস্কত। রাজারে বুঝার তারা, श्टल कि भागन भाता, मदन भदन खाइ कि विन्यु छ ॥ छश বাৰ মরিয়াছে, ভুতহয়ে এই গাছে, আছে ভবৈ মোরা **द्रिश नार्टे ।** जाशनि द्रिष्टि डाट्स, क्या कर बाट्सर, कात সিংক্ল দেখিতে নাপাই॥ রাজা বলে সৈকি এই, পারিষদে बरत करे, किंदूरे ना भारे मिथिबारत। कि जाविक्रमत्रभि আইসহে ক্রডগ্রীজ, নহে ভূত চাপিবে তোমারে।। নাজান র্মারা কারণ, মরিয়াছে যেই জন, ভুত দানা তাহার।

গণন। একেলা আসিলে রায়,পাইত আজি তোমায়,দ্ররা-করি কর পলায়ন।। কেহ বলে রাম২, কেহ করে হরিনাম পড়ে উঠে বেগে কেহ যায়। কেহ নিয়া ভূত বলে, লারে তারে তেলা কেলে, কেই নূপে লোহা যে,ছোঁয়ার ॥ जूठ२ रहेन भान, ताकांत्र ना यदत वाल, जनगति धरिन ্রাজায়। ক্রোড়ে করি নৃপতিরে, রাখে লরে অন্তঃপুরে, শবের সমান হয় রায়।। ভয় পেয়ে নৃপরায়, দশনে কবাঠি খার, হয়ে আছে জ্ঞান অচেতন। আগরক দিয়ে আরু করে তারে প্রতিকার, পরে হয় চেতন রাজন।। রাজাবলে ্রিং, এমন নাহিক হেরি, ভুতগত হৈল তগবান। ত্রাকরি श्यायां अ विकुलार लिख एम ७, न। रहेरल नाहि श्रविजान। দ্বিজ কবি কহে ভূপ, দশচক্রে এইরূপ, ভূতদশা হয় খান সাম। দলে যাহা মনেকরে তাহাই করিতৈ পারে, দলে। নপ না হয় উপমা ॥ দশতকে ভগবান, ভুততার এপ্রমাণ ভগবানে কে ভুলাতে পারে। জগত নির্দ্মিত যার, কিবা অসম্প্রীতি তাঁর, তাঁরে ভূত করে কে এসংসারে॥ সেজন অখিল কর্ত্তা, ত্রিগুনের ইর্ত্তা কর্ত্তা, তার পদে প্রণমিয়া न्याम । करर श्रष्ट भूगंकत्र, अनितनत्र श्रिक्टि रहत्र, व्यरस्रिक्ट ্ৰাঞ্চা পদে ধাম।।

লঘুত্রিপদী। শুনিয়া তথন, কংহন রাজন, শুনহে রসিক রাজ। মনোরম বাণী, তব মুখে শুনি, কথাতে ভোমার কায়। কারমন বচন,না করি অবণ, কথন কাহার ঠাঞি।। না কর জন্যথা, জনা এক কথা, কহ হে শুনিতে চাই।। বাজার কথন, শুনি দ্বিজু কন, কিঞ্চিৎ বিলম্ব কর । সব্-রেতে মেওয়া ফলমায় পাওয়া, কহে ইহা পুর্বাপর।। দৃপ কহে হাসি, ভোমারে জিঞানি, স্বুরেতে মেওয়াফলে। রাজার বিশেষ বুঝার, বিস্তার করিয়া ভর। বনমালী দ্বিজ, ত্যুজি অন্য কাষ, আবনে ইইল মন্ত।।

সবুরে মেওয়া ফলে।

পরার। তৈলক নগরে ধাম এক ছিজবর। রামানন্দর্ভ তার ছঃখিত অন্তর। জাপনি ভার্মণ মাত্র এক পরিকল -जिकात जेशदत यात जेनेत द्शायन ॥ मना निराननम भटन অর্কের বিহীনে। নারীর গঞ্জনা তাহে দহে তুব: গুরু। 🚈 नाइ वाञ्चना তादत करत निमुखिनी। आवानान श्रतगाम नि बान बानिनी ॥ बनारत थांकिएठ পতি इरत्रक्षि निधन'। **लोरथाफ़ शटकरम स्वाप्तः तारथ क्वा।। एराहे** व्यक्ति অভাগিনী পেটে অনুনাই। ভালমন্দ কোন দ্রব্য কার্যার मा थाई ॥ कालापूश लाटक द्रमश हूम कालि शादन । उत्पन्न অভাগা পতি আমার কপালে।। ভিক্ষা করে ছারেই দিব। অবসানে দ আসিব। মাত্রেতে দ্বিজ আপন সদনে ॥ পাদ্য আদি দূরে থাক সে কথা কে ধরে। অবিরত কটু ভাতে তিরক্ষার করে।। ঠিস মিশ অহানিশি বিমরিশ মন। লংঞ্জন कदरम तामानना नर्सका।। शिशानाम यनि हास जिल्लास বারি। কথন সমু থে কাহি দের তার নারী।। আপনার ত্রংখ বিপ্র যদি তারেকয়। মারিতে তাহারে উঠে হেন জ্ঞান इत्र ।। धरेक्टभ सम्म मना कर्भात्मत करता। घडांनात सूर्थ नारि कान काटन।। जन खन्म, प्राचि विश्र कटत অশুমান। নিশ্চয় ভাবিল মনে-রাশ্বির না প্রাণ।। একেমরি মনোছঃথে ভিকার নিভর। নারীর বচন খাড়া মভার উপর।। গলে রজ্জু দিয়ে জামি হইব বিরতি। নহিলে এ हुः । त्रम नाहिक निकृ छि॥ এত তাবি त्रक्ष्ट्रत्ख गहिता कान्या। उत्पट्ट वाकिल काँम काश्रनात्र भटन। रहिद्र कारत किंद्र जिल्ला जारानारम । कीन करतः धरत स्मान मिन धलटमरम्।। दशकोत्वा मदन जाटव विदश्चत जनस्। मर्द्राहरू ्म अत्रा कटल मर्सिटलोटक कहा ।। मेत्र अधिक मन्मिकि बाटक नः नारतः। (वरित कमन यिखता क्वारत **आमारतः।।** करनक বিলম্ব মনে সবুর তখন। সে বন ছাড়ায়ে বিপ্র যায় জনাবন। গ্যান্ত ভন্ন কের ভয় তিলেক নারয়। নিশ্চয় তাজিব প্রাণ ্রেইকালে হয়।। সে বদে বিপ্রের স্কুত মরিবারে চার। ম-রিচে নাপারে ভাবে সবুর কোথায়।। এইতো অনেক वान अठीउ हैहेन। अथन मनुत्र शाटह कन ना कलिन।। আর কিছু কাল আমি করিব সবুর। এতভাবি জন্য বনে हत्त विकायत् ॥ क्रारम् नाम। यन चाक्रम कृतिस। गयूट्सस यारम जिज तरिन रिनशा ॥ दिनकारन थक অতি কদাচার। নানা অলস্কার অতে শোভিতেছে स्ति। दिता नाम চूनि सनि त्म धनीत खादक। धकांकिनी বাফিনী মে, কেই নাহি সঙ্গে।। ভাগারে দেখিবা দ্বিজ বনেতে লুকার। দেখিবে মানস তার কি করে ংখায়।। সেই স্থানে কাম্যকুপ দ্বিজ নাহি জানে। ঞেবল বিষাদ ভাবে আপনার মনে।। কামাকুপ তত্ত্ব নারী জানিয়া কারণ। **আ**সিয়া**ছে কাম আ**শে ত্য-লিতে জীবন।। কুপের নিকটে গিয়া থেদে রামা কয়। ৰুনং কাম্যকুপ মৌর পরিচয়।। আমি হই নারী জাতি কুমারী রাজার। আমা সমা কদাকার নাহি হর আর।। একারণ সম্ব সুখ থাকিতে বঞ্চনা। অভাগীর প্রতি পতি সদাকরে ঘূণা।। সভিনীগণের সঙ্গে রজে রাজা রয়। আমারে দেখিলে কছু কথাটি না কয়।। কোন দোব নাহি मात क्वल कुक्ला। धर्म मन्न काम्यकूष मादत क्व कृषा॥ काम्यकृष विवेत्व सम मर्सकम। এक विमानम जी-वित करतन भूतेने ॥ इहे जाना बटल जाया यमि शर्फ जाता ইতোনই স্তভোত্তঃ অধনাতে যাস্যা একারণ এক বাকা

केका बाद्यि हिंदुङ। कहिएक मानिल धनी धर्मात मान्यादेक।। ज्यन त्यास्ति २व यूवजी नमाहे। आमात कछोत्क हुका त्व पत्क हुन्। अञ्चलि काम्युकूर्ण शक्ति कामिनी । উঠিল হীরার জিসি অভুত কাহিনী।। এক চোটে ধতে মুগু ছুইখান আর। দিজবলে সবুরেতে মেওয়ার প্রচার ॥ সবুর ক্রিক্ট যেই তাহার কারণ / স্কলভা কান্ম্যের কুল হইল দরশন।। এতভাবি ছিল্বর কামনা অভরে। চলিল কাম্যের কুপে পজিবার তরে ॥ তথাপি ভা-निट्ड मत्न कर्णक् मवृत्। कि कन विखात इस देशत উপর ।। কিঞ্চিৎ সবুর করি পরেতে মুরির । ভরস। হয়েছে মনে স্থাতি পাইব ॥ কহিতেই কুথা আর এক मादी । फेशनी इंहेन आणि विष कार्रिकी अधिरूट यू पार्वी অতি छः थिनीत त्रम् । क्रिकामाकृत श्रामित करत ज्वर में । शहर करह छेटकः स्टब्स् भी मिकि थाक। कामाक्रम छाजि आन अख़तीरक (मन्।। अमन अंशरी आमि साज्यी द्योवनी । नतिन आमात कान्ड ভাগি সে ছঃখিনী ॥ জন বিনা ছন্ন প্রান্ত নাহি দেছে। অমন দারুণ ছঃখ প্রাণে না সংহ।। অতএব यांन धर्म माणि शाक जूमि। मछत्रीन द्वाका यन दश নোর স্থানি ।। এত বলি সেই ধনী তাঁজিল পরান।। Cut (एम्स्) विश्वति मतिकादत मान् ॥ उथानि गत्त इत्क जादता त्न अप्रा हात्र । कदन्क मतुत्र , कति वदनद छ লুকার।। পরে এক রববতী জাসি উপনীত। বদন শ্রদ ইন্দু ভূষণে ভূরিত।। জাসি ধর্ম সাক্ষি করে নেও जारक था। वल कामाकून मादित कुनाकत नान ॥ চিরব্রোগী ছিল পতি সেই না, রহিল। অভাগির প্রাণে भाव मादि किंदू कुल ॥ धुराद क्लाटि পতি स्ट एरहे দারী ত্যজিল জীবন। তথাপি সবুর বিজ ভারে মিনে মন।। নিশ্চয় ত্যজিব প্রাণ নাহিক সংশ্রা করেক স तृत्त कि किता सात रहा। अंड जिनि रहेमान तदः विञ्चवत । आत अंक नाती यात्र वटमेंत किठतें। जानि दनी कामाकूरण काम जारन लेटको तर्म अक्रीयना व्यन মোর না বীহতে।। রসিকা বালিকা আমি কত বাক্য জানি। গণ্ডমূর্য পতি মোর তাপে দহে প্রাণি।। এবার आमात পर्कि इटव राइ कन। विष्ठादत किनिटव माइ এ তিন সুবন ॥ এতবলি কাম্যকুপে ত্যক্তিল পরাণ। দেখি বিপ্র আর বার মজিবারে জান।। তথাপি সবুর কল ক तिया जन्म। वटन विन भरदशाशटन द्रश्लि उथाये॥ ८२न-কালে **আর এক** নারী **উপনীত। কাম্যকুপ** প্রদক্ষিণ ক-রিয়ে হরিত।। বলৈ মনোছঃথে মরি পতির কারণ। দেখিতে কুৎসিত পতি অতি কুগঠন।। সতির নাহলেণতি मत्मद्र मरुन । मनाङ असूथ राटिश औरतम मह्न ।। खरहार মরণ মন কথ্য না চায়। আঁপি মুদি রোগী যেন পাঁচন ना थाया। अना अंदन महान नडी ना केंद्र व्यव। क्यहन পরের সঙ্গে করিবে রম্ণা। অতথব কাম্যকুপে ত্যজংহ পরাণ। এবার হইবৈ পিতি মদন সমান।। এত বলি যেই नाती टाक्षिल कीरन । कंटेन्नेत दिक्वत डाटव मटन मन ॥ प्रिक्त न्यार्ग विक मृतूरतत्र कवा। একে? प्रिक्ष शक ईहेन ध्यवन ।। विकर्ताल पक्षि भामन भूर्ग करत । देशत अ-ধিক ভার মেওয়া কোখা ধরে ॥ ধর্ম সাক্ষি করি বিজ वितरक छर्थने। निर्माहि वह इन्ध्र गावल जीवन ।। এইনে সময় মোর ভন ধর্মেশ্বর। দিনহীনে করি রূপ। जाना भून केता। लेखिन व गातिर प्रेट शक नाती। जनात्त्व रेशेता रहेर तमेंनी जामाति। प्रेट जिलाव अक जना नार्टि गाव। कलाकित धर्मातीक केन्ट्रिये अस्त বলি মরণ ইইল মেই বারে। কিবা রূপ মেওয় ফল সবুরে
প্রচারে।। সবুরে ইইল মেওয়া মরণ সময়। গলে রর্জ্জ্রানিলে পরে সংখালাভি হয়।। সবুর করিয়া বনে শাসিল
সে জন। তথাপি সবুর করি যায় অন্য বন।। সে বনে
না তালি প্রাণমার বনাস্তরে। সবুর করিয়া বিপ্র কামাকুপ
কেরে।। এক ছই তিন চারি তথাপি সবুর। পাইয়া পঞ্চম
মেওয়া ফলিল প্রচুর।। ইহার অধিক মেওয়া আর কারে
বলে। রেণ সবুর মেওয়া বিপ্রের কপালে।। রতি যিনি
পতি আর নপ্ত ভীপে রাজা। অজর অমর হবে বলে
মহাতেজা। ত্রিস্থবন জিনি বিদ্যা পশ্তিত হইবে মদন
অধিক রূপ জ্যাত্তে পাইবে।। সবরেতে মেওয়া ফলে
লগাকে মান বলে। তাহার ব্রাস্ত এই শুনহ সকলে।।
ব্রেরত মেওয়া ফলে সর্বলোকে ভাবে। প্রকাশ করিল,
শ্যাম কৌতুক বিলাসে।।

विश्वति शिमिशा छाहात वागी, हत्यिक सूर्यान, विश्वदित करत थना वाग। तांका वर्ता छन् कथा, खनरन यान्य नाया छरत यांग्र गक्न विश्वाम ॥ बाहा छन हैका हु। कर तर्याम गक्न विश्वाम ॥ बाहा छन हैका हु। कर तर्याम मिन बाहा कर्या कर्या कर तर्याम अस्ता कर्या कर्या वांचा। विश्व वर्षा कां कां निश्व कर्या कांग्र । विश्व वर्षा कां कां निश्व कर्या कांग्र । कांग्र विश्व क्या कांग्र । कांग्र वर्षा कांग्र कर्या । वर्षा कांग्र वर्षा कांग्र कर्य करिया कांग्र वर्षा कांग्र वर्षा । वर्षा कर्य करिया कांग्र वर्षा कर्य करिया कांग्र वर्षा । वर्षा कर्य करिया कांग्र वर्षा कर्य करिया कांग्र वर्षा कर्य करिया करिया

রাজা বলে বল বল, শুনিতে ভাতি রসাল, কহ দেখি তা-হার উদ্দেশ।। একথা কেমন আর, কহ দেখি পূর্বা পর, নাহি জানি কিবল প্রচার। রাজার বচন শুনে, দিজশ্যমি ক্ষমনে বিবরণ কহেন তাহার।।

িধার ধন তার ধন নর নেতে। সাঁচর দই।

পয়ার। আসন নগরে ছিল এক ভিজবর। আপনি রমণী মাত্র ধন বছতর।। শত স্বর্ণ মুক্ত। সুদ পায় প্রচি দিনে। এক পাই নাহি খায় সঞ্চয়ে যতনে।। যদ্পি রমণী তার কিছু স্থদ নর। তাহাতে লাঞ্ছনা করে দিজ महाभवा। अमन क्रुश्न जन पूर्वरम ना शास्त्र। अब नारि ২য় প্রতিত যে হেরে তাহাকে।। রন্ধন ঢাপারে নেবা তার নাল করে। স্থারণ মাত্রেতে তার তসলা বিদরে॥ জেলে-কালা পরিধান থান বুকড়ী অন্ন। এক কড়া মাত। পিতা নৰ্মত্ৰেতে দৈনা।। এইৰূপ কত কাল গতায়াত কৰে। বাতিক উর্বন রোগ ঘটে তার পরে।। ধন্ত কড় করে वष्ट्र अनारे नार्रन । कविताक नार्रि प्लटब व्यक्तिया क्रुशन ।। বিবাসায় প্রণি যায় ওষ্টাগত প্রায়। তাহার রমনী ক্রেন্দ वरम शर्म श्रुष्ठ ।। भरत्र ए स्रिक्ष (१०० व्यानिया भर्कता । গঙ্গাজনে ভিজাইল ছুঃখিত অন্তর।।। পত্রেতে লইয়। তাহা পতিরে যোগায়। বদনে পর্শ মাত্র আড় চক্ষে সাধ।। আঁপি নাড়ি ভাড়াভাড়ি বলে উত্তহ। আমারে খায়ালি কেন এমুচির গুই।। আহা মরি মরে যাই তোর ছুঃখ তরে। বিধবা হইলে কেবা আম দিবে ভোরে।। ত্রা-कारी वरलन श्रीम कंदर अथन। माठ जन दीका है है देन-थिছ य धन।। जैसाविध नक्षत्र करते हैं महासत्र। दिन विज পिए जरन मारि करू गात्र। अनेत भूतिया अने करू ना

थारेटन । क्यूबा इटव बढ़न किना निवामा कब्रिटन ॥ अटक নক্তে নাহি দিলে বলকার তারে। শতকোটি মুদ্রা রাখি য়াও यम भूटत ॥ अञ्जैव क्लोटनटल ट्यानाट्यान इत्र । वृक्ति-পাম তব নহে তার যার ব্যায়।। এখন কি কর আর সক্ষ कवा ,याद्वी भानकत शरकामक सूर्वां भा**रे**द्व ॥ विक বর সেই কথা **শুনিতে মা পায়। কেমনে পাইলে** চিনি ाशादत सूर्वाम ॥ काँकोटनट कत मिटम किथिए निरादम। भित्य शानि वतन जानि मजानि जांगादेव ॥ उविन जाः ক্ষিয়া চিনি কিনি আনিয়াছ। একি ক্রেন্টা হায় কি কর্ম করেছ।। শত হস্ত মাটি তুমি করলো খনন। এক কড়া मा भिलिटन छन कमाठन।। येक आना ठिनि कना घु हिन সকল। গড়া**ইলে কোথা থাকে** কলসের **জল।। হাসি**য়া ংমনী বলে তবিলের ময়। এইতো সুদের সুদ তার ব্যাক ধ্র।। এমন কেমন করি করিল বিধাতা। জমার খরচ শ্বনি ছিজ পার ব্যাথা।। এইত্তো সুদের সুদ্ধ এক জানা হলে। জার পঞ্চদশ দিনে এক তল্কা মিলে।। হায় কি করিলি বলি করিমে কন্ধার। ফেলিল চিনির জল বহু স্থবিস্তার।। হাত পাঁচ সাত পরে ছিল কল্পতক্র। পাত্রের সহিত জল ফেলে,বণ গুরু।৷ ভগায় শিবের লিঞ্চ আবি-जीव हिला शकावन न्यार्ग मार्ख बतमा रहेगा। वत् লহ বলি হর ডাকেন সম্বর ৷ তাহার ত্রান্ধণী পরে করিল উত্তর ॥ সকল ঈশ্বর তুমি ব্যাপ্ত চরাচর। তোমার রূপার ধন আছমে বিস্তর।। অভাব কিছুই নাই পতির কপাল। অইরতা ভোগ যোগে বিষম অঞ্চল।। এত নিধি দিরে विधि रहेल वंश्वन । अक्ट्रेकू किनि मांज उपनित जीवन ॥ अवरुधव राक गम थाकिता कि श्रव। हिमित्र वनम श्राप्त इंश कामा उर्दा। अहे देत तक क्त वामात वहता। क्लिन करत यम लेकि जोलनात घटन ॥ इत कम धारे वत

क्तिएक मा श्रादित। वद्रक लह देव हुन्न स्वमावद्रक्रिय । साथ रव त्रहे विना दक्वा करत बाह्य विकास तका करत क्ल श्रानम् ॥ एतः পुर्क्त क्रभन जोष्टिन ग्रंड खन । नाना भन्ना कृति धम देकल फेलान्ड न। अगरथा द्राविहा सूखा ना कहिनी বাবে। মরণ কালেতে শুদ্ধ ভাবিল বিশায়।। ঘটের ম ধ্যেতে তারে করি যে গণনা। সেধন তাহার নর ভারে योद्र भानः॥ (गई वश्राम खरम छोश (च कविम १०१३)। ्प्र धन छालांत गर्य नाहिक प्रश्मन्न ॥ ताथिएल कि २८५ मिधि मा इहेरल जो । दाग कतिवादा शास्त्र मादा चारह কার। অতএব 🕾 পনের যক্ষ মাত্র তৃমি। জনং কাখি-কারি আছে সত্ত্য কৃষ্টি আমি।। বিপ্র বলে বে কেমন শুনি ইতিহাস: স্বোপাজ্জিত ধন মোর সর্বতে প্রকাশ।। प्यत विका भाँकि **भारत करत्र हि मक्षत्र।** दिस्मास कत्रह আছে। যোর খন নয়।। হর কংং নেতে। নামে রজক রুমনী। এখন সকল ভার অংমি ভাল জানি।। সে বহি ककुना करत त्यादत किंदू रमग्र। स्म कि मा स्म ज्यान एकाट्ट जश्मग्र ।। **एनि विश्व शक्षानटन वटन** ट्यादन वानी । अञ्चादम अञ्चाम अदन कत गृत्वभानि ॥ अञ्चन्त्राम হৈল শিব বিপ্র কোপ মন। **অ**রিগ্য হইল মাত্র পেয়ে দ্ব-শন।। ব্রাহ্মণ ভাবিছে হর ভাঙ্গেতে নিপুণ। আমার আপন ধন ভোগি অন্য জন।। আপন ছাজ্জিত ধনে क्वां ि अश्म नाइ। धावांनी क्वां अगट अगट यानाइ।। क्रमत्न धार्यांनी श्राय प्रियंत कार्य। अञ कारि विक यह जारव मरन मन।। विरुक्तः श्रीमाम बरन চিনির রাহিকা। জাশা মাত্র সার ভার জলে মরীচিকা।।

(क)कूक विकास ।

সমুদ্রে ভিজের সকল ধন লুকারে রাথেন ক নেতোর গ্রাপ্তি।

ত্রিপদী। শিবের শুনিরা বাণী, ত্রেন্থে সৈই গাঁও धुनि। यटन यटन केतिल विशेष । यक आदश मुखा शिनु, বিক্রি করি ততক্ষণ, হীরামতি কিনিল অপার।। করি करताय मध्न यरमर उन्न रहा, शाद्य मानी पृति कति नह । তাহার কারণ দ্বিজ, আনিয়ে ভাকর রাজ, ভার কাছে কহে পরিচয় ॥ স্পামার বচন ধর, প্রস্তির খনন কর, খেন वक्ष्यन लाइक शादक। ऑदं भीट्य (होश्माति, कर्त पिर्धि कातिन ति, भार इसी निवं ए छोत्रारिक ॥ "स्टान रत्र जै-ভোষ হরে, করেতে করেন লয়ে, নির্মাণি করিল পার-পাটি। তার মধ্যে রাখে ধন, যথা সর্বস্থ ভাপেন, সমান अस्टर इस कांगि।। निकान निकृत करनी निर्मित्यार দিল কেলে, নাহি তাহা দেখে অন্যজন। আপনি তীরেতে জানি, হইলেন তীর্থ বাসী, করিলেন কুঠির বন্ধন। ধন শোকে দ্বিজবর, নাহি যায় স্থানান্তর, অহুনিশি বসি भारक उथा। जाशंत्र निक्षा यथाकारण, नकल नाहिक দেলে, শিব বাকা করিতে অন্যথা।। পরে শুন বিবরণ। ाई (नट्नत त्रांकन, यानिका कातन कंटत याजा। धाम-বাসী নারীগণ, আইল কুষত অন, গমনের শুনিয়া স্থ-ार्डा ।। श्रेष्ठारकंटच खरनर, किया माध कात मरन, नकरन সুধান মহীপাল। যার যে কামনা ছিল, আনিতে ভ্রাপ कार्न, भारत माडा करिन बनान । बाका बान स्था-পাৰী, তোমার বাসনা কি, নেতো এড গুনি ৰাণী कर्टरी समि मिरित महा कित, नहतन প्रस्त रहत, शिं जांक मीर्च यम बट्ड मिलिबिट्व देवेबाटन कुमि, कानिट्व कहित्व आमि, धेर्हे सिन्नि मन अक्रिताम। तिरे कथा

রাখি মনে, চলে ভূপতি পাটনে, বানিজ্ঞা করিয়। এনে নাম বিজাদিতেই জলে, তরি তার মাহি চলে, চড়ার লাগিল দৈব ফলে। নামিয়া নাবিক ্মাণ, ঠেলাটেলি া তক্ষণ, করে পরে নে তরণী চলে।। ভাঁড়ি মাঁঝি জন शारम, मिहेल क्षेत्रत नारम, चित्र छोहा, स्मर्थ कहे मन। कि आहत अद्यारक बदन, अम मन बादता मिरन, बुरन भिना छाडि ऋषठेन ॥ **खान्त**न दमिश नव्हान, निदत कर्ता-ঘাত হাতে রাজা কহে আনরে ছরিতে। নেতো ধোপা-निव एटट- रिवि এই দিল भाट्त, দिব তারে বসন কা-চিত্রত ।। এত বলি তবি লয়ে। চলে রায় ক্ষ হয়ে। ধীরেং চলিল ভ্রান্তা। যথা যে নেতো ধোপানী, খারে বোলে कारक कामी, भारे चार्के यारेग्ना ताजन ॥ এই नह वनि ্রারে, প্রস্তুর জলের ধারে, ফেলি রাজা যায় নিকেতন। াইয়া আপন ঘাটে, অজন সহিত উঠে, জয়রব হইল ভ্ৰমা ব্ৰাহ্মণ তথায় থাকে, ভাবে পড়িত্ব বিপাকে, **এ**ই । । इ बांभानी शक्ती। कहिए नाहिक भारत-রাজা দিন দিল তারে, করে দ্বিজ মনেতে গুমানি।। পাট লয়ে নেতো রাঁড়িকাচে তাতে ধুতি সাড়ি,কত দিন প্রে स्थम वक्र । भूतिल स्वाएन कल, स्वाहाए वातित वल, काँ छै। পঁটি। যোটাপায় ভঙ্গ। অরং করে নিধি, নেতো বলে আজি বিধিন ইইয়াছে আমার সময়। তাড়াতাড়ি ভরি রুভি, আর ধার বোল হাঁড়ি, লয়ে যায় আপন আলয়।: षिक (मटर्थ क्लांश मरम,वाति वर्ष क्रमग्रदम,वरण विधि क्रिक বিভয়ন। ধোপানী ভাবিছে ভিজ, বছ দিন করে পুজ, এই স্থানে করিয়ে জালন।। প্রকার করিয়া তারে। অর্থ এইছি कदिशादत, न्तरण ब्रांफि छाट्य महम मन। यरन किछू হীরা মতি, ভিজেরে করি ভকতি, আজি আমি দিব এই-क्ष्म ।। बिमामिष्ठित छान, तथा शाक अक्षाताव. तिमान

ाँ कि ना अनि कातन । विस्तात विकेष प्रदेश कात अपने कार्य कार्य कार्य कार्य कर्षात कार्य कर्ष्य कार्य कार्य कार्य

নেভোর দধিকোজন।

भगत । **अरुगंछ गखर्मेछ लहेब्र दिशेलांनी । विद**श्चत ने স্তুলে হাতে ক্রি যৌড় পানি।। প্রনাম করিয়া তারে হানার্থে কয়। গরিবের প্রতি ক্লপা কর মহাশয়।। জা-गोर डेभरत काला कार्य यात्र सून। टेक्नीटर क्रूड़िंगरविश्व क्तर बारून ।। यटन भानि पूत्रशेनानि पूत्राहात । भूमेन्ड करिएक भा छि स्ट्रेटव छामात ॥ खात मीमा क्रूबाहव क-िन हर्मन । विस्थान महिलादमें दर्ग जादन मन ॥ राज्यान अदब तामा किटत घटत यात्री ट्रेकेमेटम जाब्तटन নিবে ভাবিছে উপায়।। ব্রাক্ষণের বৃঁহিম আমি রাখিয়াছি ধন। পুনশ্চ হরিব তাহা করিয়া কেরীন।। ভারিতে২ ভথা 'शांश थक अन। 'मधित शमता माटथे मिसे मत्ममा। (नटका कटर अन रशांच वहन जामाते। यमि अहे खिलवदत प्रवि দিতে পার।। এক শত মতি দিব দধির ভিতর। রাখিয়া জাইস তুমি বিপ্রের গোচর।। ভৈমেরি পধির মূল্য এক जका नर। आमात माथात किटत क्षेत्राद्ध ना कर।। छ-निया क्षियाना मधि महेट्य शंगता 💢 विद्यक्षे मिकंषे शिया **উ**खतिन दता । यदन चामि चडोजन नाहि भूना तन । কি দিয়ে ভরিব ভবে না জানি বিশেষ।। ত্রাক্ষণ জগত **ध्वर कण्णाठक मद्र।** किलिक **यूत्र मधि नर मरा**मन्न ॥ अड क्षांवि मधि ताथि त्म कटत शमन। त्याशंत कत्रित्व विश्व कहै-श्राद्धि मन्।। (इन काटल वर्ति त्रांब नकत षाहेल। नच्यु देश দেৰিয়া দ্বি তুলিয়া লুইল ।। ভয়েতে ত্ৰাহ্মণ কিছু বলিতে ना भारत्र। महनर कार्यनाम विद्यत क्रमारत्।। कालकताः <u>চিচে বিভাই কৰিও মৰে। হেন কালে সিপাই আইল</u>

मिनियादम् ॥ कटेर दिशीदमङ्गा कार्माका मेनामी माना किन । ্নি নেতে: কহে মহারাজ আবদিজ্ঞান্তরাম্নরসন পরি-भार कर्तरमल । मिथिया नकत रस अञ्चि स्त्रिये ॥ पटल ্রতী বেরাপাশ আওর কুচ নাই। বলিয়া দহিচো নিজো क्षेत्रक विशाई । इंडेल अधिक दिला अअदन छेनम्। पृषि নাম প্রাংহার করিতে নেতো যায়।। ঢালিনের পাথরে দ্বি ५ छे भर्छ भरतः। वि लाट्ड जिङ्द्र वृत्ति मग्रदम् त्महादत् ।। াট্ড খনেক মতি শরের সহিতে। দেখিয়া গোপানী ংবে লাগিল ভাবিতে।। ক্রমেং শত মতি পাইল বখন। विकास अभ्यान पित्र का निन एथेन ॥ क्रिश्वटत श्रमारमा कवि रक्षकिमी नत्न। कांत्रमध्य किया शांध कृषि माहि नितन ॥ ামি অতো দিনাম যে করিয়ে বুকতি। না লইয়া কটবিপ্র ুর্ব নেট প্রতি।। প্রকার করিয়া পুন দিলাম তাহারে। প্রিচাক এটো ফিরে আপনার ঘরে॥ তবেতো এধন মোর নাহিত সংশদ। এত বলি মতি ভুলি,দবি, অন খায়।। হা-भरक अभित्क थात्र भात रित छन । भूनरक भूतिन অত্ন গেরে বহু ধন । তদ বৃধি পুর্বাপর ছোট বড় कर । उथांस जुनना (नम ना कारने कातन।। इत्र अक्षात होते प्रार्थ अहे । यात धन कात धन नत-भीतारको नामा महामा विकास समितिको । १८०० । १८०० । १९७०

মথু রেশ ভক্তাচার্য্যের উপাধ্যান।

বিপদী। নবছীপ প্রামে বাস, নামে ভিজ কৃতিবাস,
বিদ্যাবান সদা জ্বানানদা। মুখাপ্রে সাহিত্য ক্ষৃতি,
বেদান্তে পণ্ডিত অতি, জ্যোতিনায় শাস্তে হীনদ্বন্দ।
পুরাণেতে স্কপণ্ডিত, বুজে জালিকস জিত, কর্মবিদ্যা
সামর সমান। একাবণ নুর্পতি, দিলেক তার অখ্যাতি,
বিদ্যা নিবি সাগর অখ্যান। রাজাব সভাপণ্ডিত, বিচাতে

पूर्व कि के दहरन (छाराज स्नावरत । ताक्रमञ्जू पूरक ভূমি, শত বিঘা পুরা জমি, শালি শত বিঘা ভোগ করে ॥ এক পুত্ৰ পভিতের কেমন কপাল কের অন্ধ প্রান্থা-किएक किन । रशम वर्गत त्यान, करत माज शेखरशान, नाहि करत समहत्र जमन ॥ चित्र धर्मा (स्तरमया, कतिर्छ কহরে বেবা, গালিদিয়ে তাহারে যে কর। ডাগু। গুলি বদা খেলে, লইয়ে ইতর ছেলে- লিখিতে না পার্য়ে ছু-क्रम ।। मिथिया, छाञ्चत छाछ, मत्म इन द्वाकाषिक, यत्म शदत अनदत व्यथम । क्लाइति स्वस्टा मृगात्मत क्षात्र ররে, বিদ্যাতে বির্ণি ও কেম্ন । এখন বলিরে আমি, विमानिका कर पूर्वि, ना श्हेटल नाहि आसाजन। आमात टनम सूर्य, मतरम तिर्म **प्रःथः, नाहि एठात् उनथित यमन** ॥ এতবলি নিজ কর্মে, গেল ছিজ.গুই ধ্রেছ ফিরে আসি ল: प्तिथे उन्ह । पटल काथा मथु दत्रम, तमनी कहिल भागः कुनत्यटक क्यांनि (थलात्र।। स्तर्हरक जानानी वटन, আর কি ধ্বৈ কৃহিলে, খেলাইতে নিয়াছে আবার। ওনি দ্বিদ কোধ ভরে, কৃষ্টিছ নারীর জুরে, শুন শুন বচন আ-मार । आमात माथाहि था छ, यमि धर्म भय हा छ, अझ ष्टिक म्हित्त क्षित्त । जन्म क्रित्त क्रिम, श्रम् किनाभ আমি, অন আজি দিলেরে তাহারে ৷ লোবধ ত্রান্ধণলক भाभि शतन निरम जन्म, ताई रक्ष्यू करिएस लामादत। अन যদি চাবে তবে, ভস্মরাশি ছারে দিবে, এমন সন্তানে কিবা করে।। সভ্য করাইন্নে পুন, করমে ভিজ গমন, यथान्त्रात्न आह्न अद्भाकन । खानानी जानिया घटत, ज-खदत दाप्तम करत, कुशूरखर्ड मार्डी जालाडन ॥ पिता इ-हेल प्रवर्भय, अवारमद्र मश्रद्धन, जन जारन जानित वा नाम । जनदममा हेन्। बहुत, ब्रह्मन, जिल्हात एटन, खायानी विषय छाटेन मात्र ।। मा स्टब्रान्डोट्न अनुत्मा निटन दक निटन

অন্য, স্বামি আক্লা কাইটিউ লংঘন ভাষতে শপথ পতি, निहादह बामीरत अछि, अर्ड अपि इत्य वित्कन ॥ जेजब লদার রাখি, ভাঁহার উপার দেখি,দিল **পর্ম স্থদ্**শ্য স্থর**স**া ানা উপ্রাব পরে,ভক্ম মুটা রাবেধ ধারে,মনে হয়ে অত্যন্ত াবরস।। বেন নিদায়ণ পতি, শুনি তাহার ভারতী, ছাই-নিশ্ন সোণার বাছার। তন্য গণ্ডুৰ করে, পঞ্চ আনি করে। ব্রে, শেষে শেরে জন্ম রাশি ভার।। হেরে জননীরে বলে ছাই কেন অভে দিলে, শুনি র/মা বলে বিররণ। পণ্ডিতের भूट रहार मीन्द्रलाक महन्न नहार, मन्। जूमि कत्रहा खमन ॥ গ্ৰাৱণ তৰ ভাত-শপৰ্থ দিল নিঘাত, ভাই ছাই দিলাম ্তামারে। জননীর বাণী শুনে, অত্যন্ত বিবেক মনে, উঠি कुछ नमकाद्र करत ॥ काष्मिशा छन्त्र करर, अरे अशमिटत करश व्यक्त त्याद मश्ख्य श्रामा । नाशिष्ट्रिय ना क्रूष्ट्रियः अस्मरण নাহিক রবঃ মাতা পিতা কার হেন বাম ৷৷ কুপুত্র যদাপি क्क कुमार क्येन नम्र, लाक भारते अहे कथा करहा (म कथा १इन वाथा, अमन मा प्राचि काथा, कांत्र माछ। लिए। ट्रन तट्र ।। क्रिट्ड विषद्ध त्कृ, काद्य म। (प्रथाव छ्रा, স্বাদে গ্রাপে ছাই দিল মায়। এত ভাবি জননীরে, তথনি धनाम करत, विरवरकरण वरन हरन यात्र ॥ श्रीभाग करश्न भक्ताः विध्वक ना लाटनं छद्दे । व**छ नाहि** क्लान छन शाह । র্পার বিবেক বর্ত্তে, সেই নর ধন্য মর্ত্ত্যে, নমকার কোটি তার **পা**য়॥

> ্মথুরেশের প্রবাস গমন ও জন্তদ মুনির সহিত মিলন।

পরার। মনেং বিবেক বাসনা করি সুত। নিজ দেশ হাজাইরা ঘাইল ছরিত॥ এক বস্ত্র পরিধান ভিতীয় র-হিত। সরোবর নীবে তাব জাহাত বিচীত্র ॥ পত্র সত্তর ক্রমে

आहि वर्शन यो मिटन। जीवन शहर १६५ पूरक पार्की भटन ।। इतिन मिर्विष् तेन माहि छात जान । निकास छा-ক্রিনে প্রাণ্ জীবনে নিরাশা। অতিব কানন মঁথ্যে জ্বানং যায়। কেনল অরণ্য তথা দেখে ভর পায়।। খনচর নির ত্তর পরে উচ্চ রব। শুনিয়া বিজের সুত শারটো সাধব।। श्राप्तिकर्या व्यवद्रभट्य मोसिः क्रांट्स् तन्। कित्व कृत्रभाविक श्रीम अवस्त । करने शर्फ करने छेट्ठे करने संज्ञीकरम । राज करिया कारना कूथा प्राथीमरल ॥ अहमा श्रह रा ্র দর্শনর। প্রভাবে উত্তরে পরে শীর্ণ কলেবর ।। দেবে তথা এক খানি আইয়ে কুটার । অপুর্বা নির্মাণ कान हिन्द मेन्सित।। जांख भट्यत होल जात त्रेही दंबदन-भारत । क्राञ्चा त्र ब्रह्म भिरम वास्त्रा कृद्ध-स्टूबिखाद ॥ स्ना धत দি কবর দেখিয়া তথ্য। অচল হইছা তথা করিল শর্ম। sহরফালে আন্তর্গারি গেল দিবাকর । **সালিল কুটা**র পরে त्मेर् हृनिवेता। नेत प्रार्थि सूनि क्टर **इपि क्ला**स अन्। महा वाका कर स्मारत ना कक ७७न ॥ भिष्ठा बीका जनि कर করে প্রভারণ ট ভবেত করিব ভক্স দেখিবে ওতথ্য । क्षांन एक् वाधी करक मध्रुरत्न िश्रान्तकार तक्तर कतिका विदर्भ । जनमीत दिस कर्म अति स्मिनत् । इंशा पुरह চাহিলেন ভাহার উ**পর।। না কান্দর রিপ্র করে বার্মার।** তে। যার পকল ছংখ করিব সংহার। । এব বিদ্যা যে পনে তর আহে অভিনাম প্রবশ্য তোমার আমি পুরাইব कार । भागाम राशास्त्र के कारमा आत । नेका क পাইলে এবে ভবেইবে পীর ॥ স্পর্নাধ

गर्भ रतरनेत गर्म निक्ति अ नेन्द्रीश योजा।

भागात । अनि क्रिंड १क कथा। सूर्याहे अधन। मीका क्रिका इंडेम्बाइ कि॰चा ए रक्षन।। सर्थ द्वान बंदन अन् क्रि

हुई ना कानि। स्त्रायात मर्गन सात्र ना स्रोट सकानि।! लिम इंडे मुनिताक नटल टाल नटिं। साम कति लाहैन ঞ্জত আমার নিকটে। আজি তবে সংক্ষার, করিব তো-यात । श्रमि साम काँत श्रमः चाहेल कूमात ।। अवादनहरू कर्णा उक्र इट्स अपि तहा। - निर्दे एर अमृता धर्म गृहा জ্বাগ্য হয়।। বাহ্য কার্য্য খুন্য হয় জানেতে বিভেরে। ্টিনকালে মথুরেশ আদিল গোচর॥ স্বন্তি বলি নিজ এক্স তারে করে দান। পুনঃ হার হার করে পেয়ে বাহা कान। कुमात किर्इ किन इहेल वियान। अपि यटन शांकि मम घष्टिल अशीम।। जकन रेनरवत दर्भ कि माध् काशात। निम्ब्य श्रहत ग्रहा श्राकित्य अधित्।। मथू दत्तुर्य न दिए न न कानि कावन। यह मशमञ्ज नीक। मूनिव ন কর।। সেইতে স্কুজীব মহ দিল ভিজন্মতে। কত পরিশ্রম কৈল তেতন করিতে॥ খনে বদি রাশি রাশি মন্ত্র জপ করি। শত শত পুরশ্বর্ব্যা তাহাতে প্রগরি। मालनात मह भारत कतिराल अनान। कथन मारिक इत मार्यक्त लाए। क्रिया बीज मन्न ख्टल शीन शहेन सूनि। প্রকাশ হইতে তাহা নাহি রহে প্রাণি।। ছঃখানলে রজ-, নীতে খুনি নিজা যার। কালী কালসর্গ ৰূপে দংশিন তাহার।। বিষের বিষম জালা ত্যজে মুনিপ্রাণ। বিপ ती व दिन के देश हैं के कान ।। वदन वित्रप्ति कुः ये जिन वर्नवम। रेमरवर्ड मम्ख्या यमि इहेल मिलन।। अछा-श्रीत कर्म काटव त्मर्मा तरिल। श्रामात जीवरन स्थात नाहि कान कम।। मतिख देवकूर्छ रंगरमे ज्यान असूर्य। भात काटत मा एमथाव भागात व्यूच ॥ दुअटव्हिन्न वर्ष আশা হইল নিশাল। হেলে নেযায় হাল বিধির হাতে ভাষার কপাল ভাঙে এমনি প্রাক্তনী। বোড়ার চরণ থালে পড়ে ভাল জানি।। এই রপ ক্রম

ने ए थिन करें जीना। वरने निमानन विधि मादन मिन शना ॥ वाहनाम जिल्हा के बोह्न । उति । वाहनीत করিন মনে বড় জালা করি।। আচ্ছিতে স্ক্রীণ কুলে छति छूट्य । श्रवनः छक्त निमानन खटा ॥ नक्त कर्द्रम करत के नाटन दिकन । अंतरना के के में महि दर्भन কল।। যাহাহউক গতি করি অভেষ্টাচরণ। অগতি হ-हैटल हम अध्रुष्ठ भारत ।। किन्तु जीवि द्वारंभव अपर्ध विना গতি। অকর্ত্বা হয় ইহা প্রিতার ভারতী।। অতএব সং-প্রতি করিব প্রতিকার। এরোগের মহোবধ কি করি वि गत्। त्रान द्याना मट्शेयबि क्रिया मञ्ज आहा। किष्ट्रहे नाहिक जानि जानि छुतागृत्त ।। देकरेन क्षेत्रत मुझ यार देकल मान । इंश विमा जात कि के ना जानि नक्ताम ॥ ०० ভাবি দেই **मञ्ज शुक्र**त हत्रन । मटन मटन जिम बात्र कतिएम व्यवन ।। बालान मखकार्वाई कुरू मिद्र ग्रूफ । अबदत वि-तन दनर्दे अक्ष्म अन युक्त ।। आहरिहरू केटर्र देवटन मूनि मरामग्र। गांधुनु अ धुनि दनि दक्कार्ष छादत मग्ना। करिन महिष्टे अपि रामहि छोमाम।, जात बक मह निका कहार जनमा। देविमा कुमान रेटन कि केरिटन अका कि कन विकल तल रथी किल्म एक ।। भारतार्थर ब्याप्त नाथ रकन क्षा कृषाछ । महत्व त्नशास नुमः समाहत्त हा ।। रययम नियाह अष्ट्र कतिता कर्मना । सिवस भारतन जाम नाहिक वामना ॥ आजाद्य वृतिन सुनि निश्चिताद्य छन्तु । नक्कर्रन छोड़ श्रीष्ठ करहे जाच वर्ष ॥ याद्य वाहा वथा हैन्स् इ-इतम प्रतिक्ष। देखानि स्वरंडांशन कतित्व कार्राभा। एक শিবে। নাহি পাট আনুদের ছাটে। কদরে ওপদ রাখি প্রথমির। উঠে॥ মনে ছুপা রেখ গুরু ভুমি পরাৎপর। মারিবে আমারে ঘটে জানিব গোচর॥ এডবলি মনের ----- किल करले । विमादन शमन सम्भावन अवटन ॥

कुर पट्छ नव्योद्धि चानि छेलनी । द्विशिष्ट क्रम्य छान रहत वाक्षित्र ॥ बीलाम कर्ट्स शद्ध नासिया छथास्। राततनित व्यटन मर्य दुवन हरत्यात्र ॥

রাজার কালিকা পুজন ও প্রতিমাপ্তত্যক !

जिल्ली। व्यालनात जग्न द्यान, कति जादर वृक्षि नाम-ेटन योर्थ मन्त्रीमीत उन्दर्भ । श्रद्ध हटन मशु दत्रमा, जहेः ूर्णे वदा दक्न, जात्म शरे हुखि कृषि प्रत्ने॥ शनाइ ক্রাফ খাল, করেতে বিশ্ব ভাব, খঞ্জন বোচন চুল ্ল। ছভাশন সম প্রভা, রজনী রঞ্জক শোভা, আনি ोक १९६३. अदयनिया। ऋर्थ द्वीदन मामा श्रृंकाः त्महे पिन नाटक हो छ। कविट्डम वृद्धां श्रृद्धांविक । खिलिया स्रकृष লরে, আবাহুন করি পরে, নানা উপসভেতে পুজিত।: ८एई काटलाट मन्त्रांनी, शांदब जात जयतानि, वनि ज्या অপেন করিল। পাতিয়া বাজের ছাল, সমুত্র বসিল লাল, চছুদ্দিশ প্রকাশ হইল।। সন্ন্যাসীর ৰূপ হেলি। সবে नटन मित्र मित्र कि माधुती अनत्र त्यू नत्र । हिनद् ता नात रन, देश करि अन्यान, विधि विक् कि आहेल रहा। बाका इस बंग देविक भानती नाहिक आधि, वदन पकि एकची । সন্ধানী। ব্যুদ্ ক্রির জাতি, শুনী রাশি সমটেল।তি বিসিয়াছে তিমির বিনাশি।। মহাতক্তি করি রায়, সন্মুত্থ তারে বসার, কালীর পুজন দেখে যোগী। সানাবিধ উপহারে, পুজা করে কালিকারে, শেবেতে উদ্যোগী त्रति माति । विश्विता मेरीव तटन, शक्तिकाटि दिसे कटन, थान दश्क दन कटन हिन्कात । मथु दुर्तम दक्तिमानदन, छ-थान छित्रा वृत्त, त्रांका यात्र म्रहेरिक छारात ॥ मृत्रिक कररन एकन, श्रेष्ट्र कत्रिक गर्मन, द्रार्ट्स श्रीय वृत्तिल छुचन । रहेटत स्ट्यां ताम, रहेटन सद्वान आहा, जीत हिश्मा कृत

कि कार्र में देशीय श्रीतम किंदू माहे, किवेस दिशाह लाइ, बीर्तुर्रीन नान अधनन। जागाटक सक्रम छाटड (गेर्ड निधि नेखे कार्रह, क्या रहतू जनम धात्रण।। स्कर्ण যেজন করেঁ ভড়জীয় প্রাপ্তি তারেঁ, পণ্ড জয় পাপের কা-त्र । किन्तु वृक्त आवा रहा, अम्ब खना धमहा, मर्क्न वृट्ट जाटह रत जीवन्। भाषा बटन जीव, जिल्लान मध भिने अरेक्षात कार्कर तींबन। ताका बेटन मरागत, उदेव द्वम नार्व इस्र, केहें खेमें दिदामत बहुने ।। यकोटर्स शिखेत मुद्धाः इंड्राफ़ि द्वालर्ज निक्री, अनि त्याशीवतं कट्ट वाशी। सिन यक भूर्व इंड, उटेर छोटर भीभ नहा, ना इंडेटन नहरू नि नामि। প্রতিমায় जानि उत, यमि शादक जाविज्ञत, নেইতো কালিক। সূর্কেইরী। তবৈতে সকল পুণ্য, নহিলে तक करत माना, मृजिकात अिख्युर्खि धर्ति। अञ्चल वि दा अ त्यादत, त्रमञ्चल त्य श्रेकादत, प्रदेश हित्सन दर्शत्य रमक्षण किया समिछित सादत, कर्णादक अभारक नादन ना ब्हेटन क्वन विक्रम । एकि कूने मुद्राहिए, ताहे ता াহার প্রীত। ক্রেমিত ইইয়া তারে কয়। এই ময়ে 👳 শুলি করিয়াছি কিবা থান্ধি, এই নয়ে আসন শোধর 🖪 ভাল নাচ কর নাসি, এই মত্রে জীবনাসি, এই মতের মুদ্রা কিল্ডল। এই যে অটল কথা, পূজা করি যথা প্রথা, বেংক কেন্দ্র নিরপণ।। অঙ্গু ভঙ্গু কোনি স্থানে, কহ মন दिनामातन, ध्यांनी वटल कर्त वर्डमेनि। प्रत्थटक महदन त्यहे, बहुद्ध विश्वास (सहै, कुनीहर्मी कंद्रदेश स्टूक्शम ॥ स्वति द्धारभ वास कार्य, जूबि शाद्वी दियाबाद्ध, त्याभी बट्ड हैश (कार प्रति। भट जाता। में जाता। किल प्रकारण अका-लान, करत प्रति किस् भट जाता। हिल प्रकारण जिल्लाता, ना लहरम किंद्र ठातु, नक्ष्म मामञी भूनः नरम। भरनत मा-नम मरु, भू को किंद्रि अक जिल्हा, भरत करह छिठिया मा-

对前这个概念。我们可是图象不是

आदम् । त्रम नवप्रिः बहुन, ध्येक्श बहुनतं कट्न, छत्न किट्टाम (मश्रद अष्टरक । स्मर्थां अममी यटन, जिल्कार्ग ्ल प्रतान क्रालिमात्र इ**रहा, खनाटक ॥ शू**रहारिक विका গান, রাগিতে তক্তৰ পান, বলে ইছা নিংল প্রভায় 1, ালন যাত্রের প্রবেদ বুক্তি ছ্লাইলে ছালে পুনি ফোখে দিগামর কর্যা করে যোগী ছভাশন, বলে তবে এতকণ, अञ्चय हडेल जानाक। अञ्चल कोणा लट्या कोलिय ্রন্থারে গিয়ে। করে যোগী করি ভত্তার।। দেখ দেখ कारते थाएतः आंशिकि पृथिवीयदेतः आत नाहि मक्न ह-इत्त । इश तनि क्लिशादियम, श्राण्माद ककरम्तम, कि क्षिणांक करत करत ॥ भत मेत्र वटक थात्रा, दमित्रा ্রন্সিত ভাষা। যোগী বলে ধরু রক্ত দৰে। ভূতকে পর্তে ामि, इर्का गरिव क्रमाविधि, विधि वाम आकि तम क्री নিবে । শুনে তাত্তকুণ্ড লয়ে, ক্লণির ধরিছে ভয়ে, ছাপা-ইয়া ভুতলে প্রভিল। হাহাকার করি রার, পরিয়া তাহার भार, मककरन काम्मिट्ड नानिला। दिक बीनगमान्त्रन, দেখিয়া তার রোদন, প্রবোধ বচনে ভূপে কর। না করে' ताच्या क्रमान, विधित्र याश विश्वन, देमद्दनादय व्यवना ल् इस्र ।। ".

রাজার থেদ ও সন্মাদীকে স্তব করেন ।

লঘু-ত্রিপদী। সন্ধাসীর পদ, ধরি বছু খেদ, করিছে কান্দরে রাজা। বলে প্রস্কু ভুমি, সর্বান্তর্যামি, তপদ সদৃশ তেজা।। সকল বিজ্ঞান, আছে তব স্থান, বলংহ কি দোৰ স্ম। তোমাতে বিশ্বাস, জামার নির্যাস, প্রো-হিত সে অধ্য।। না করে বিশ্বাস, মোর সর্বনাশ, করিল পাপিই মুদ্ধা পরের দোবেতে, কি এই দৈবেতে, ঘটিল বজ্ঞা। কুচ্ ॥ যেমন রাবণ, করিল হরণ, জীরান্টক্রের

नारी। क्षेत्र कांत्र (नाटमः यक रघ द्वाट्यः नवन जलाधि-कारी किहिए देवन, जामारत मबन, घुँन परंजक क्टिन । में दिश्व उलाय, ध्रति छर लात, इंनी कत हीन ীনে। ইতিৰ্বা মত, তুমি হে শাৰ্ত, মিদ্ধি সিদ্ধে তেন कित्व। गुरुव दिणामात्र, नत्यहि धर्तात, जुमि छक मात जात ।। मायुक्त श्रमती, जूबि जल कृति, जनन क्रमिन मह। जूबि त्याम रूप, मन्त्र श्रमक्रम, क्षीतृत क्रमम नह।। जूबि क्यामग, कुन दिक्रम, मिराक्रु कीर्डि चूमि। योका विना आहि अनद अनीति, सूमि गुर्काखुत्रमामि॥ एक शह धन्न, विमर्जिन्म महा गान्ना शैन छेत तेर्नु । नाहि छव जान्तिः কুমি শার্ত্ত শান্তি যে ইন্দ্রিয় রিপু।। তুমি সন্তিন, মতি ল্যোভি, ভূতগণ তব জার।।। তার স্থান স্থান, চতু र्तिथ (माक्क, तक तक नडाजरन। क्रीवरनेत कीव, त्वरन धनवः नमूनम नर्सकटन ॥ कूमि हर्डी केंडीः विधित निवाडा भतिमाथा काश विष् । जूमि ये**क** केल, मजलागकल, टेमर বল ভূমি প্রভু ।। অনপ্রভূবন, তোমার আসন, ভুমি ।।। প্রাণ জীবে। श्रद्धनंत आक्रित, जूमि श्रुमेश्त, निताकात का ভবে।। তুমি বিশ্বকৃষ্ণ, শ্রুজন্ম বর্ম, মুর্ম তব কেবা পায়। वर्षि विद्यारिक, नक्ष काक्किल, जामारिक नर्सवडाय ।। अ-इति निरुक्ति कृमि छा की दिन कालाकाले कृति अकू। নির্দান ক্ষার। ভুমি মূলাধার, শক্তি হক্তি উল্লি কভু।। पुषि निर्णातक, मन् किनिविधिक रेडिका मुक्त देवरिह। আদিতা আকার, অনি নাহি আর, প্রতি ম তি এই कटर ।। कान एवं मर्त कृषि दर विण्यत् स्मिर्शिश बार्ट **एदि। उपित्र निकाम, कार्य नाना कार्य, जीकाराय मेर्स**

कीटव ॥ जीन चाँत अन्म, इमिटर सिसंक, कान केंग्रेलीके यायु। दर्श मिजा रूप, त्रांग रजान कुर्य, जुमिट्डा कविन বাহু॥ তুমি বীক্তক, শাখা পাহ চারু, তুমি এর তার চল। তুমি কল ভোক্তা, প্রয়োগের প্রক্রা, তুমিণ নাথ ७ नक्षा छव योद्या कीरव, ट्यम्ब जानित्व, यनन जन िड ज्ञमि। अञ्चरत अञ्चतः देवदम् अदर्शाच्यः **उ**टर कट्ट ार्रश्रिम पाछि सूच्य गत्न, देवदश्र विक कटन, अहुत এলার নর। কালিশার ছবে, মৃচ নরে ছেরে। ভূমিতো স-কুপ মধ্যা তোনার মহিমান নাহি হর নীমান নার্দা না প্রান পার। দেবতা কিম্বর, নাতি জানে নরে, আমি ল্লাধ্য নর ছার।। বচনের পার, মহিনা তোমার, কি নাগ্য আমার কই। দিয়ে পদছারা, নিজ্ঞবে দরা, কর প্রভু চাহি এই ॥ জুমি কাল কালী। স্তবে তব গালি। করা-क्त काविक के चटि भटि माना, ता नकन कना, भी-ात लाटक ल ठीउ॥ मनूषा मर्काय, करर संवीदकन, ता याद्ध नाथ कृषि । करत कृष्णानाम, क्त प्रतिज्ञान, कि ব্যার করিব আমি।। এতেক গুরুন, গুনিরা তথন, তুই क्रेज भग्राज्ञम्। बर्ग प्रमु छाजः श्राट्य मर्शतानः मूत स्टि ख्य (क्रम H बीमा) मान्त्रगं, श्ट्य कंड मन, शूर्क विवतन कटर। खनित्र। ब्राब्बन, शांत्र मिना कान, त्यारे शैन रहा

भवावनित् छेशकर्ने। भवाव। छद स्ति कृष्टे स्त्रा कट्ट मिगस्त। ऋकान পাইৰে ছুমি দিলাম এ বয় ।। স্ক্ৰাশ হইয়াছে প্ৰথমে क्षाकात । शक्षम करियन साविकाय महरू मात ॥ ज्यात तका बाहे ताका ताका रूटवं नहे। धन मान साटव धान भाटव बह कहे।। शांधात्र क्रतांधा छांश विधित विधेत । श्रीचाक কৃষির খারী হরেছে পতন। ভব পোষে নরপতি কহে দরাময়। কিলাতি হইবে মন কহ নহাশয়। নিতান্ত নরকে বাব কিলাপাব জাণ। কহিয়া শীতল কর কিলাপাত প্রকালনা তবে প্রাবলী নোরে কার কহিছে দেখি তব পরকালনা তবে পরাবলী নোরে কার নারে হয়। নারে না হেরে কোথা কে করে প্রতায়। জান্যজন্ত স্ববৃদ্ধান্ত সালা আক্ষা শুনিয়া ভূপ মন্ত্রি পান্তন কার্মান কল নাম্বাতে পাইবে। একথা শুনিয়া ভূপ মন্ত্রি পাইন চায়। বেনমত উপ্রার তথানি যোগায়। যেই কপ প্রের যে আছিল লিখন। অক ক্ষাণ্টনিয়া প্রের কর্মান পরে যোগাসনে বসি জিল মধু রেশ্বণ ধ্যান পর প্রিক করে জানিতে বিশেষ।। জিল শ্রামা হলগীবনে করে নিবেদন। শালে ভাই ক্রাণ্ট্র ইইল রাজন।।

পত্রাবলী ও রাজার আত্মতম জারী

ত্রপদী! রাজার আদেশ পার, শতাশত ভ্তা নাম পরাবলী করে আরোজন। প্রবিদ্ধত নাদীবর, পূজা করে লঘোদর, হরে জতি সচকিও নাদা। প্রথমণ আশা করে, পূজিলেন ইংকারের বস্পুনে তোমে ভক্তিভাবে। পরশু প্রভৃতি বার্ণ, সংস্কৃতি লাইল জান, অঙ্গ ভঙ্গ সুস্তে প্রভাবে। জোত্রাদি ইজির্ম্বনে, রাখি যথা যক্ত স্থানে, শেষে চক্রগণে ভেদ করে। পিও করি আবাংন, পদসং সংমিলন, সুধা ধারা সোঞ্চ তার পরে।। সদা নিজা মন করে, গুরুত্ব পদ অন্তর্মে, বিষাদেতে ভাবিছে স্থপতি। করে বাজা আদ্ধানান, তাংগ বেশুকে ভাবিছে স্থপতি। জারা অজ্বানান, তাংগ বেশুকে ক্ষানা, উর্ম থবা ভাবা অক্বানান, তাংগ বেশুকে আনি, বে প্রভে ভাতা ভার, দেবতার তি ভক্তি হয়। রাজা ধ্যামে এক মনে, ক্রিলাল সোনাজনে বেশিব্য করি ভাসি করে।। কি

জানিতে ইচ্ছা চিতে, বল রাজা পুথমেতে, শত্যা ব্রক্তি ाम প্रতি कर। तांका बटन महानात, बूठां अ यम मश्नीत, ীন জনে করি অনুগ্রহ।। আজগ্ম অবধি আমি। নহি ्रतक कुशामी, वित्रकाल खुक्ति कालीकादत । एएटथ मात ्रि वानी, किना शृहि कि उनानी, घटत घटन शृदक गामा नित्त ॥ यात नाश्यिन कड़ि, श्टेट आमात राड़ि, जेल-उ डाहादत त्यांशांत्र। ज्ञना त्मन नाहि जानि, विदन त्म ভব ভবানী, ভেকারণ জিজাসি তোসায়।। এই লেখে ্রাক্তরে, ভাত ফি-অজাত মোরে, জগত জননী নর্কে-রৌ। গোগী কররে প্রভাক্ষ, তাহাতে হইল লক্ষ্য বুনি ांडे शननात्र प्रति ॥ अमि ताका मार्चे वानी, जानतम अठि াপানি প্রেমাবেশে সদা নৃত্য করে। আমি কিট মধ্যে है, जारसमें ल! खकामग्री, **छत जात तार** छात रमारत ॥ াহ দেখি গুৰুষণি, জ্বামার পূর্ব কাহিনী, আছিলান लागि (काने कमे। किंशे शांदश काया छान, करन १८व পরিত্রাণ, কম রূপ। করি রিলোকন।। কংলে নে সব त्ताकः भूतं **छेक व्यामक्ता खन्नात भारभ**त विवतन। मिक পুরবাচ জীখ্যা, ভূপতি পাইল দীকা, কিন্তু মোহে আছে নিক্ষরণ।। দেখিসা ভাহার মুখ, নাহি সহি ^{ক্ষ}ার ছুঃখ মথারেশ অকশ্পর্শে তার। অনুয়েতে কর নেয়, রাজঃ किया कान शाहा निक इहान पारित अध्यत ।। वाल दाका শত্য গুৰু, বাঞ্ছা ৰূপ কংগুতক, আসিয়াছ তারিতে আ-মারে। একি ঘোর প্রমাদ, রাজার যুচে বিবাদ, সে সাধ বিবাদ রাজ্য ভারে।। জন্যৰূপ বিন্দু মারা। স্বৰূপ তাহার ছার। বিষ্বারি বাসন। বিলেষ। শুন ওংহ নৃপত্র,কহিতেতে ्याशीरतः ७३ त्यात् कान केशतान ॥ क्रान नित्त्र नृश्यदतः যোগীবর স্থানান্তরে, চলে রাজা দেখিয়ে তথার। রাজা बेटि किथिकित्व, लाकास सांह कांग्रांगत. वया जाकि कां

ीनजन H यमुविभि अर्थवान, माहि योष তব मान, उमविश খার তুমি রহা আপনি ঘাইলে পরে, বল যাব কি প্র-কারে, দিজ গুণে সক্তে করি লছ।। হার রাজ্য মর্তা লোক, কেবল মিকার শোক, অন্ধলোক কি হৈল আমার। লিতা মাতা পরিজন, হইল অনেক দিন, দেখি নাই पाटक कि क्षकात ।। योशी वर्ष इंश जर, वर पछि। श्रमञ्जन, धाँह तमदह योत्य क्षत्रवीन । महेन्ना नदंतन वेशून কেমনে যাইবে বাণু, কহ দেখি **একেমন আশা**া দেখিলে তোমার জন ভোনাকে হবে বক্সন, স্বাদেই মোহ সদা ভাহে। মি ছি খুলা নাতি হয়, কার রক্ত ভক্রময়, মঞ मूज भून हरह राटिशा (फदरम्भू भा भात गांश, जम्मूटत লমে তীহা, যাইতে বাসনা করি চিতে। এক জাতি এজ পুত, এখন স্পাছে বিশ্ব ত, জাননা ক্রিছত দেব ক্ষেত্রে।। রাজাবলে তহ তুমি, কি কর্ম করিব জামিন গোপী বাল लाज करणदत्त । शूर**क निशा तोकामान, जाशनि** क्रेन ध-हानः उद्मदन्धरक हव नृशवद्ग ॥ **अंखर्गन मध् दत्रमः**, रूधः वृत्दे लाइर त्नयः त्रांका ज्यादक त्नर किमाने। क्रेली क विदय मन्त्रामी, जात कर्य काँग मानि, जिन निन वदश मह স্থান।। তুলের হুকুটি খ্যাতি, স্বভাবে প্রধান অতি, রান মারাখণ ডিজ নাম। তাহাব অঞ্জাক্ত, রচিল ঞীশ্যাম-षिक, को जूकविनान शतिनाम ।।

> ক্লজিবাস বিদ্যাসাগরের নাইকা সাপন ও মখুরেশের পরিচয়।

জিপদী। রাজা জার্মদান হয়, সন্মানীর সহ রয়, পুরে-বিতে জানিতে রাজন। বলে জবিকানী জন, নাহি মম পুরোজন, সর্বন্ধা করিল সেজন। কোত্যাল ভোৱে

श्रीत अत्य जिक्रवत करा थारक अर्थाहत, वियामिक मना ত্রপানে !৷ বলে প্রাণ রাগা আর, উচিত নহে আমার, াাণ বলে ত্যজিব জীনন এই বেটা কোন জ্বা, জানিতে ারি কায়ন- জলাগার ইইল শমন।। আমিতো নাইকা প্রতি, জুবন বিজয়ী কবিন, এই ভূমি নথেতে দর্শন। দি-ु एक भाषादत वह, ब्लिनिटन जकल नत्र, वांनी ना तरिदव काम लगा। (म करा अगरा इस. अथन नाहिक करा, 🕬 শোগী **কিদের কারণ। জানিকে যাহার তব্দ চিত্তে** হতি শুদ্ধ হৈ জুনায়িকার করিল সাধন।। বারে২ জলে নাম, ंदक्क **रुकू काउ काम,** माम्निकात **रुहेल भगम** । मान्निकः का-াল। তথা, কহিছেন মিষ্ট কথা, কেন ছুমি ডাকিছ এখন । দবি তারে স্থতি করে। কহে.পরে মৃত্সরে। ছিজবর का अया (तालन। मकलि जानदेश दुमि, कि जात करिव আমি, মিথ্যা হৈল ভোমার বসন।। ক্লপা করি বর দিংল टर भारत कृष्यस्तान मा त्रिहात समुद्र नन्प्रम । त्य कृष्यः पूर ्हर । राज, काल क्षांस भक्त ररना, साभीरिक कामांत्र सम्बन्ध किया विका कि विश्वादत अन्द्र निल् न कदत, অপ্রানে পরাবে বিষাদ। শুনিয়া নায়িকা বলে, পাগলের 🗸 🗠 🛪 হলেন কার সঞ্চে করিয়া 'বিবাদ।। ভামরা কিন্ধরী মার, সেহ দাসীতে। যাহার, সেধনী উহার পদ সেতে । মনা আমাদের মন, আকাজ্জা করি দর্শন, তুমি ছার নার কি করিবে।। রাজার কতেক পুণ্য, সংখ্যায় না र्य शना, मत्नान शाय (महे कटना (य श्रम स्नर्य धर्ति, শব ৰূপ ত্রিপুরারি, সে পদ পায়েছে দৈব বলে।। ভুমি কিবা কীটতায়, ব্ৰহ্মা নহে গণনায়, হেন জন সেই মহা-শর। জামার প্রণাম তাঁরে, সব স্থে জানিতে পারে, যার मन (यह में क्रिया) जूमि श्रद्ध अर्थीमी, कि हूरे ना जानि আমি, অপরাধ না নবে আমার। শুনি ছিজ ত্রাস পায়, হরি নারিকার পায়, কহিতে নাগিল আর বার॥ কহ যোগী করি স্কুত, কোখাগ পর্স বসত, স্কুনিদ্ধি হইল কি প্রকারে। ছিজ খ্রীশ্যামাচরণ, কহে পূর্ব বিবরণ, শুনি বিপ্র ভাসে অশ্রুনীরে॥

রাজার কল্পতক্র হওন ও পুত্রকে রাজ্যদান

পয়ার। হইলেন জীব মুক্ত রাজা মহাশয়। তিলেক রহিতে ইচ্ছা ভূতলে না হয়।। সনে২ ভাবিলেন বছ পুত্র মম। স্বারে বিভাগ রাজ্য দিলে পর সম।। তবেত না उत्त इत्व भीख गर्सनाम। अकत्व त्रहित्न जन्म वाहूनः প্রক,শ।। পূর্ণ কুছ বারি পঞ্চ ঝারি নৈলে তার। খন্যকুছ রংহ হংব তেমন ভাগুরে।। এতবলি মন্ত্রণা করিল বিচন ক্ষণ এক পুত্রে রাজ্য দিব যে আছে স্কল ।। সকল হ-লৈও ক্রেষ্ঠ ক্রেছ জ্যেষ্ঠ প্রতি। গোপনে তাহার স্থানে কাংল ভূপতি।। কালি প্রাতে হব বাছা কণ্প তরু আমি: ্ষই কটেল রাজ্যদান মাগি লবে ছুমি॥ অন্যুষ জনে লির যে যাহা চাহিবে। তোমারে ক**হিনু বাহা** ভূমি তাহ क्टरद !! १९८३ छ। एया जन खाटम तजनी नश्चन । छ। जाकारण ক-কাতক হইল রাজন।। আসিতে বারণ পুরে কেইন. आजित्व । आंग यनि **गाँटर इत्हे जारा मिटज रूटव ॥** न -টীর ভিতর ছিল যত পরিজন। জন্যান্য জনগণ আসিতে বারণ ৷ জ্যান্দার ভৈরব সিং ভৈরব আকার ৷ কার বাধ্য হয় তার কাছে আগুনার ।। যোগী গুরু পাত্রণিত श्रांत क्य अम । लहेट्य मरेकल्य कटेल वटनटह ताजन ॥ कूम करत कण्णाच्या हाति कम धरत। मात्रीनन अनि आ-हैरन त्राष्ट्रात दशान्द्रत्य त्राज्यात क्यांत कात क्षेटघत श्रेगा यात दए वानमा हिन मिटनम त्राजन।। दर्जन क किन संकि जाति कहे सेन। अक्शरे वेशि जाद करत

বিতরণ !! সকলের সব্ সাধ পুরাইলে পরে। শিবচন্দ্ররের যায় রাজার গোচরে।।। যাইয়া প্রশাস করে জনকের পায়। বর চাহ বলে রাজা হাস্যমুখে চারা। কুমার ফহিল পিত। কিবা দিবে আরে। মম অভিলাষ দেহ রাজ্য ক্রি-ন্তার।। ছত্র দও আশা করি কর মোরে দান। অংশ বৃংস করি দেহ ভূপতি প্রধান।। তথাস্ত বলিল ভূপ যোগী মন্ত পাঠে। অন্য পুজ্ঞাণ শুনি চমকিয়া উঠে।। ডিজ শান বলে দেখ তাহার কারণ। সমুদ্র রাজ্য পায় প্র

্র রুজার স্বর্গবাস।

রিপদী ৷ পুত্রে দিয়া রাজ্যভার, পরে চিন্দে অংপনার_ণ পরকার ভূপাল রাখিতে। জল বিষু, প্রায় ক্ষিতি, কেনন मात्रात तीकि अटब खटन मा शादत वृक्तिटा कात वाका धन जन, क त भारत श्रेष्ट्रमान, श्रांडियोन किरमत कार्रा । করে সংস্থান্ত্রমন্ত্র, কেবাভাল কেবা মন্দ, এইছন্দ বন্দ विञ्चतमः। करण आहर करन मारे, अमरखत मूर्य छारे, বিষম বালাই আশা দানে। সত্য চিদানন্দ বিভু, জীবভুত ्नइ अष्टु, जमाध्यक इन गाना काँदम्। विश्वानि इस्मियक्षी, কর্মের করি সাধন, অনুষ্মিতে জীবেরে ভুলায়। তিনিস্বধং নিরাময় দেহেতে করি আত্রয়, দেহ গুরুণ নানে আপ-मात्रा। ওড় প্রুপ্প সমিধানে, यनि শ্বেত পুষ্প আনে, নেথে তারে করিয়ে যতন। তারশ্বেত আভা দুরে, রাখি उक्तवर्ग करत, मक्र लाट्य उथा मनाजन।। शुक्त मठः वञ्च ্ষয়ে, অবিদ্যা আত্রয় লয়ে, কর্মভোগী একি বিভ্**ষন্**। भटलक विलिया त्राम, প্রত্যেকে विनाम हाम, अटन अटन दें ছিল নিকটে। সঙ্গে লয়ে যোগীবর, আর দ্বিজ বহুতর। উত্তরিল জাক্তবীর তৃট্টে।। গিয়া তথা নিয়মিতে, আরভ্ত

করিল গীতে, রামারণ তথা ভাগবত। পুরাণাদি তব্তগণ, চ্ঞী পর্তে কৃত জন, নানাবিধ যার থেইমত।। বেদান্ত आणि मर्मान, शांठ इत्र मन्द्रकन, मल्कीर्डन इत्र इतिनाम । এক পক্ষা এইমত, গঞ্চাতীরে হয় গত, পরে যোগী নৃপ-लिस्त वर्ता आकि अनिम तात्र, यात्रीतर्ग चर्ता यात्र, হেনদীন নাহি আরু মিলে॥ শুনি ভাহার বচন, যোগেতে देवतम होजन, कुछौन श्रद्धत निवा स्मरम। स्मर्टे कारण नृश-বর, ত্যজিলেন কলেবর, হাহাকার করে সবে শেবে।। धांशी रव कायुक्षांम, व्राका निया पूर्विभान, क्यांमरूक छ--लिए इक्प्रेट्ड । त्राज्य खुल्लान काणि, इ**रेट्ड मटन छेना**णी, বিধিমতে দাস্থাদি করে।। আদ্ধশান্তি তার পরে, <mark>করে</mark> শান্ত অনুসারে, কোন নাপে জাট্ তাহে নহে। শিবচন্দ্র রাজ্য পোয়ে, আনেকে বান্ধব লয়ে, বিজ্ঞাবে সিংখাসনে রহে।। পিতার যেমন রীতি, পুচ্ছে পায় সেই নীতি, এই কথা পূর্ব্বাপরে ভনে। পুত্র সম শিষ্টে পালে, ছুষ্টের কি করে কালে, মহাকাল তাহার রাজনে।। দান্ত শান্ত প্রিয় ভাষি, সকল গুণের রাশি, রাজনীতে পরম পণ্ডিত। পিতৃ সম সর্ব্ব অংশে, এমন নাহি সে বংশে, অহিতে করেন গে বিহীত।। দেশ দেশন্তির নর, সবে করে নৃপবর, হেন আর পৌতে নাহি হয়। দরিত ছংখিত জনে, দান করে জন্ম মনে, দেব দ্বিজে অত্যন্ত প্রত্যন্ত ।। পিতৃ তুল্য মান্য হয়ে। সুক্তগণেরে লয়ে, করে রাজা প্রজার পালন। গ্রন্থ পেধ অতঃপর, মহারাজ রাজ্যেশ্বর, ক্ষেচ্ছ ভূপের কথন।। ইত্যবলি গ্রন্থ শেষ, পরে কহি সবিশেষ, আপনার নিজ विवत्न ।। श्रीने काङ्। श्राटम श्रीम, विक वनमानि नांग, দর্বজ্ঞেতে চাট্তী প্রকাশ। বুদ্ধের সাগর প্রায়, নানা বিদ্যা শোভে তায়, ঈশবেতে সদা তাঁর আশ।। হিংসা . शेम उद्दर्शनी, नुदृर् खांचा अखिमानी, প्रहरित नगं किही-

निष्ठ । खनवादि खनमान, व्य होटर डोहोटर दमन, भेडकुःदर्थ আতি ভুখোমিত।। নহে কাব মন্ত্রনী, জানেষ গুণের चिनि, पूरा नम ततन छोहोरा। बादमम वाबादह एडर मेन' कवि भटन ताक जंशाश्रद्ध कविएन श्रान्त ।। श्रीनिष् তাহার বানী, मणार्थ ए ए। काशिमी, मनाबल कहिन्द दुरुम। योक्ना भट्टमक च्याटक, मिथा। त्नांच देव लाटक, विविधास महि (इकावा)। योजव ममान खन, क्रयेन्डक ইপাধ্যান, তাতে কে এইটের গার। খত বল তত হন, কহিলাগে গোনিশ্চয়, যথাপ কৌতুক থা ভাহাগা বুলক বুস্থী সৃষ্ণ, সেইডে! বিষ্ম রক্ষ্য নবাবের ছলন্ট বহুতি। বিশ্র খাঁর ব্যবহার। নানামত কার্য লাব, নারি। বাল টেলিটের শাস্ত্রিয়া পুনর্জির লোক্ষা হৈ বাং ক্ষর এম্- নিজা বেধি যদি কেই করে। ধনি জান কেবন জন্ত বুঝিবেক ম**নেমন গ্রন্থ শেষ হল আ**ম্যান্তর 🛭 একাবে থিয়সী যার, কাত্তি শশি রাশি তার, সেই শদ করিয়া গরণ: কৌজুকবিলাস নাম, গ্রন্থ হৈল পরিনাম, দিজ শ্রীশ্যামের বিরুচন 🛭

ইতি কৌতৃক বিলাস সমাপ্তঃ।